यहेजकेल

1 मैं तीसवें साल के चौथे महीने के पांचवे
दिन, गुलामों के साथ कबार नदी के तट
पर था, तभी स्वर्ग खुल गया। उसी समय मुझे
दर्शन मिले। 2 यहोयाकीन राजा की गुलामी
के पांचवे साल के चौथे वर्ष के चौथे महीने
के पांचवे दिन को कसदियों के देश में कबार
नदी के तट पर, 3 याहवे का संदेश बूजी के
बेटे यहेजकेल पुरोहित के पास आया और
प्रभु की शक्ति उसने अनुभव की। 4 मैंने उत्तर
दिशा से बड़ी घटा ओर लहराती हुई आग
सहित बड़ी आँधी आते देखा। घटा के चारों
ओर रोशनी और आग के बीच से झलकते
पीतल सा कुछ दिखा। 5 फिर उसके बीच से
चार प्राणियों की तरह कुछ निकलते देखा।
6 उन में से हर एक के चार- चार मुँह और
पंख थे। 7 उनके पांव सीधे थे और तलुवे
बछड़ों के खुरों की तरह थे. वे चमकाए हुए
पीतल की तरह चमका करते थे। 8 उनकी
चारों अलंग पर पंखों के नीचे इन्सान की
तरह हाथ थे। उन चारों के चेहरे ओर पंख इस
तरह थे: 9 उनके पंख एक दूसरे से मिले हुए
थे. वे अपने सामने सीधे चलते हुए मुड़ते नहीं
थे, हर एक सीधा आगे बढ़ता था। 10 उनके
मुखों का आकार इस तरह का था: उनका
एक एक चेहरा इन्सान का सा, उन चारों
की दाहिनी ओर एक एक चेहरा का बैल
का,और उन चारों का एक-एक चेहरा उकाब
का था। 11 उनके चेहरे ऐसे ही थे। उनके पंख
ऊपर को फैले हुए थे। प्रत्येक प्राणी के दो
पंख दूसरे प्राणी के दो पंखों को छूते थे और
वे दो-दो पंखों से अपनी देह को ढंके हुए
थे। 12 और वे सीधे अपने सामने चलते थे,
जहाँ-जहाँ आत्मा जाना चाहती थी, वहाँ वहाँ
वे जाते थे और चलते समय मुड़ते नहीं थे।
13 और जीवधारियों की शक्ल अंगारों ओर
जलते हुए पलीतों की तरह दिखाई देते थे,
वह आग जीव धारियों के बीच इधर-उधर
चलती-फिरती हुई रोशनी देती रही, 14 और
जीवधारियों का चलना फिरना बिजली की
तरह था 15 मैं जीवधारियों को देख ही रहा
था, तो देखा कि जमीन पर उनके पास
चारों मुखों की गिनती के मुताबिक एक एक
पहिया था। 16 पहियों का रूप और बनावट
फीरोजे की सी थी, और चारों का एक ही
बनावट ऐसी थी जैसे एक पहिये के बीच
दूसरा पहिया हो। 17 चलते समय वे अपने
चारों ओर चल सकते थे, ओर चलने में मुड़ते
नहीं थे। 18 उन चारों पहियों के घेरे बहुत बड़े
ओर डरावने थे, ओर उनके घेरों में चारों ओर
आखें ही आखें भरी हुई थीं। 19 जब जीवधारी
चलते थे, तब पहिये भी उनके साथ चलते
थे। जब वे जब वे जमीन पर से उठते थे,
तब पहिये भी उठते थे। 20 आत्मा जिस दिशा
में जाना चाहती थी, उधर वे जाते थे,और
पहिये जीवधारियों के साथ उठते थे, क्योंकि
उनकी आत्मा पहियों में थी। 21 जब वे चलते
थे, तभी ये चला करते थे। जब वे खड़े हुआ
करते थे, तब ये भी खड़ा हुआ करते थे। जब
वे ज़मीन पर से उठते थे, तब पहिये भी उनके
साथ उठते थे, क्योंकि उनकी आत्मा पहियों
में थी। 22 जीवधारियों के सिरों के ऊपर
आकशमण्डल सा कुछ दिखाई पड़ा। वह
बर्फ की तरह चमकता था। वह उनके सिरों
के ऊपर फैला हुआ था। 23 आकाशमण्डल
के नीचे उनके पंख एक दूसरे की ओर सीधे
फैले हुए थे. हर एक जीवधारी के दो-दो

पंख और थे. उन से उनकी देह ढपी हुई
थी. 24 उनके चलते वक्त उनके पंखों की
फड़फड़ाहट की आवाज़ मुझे ढेर सारे पानी,
या प्रभु की आवाज़ या फौज के हलचल की
सी सुनाई पड़ती थी। जब वे खड़े होते थे,
तब अपने पंख लटकाते थे। 25 फिर उनके
सिरों के ऊपर जो आकाशमण्डल था, उसके
ऊपर से एक शब्द सुनाई पड़ता था, और
जब वे खड़े होते थे, तब अपने पंख लटका
लिया करते थे। 26 जो आकाशमण्डल उनके
सिरों के ऊपर था, उसके ऊपर नीलम का सा
राजासन था। इस राजासन के ऊपर इन्सान
की तरह कुछ दिख रहा था। 27 उसकी कमर
से लेकर ऊपर की ओर मुझे मानो झलकाया
हुआ पीतल सा दिखाई दिया. उसके अन्दर
और चारों तरफ आग सी दिखाई पड़ती थी।
फिर उसकी कमर से लेकर नीचे भी आग सी
दिखाई पड़ी, जिसके चारों ओर रोशनी थी।
28 जैसे वर्षा के मौसम में धनुष दिखता है,
वैसी ही रोशनी दिखी. प्रभु के तेज का रूप
ऐसा था कि देखते ही मैं मुँह के बल गिर पड़ा
और किसी को बात करते सुना।

2 वह मुझ से बोला, “ हे मनुष्य की
सन्तान, अपने पाँव पर खड़े हो जाओ,
क्योंकि मैं तुम से बातें करना चाहता हूँ।”
2 यह सुनते ही आत्मा ने मुझे खड़ा कर दिया
और मैं सुनने के लिए तैयार हो गया। 3 उसने
मुझ से कहा, “ हे मनुष्य की सन्तान, मैं तुम्हें
इस्राएलियों के पास अर्थात बलवा करने
वाले लोगों के पास भेजता हूँ, जिन्होंने अपने
सिर मेरे खिलाफ़ उठाए हैं।उनके पूर्वज और
वे भी मेरे विरोध में गलत काम करते आए
हैं। 4 इस युग के जिन लोगों के पास मैं तुम्हें
भेज रहा हूँ, वे बेशर्म हैं और बलवई हैं।
5 उन से कहना,प्रभु कहते हैं। इन बातों से
बलवा करने वाले समझ जाएँगे, कि हमारे
बीच में हालांकि ये विरोधी घराने के हैं,चाहे
वे सुने या न सुनें, कम से कम इतना ज़रूर
जान लेंगे कि हमारे बीच एक नबी हुआ
है। 6 तुम उन लोगों से डरना नहीं. तुम्हें
चाहे काँटों, ऊँटकटारों और बिच्छुओं के
बीच भी रहना पड़े, तौभी उनकी बातों से
डरना नहीं। हालांकि वे बलवई परिवार से
हैं, उनके बोलने से डरना नहीं. तुम घबरा
नहीं जाना। 7 चाहे वे सुनें या नहीं, तुम डरना
नहीं.वे आदेशों का पालन नहीं करने वाले हैं।
8 लेकिन तुम उनकी तरह मत बनना. मैं तुम्हें
जो दे रहा हूँ, उसे खा लो। 9 इसके बाद मैंने
देखा कि मेरी ओर एक हाथ बढ़ा हुआ है
और उस हाथ में किताब है। 10 उस किताब
को उसने खोला, जिसमें आगे पीछे लिखा
हुआ था। उसमें दुख और विलाप की बातें
लिखी हुई थीं।

3 तब उसने मुझ से कहा, “तुमको जो
मिला है, उसे खा जाओ और इसके
बाद जाकर इस्राएल से बोलो.” 2 यह सुनकर
मैंने अपना मुँह खोलकर वह किताब खा ली
3 तब उसने किताब को पचाने और अतड़ियों
में भर लेने के लिए कहा. इसलिए मैंने उसे
खाया , जो मेरे मुँह में मीठी लगी। 4 इसके
बाद उसने फिर कहा, “ तुम इस्राएल को
मेरा संदेश दो। 5 तुम्हें किसी अनोखी या
मुश्किल भाषा बोलने वाले लोगों के पास
नहीं भेजा जा रहा है, लेकिन इस्राएल के
घराने के पास। 6 अजीब या मुश्किल भाषा
बोलने वाले लोगों के पास तुम्हें नहीं भेजा
जा रहा है, जो तुम्हारी बातें समझ सकें।
इसमें शक नहीं कि यदि ऐसों के पास मैं
तुम्हें भेजता, तो वे सुनते. 7 लेकिन इस्राएल
के घराने वाले तुम्हारी सुनेंगे नहीं। मेरी बातों
को भी वे सुनना नहीं चाहते। वे सभी ढीठ
और घमन्डी हैं। 8 मैं तुम्हारे चेहरे को उनके

चेहरे के समान और तुम्हारे माथे को उनके
माथे के समान ढीठ कर देता हूँ।क्योंकि वे
बलवा करने वाले हैं। 9 मैं तुम्हारे माथे को
हीरे के समान सख्त कर रहा हूँ, जो चकमक
पत्थर से भी कड़ा होता है, इसलिए तुम उन
लोगों से मत डरना और न उनको देखकर
घबराना, क्योंकि वे ज़िद्दी हैं। 10 फिर वह
बोले, “जो भी मैं तुम से कहूँ, वह सब मन में
रखना और कानों से सुनना। 11 तुम्हारे गुलाम
भाईयों के पास जाकर बातें करना चाहे वे
सुनें या नहीं।” 12 तब आत्मा ने मुझे उठाया
और मैंने घड़घड़ाहट के साथ आवाज़ सुनी,
“ प्रभु के भवन से उनका तेज धन्य है।”
13 इसके अलावा मैंने उन प्राणियों के पंखों
का शब्द, जो एक दूसरे से लगते थे और
उनके संग के पहियों का शब्द और एक बड़ी
घड़घड़ाहट सुनाई दी। 14 तब आत्मा मुझे
उठाकर ले गया और मेरा मन दुख से और
जलन से भर गया। उस समय प्रभु की ताकत
मुझ में बहुत ज़्यादा थी। 15 मैं उन बन्दी बनाए
गए लोगों के पास पहुँचा, जो कबार नदी के
तट पर तेलअबीब में रहा करते थे। वहाँ मैं
सात दिन तक उनके बीच घबराहट में बैठा
रहा। 16 सात दिन के बाद प्रभु का संदेश मुझे
मिला, “मैंने तुम्हें इस्राएल के लिए पहरेदार
ठहराया है। तुम उन्हें चेतावनी देना। 17 जब
मैं बुरे इन्सान से कहूँ, कि वह मर जाएगा
और तुम उसे पहले से न बताओ ताकि वह
अपना रास्ता बदल दे, तो वह बिना मुआफी
पाए चल बसेगा, लेकिन उसके बर्बाद होने
की ज़िम्मेदारी तुम्हारी ही होगी। 18 लेकिन
यदि तुम उसे चेतावनी दो और वह अनसुनी
करके अपने गुनाह में मर जाए, तो उसके
लिए तुम ज़िम्मेदार न होगे। 19 लेकिन यदि
तुम बुरा करनेवाले को सतर्क करो और वह
अपनी बुराई और बुरे रास्ते से मुड़ जाए, तो
वह अपनी बुराई में फंसा मर जाएगा, लेकिन
तुम अपनी जान को बचा लोगे। 20 फिर जब
धर्मी जन अपने सही रास्ते से मुड़कर गलत
काम करने लगे, और मैं उसके सामने ठोकर
रखूँ, तो वह मर जाएगा, क्योंकि तुमने जो उसे
सतर्क नहीं किया, इसलिए वह अपने गुनाह
में मर जाएगा और जो भले काम उसने किए
हों, उनकी गिनती नहीं होगी, लेकिन उसके
खून का हिसाब मैं तुम ही से लूँगा 21 लेकिन
यदि तुम धर्मी को यह कहकर चिताओ,
कि वह अनुचित और अनैतिक काम न करे
और वह अपराध करने से बच जाए, तो वह
चितौनी को स्वीकार करने के कारण ज़रूर
जीवित रहेगा और तुम अपने प्राण को बचा
लोगे। 22 फिर प्रभु की शक्ति मुझ पर आई
और उन्होंने मुझ से कहा कि मैं मैदान में
जाऊँ, वहीं वह मुझसे बातें करेंगे। 23 तब
मैंने वैसा ही किया। वहाँ मुझे प्रभु का प्रताप
जैसा मैंने कबार नदी के किनारे पर, वैसा ही
यहाँ भी दिखाई पड़ा। 24 तब आत्मा ने मुझमें
समाकर मुझे पाँव के बल खड़ा कर दिया।
फिर वह मुझसे कहने लगा,” जाओ और
अपने घर के अन्दर दरवाज़ा बन्द करके
बैठे रहो। 25 और हे मनुष्य की सन्तान, देखो,
वे लोग तुम्हें रस्सियों से जकड़कर बान्ध
रखेंगे, और तुम निकलकर उनके बीच न जा
सकोगे। 26 पर मैं तुम्हारी जीभ तुम्हारे तालू
से लगाऊँगा, जिस से तुम खामोश रहकर
उनके डाँटनेवाले न हो, क्योंकि वे बलवई
घराने के हैं। 27 परन्तु जब- जब मैं तुम से बातें
करूँ, तब-तब तुम्हारे मुँह को खोलूँगा,और
तुम उनसे ऐसा कहना, कि प्रभु याहवे यों

कहते हैं, “जो सुनता है वह सुन ले और जो
नहीं सुनता वह न सुने, वे तो बलवई घरने के
हैं।”
4 हे यर्मियाह, एक ईट लो और उस पर
यरुशलेम की तस्वीर बनाओ 2 उसके
चारों ओर एक किला बनाओ. उसके सामने
दमदमा भी बाँधो,छावनी डालो और चारों
तरफ जंग के हथियार लगाओ। 3 तब तुम
लोहे की थाली लेकर उसको लोहे की
शहरपनाह मानकर अपने और उस नगर के
बीच खड़ा करो। अब अपना चेहरा उसके
सामने करके उसकी घेराबन्दी कर।. यह
इस्राएल के लिए निशान होगा। 4 “फिर तुम
बायीं करवट लेटकर इस्राएल के घराने की
बुराईयों को अपने ऊपर रख लेना। तुम जितने
दिन उस करवट लेटे रहोगे, उतने दिनों तक
उनकी बुराईयों के बोझ को सहते रहोगे।
5 मैंने उनके गलत कामों के सालों के समान
तुम्हारे लिए समय ठहराए हैं,अर्थात तीन सौ
नब्बे दिन, उतने दिन तक तुम इस्राएल के
घराने के अधर्म का बोझ सहते रहो. 6 इतने
दिन पूरे होने के बाद तब तुम दाहिनी करवट
लेटकर यहूदा के घराने के अधर्म का बोझ
सह लेना. मैंने उसके लिए भी और तुम्हारे
लिए एक साल के बदले एक दिन अर्थात
चालीस साल के बदले एक दिन अर्थात
चालीस दिन ठहराए हैं। 7 तुम यरुशलेम के
घराने के लिए बाँह उघाड़े हुए अपना मुँह
उधर करके उसके खिलाफ़ नबूवत करना.
8 देखो, मैं तुम्हें रस्सियों से बाँधूगा,और
जब तक उसके घेरने के दिन पूरे न हों,
तब तक तुम करवट न ले सकोगे। 9 “
तुम गेहूँ, जौ,सेम,मसूर, बाजरा और कठिया
गेहूँ लेकर एक बर्तन में रखकर उनसे रोटी
बनाया करना, जितने दिन तुम करवट पर
लेटे रहोगे, उतने दिन अर्थात तीन सौ नब्बे
दिन तक उसे खाया करना। 10 जो खाना
तुम खाओ, उसे तौलना. हर दिन बीस बीस
शेकेल खाना. समय- समय पर ही खाना।
11 पानी भी नाप कर पीना. हर दिन हीन का
छठवाँ हिस्सा पीना और वह भी समय-समय
पर। 12 अपना खाना जौ की रोटयों की तरह
बनाकर खाया करना। उसे मनुष्य की विष्ठा
के कण्डों पर उनके देखते बनाया करना.”
13 फिर याहवे ने कहा, “इसी प्रकार से
इस्राएल उन जातियों के बीच अपनी- अपनी
रोटी अशुद्धता से खाया करेंगे, जहाँ मैं उन्हें
जबरन पहुँचाऊँगा।” 14 तब मैंने कहा, “हाय,
प्रभु परमेश्वर देखिए, मेरा मन कभी अशुद्ध
नहीं हुआ और न ही मैंने बचपन से लेकर
अब तक अपनी मौत से मरे हुए वा फाड़े
हुए जानवर का मांस खाया और न कोई
घिनौना मांस मेरे मुँह में गया।” 15 तब उसने
मुझ से कहा, देखो, मैंने तुम्हारे लिए मनुष्य
की विष्ठा के बदले गोबर ठहराया है,और
उसी से तुम अपना खाना बनाना।” 16 फिर
उसने मुझ से कहा, “हे मनुष्य के सन्तान,
देख, मैं यरुशलेम में अन्नरूपी आधार को दूर
करूँगा. इसलिए वहाँ के लोग तौल तौलकर
और माप- मापकर और विस्मित हो होकर
पानी पिया करेंगे, 17 और रोटी -पानी नहीं
मिलेगा।लोग एक दूसरे से डरेंगे,और अपनी
ही बुराईयों में फँसे हुए बर्बाद हो जाएँगे।
5 हे यर्मियाह, एक पैनी तलवार लो और
उसे नाई के उस्तरे की तरह काम
में लाकर अपने सिर और दाढ़ी के बाल
कटवाओ. फिर तराजू लो और बालों के
हिस्से करो। 2 जब नगर के घेरे जाने का
समय आ जाए तब एक तिहाई बालों को
आग में जला देना। एक तिहाई चारों ओर
तलवार से मारना। एक तिहाई हवा में उड़ाना
और मैं तलवार लेकर उसके पीछे चलाऊँगा।

3 इसके बाद कुछ बाल लेकर अपने कपड़े
की छोर में बान्धना. 4 फिर इनमें से थोड़े
से लेकर आग में जलाना। तब उसी में से
एक लौ भड़क कर इस्राएल के पूरे घराने में
फैलेगी। 5 प्रभु याहवे यों कहते हैं: यरुशलेम
ऐसी ही है; मैंने उसको दूसरे देशों के बीच में
ठहराया और वह चारों और देशों से घिरी है।
6 उसने मेरे नियमों के खिलाफ़ काम करके
अन्य देशों से अधिक दुष्टता की, और मेरी
विधियों के विरुद्ध चारों ओर के देशों के
लोगों से अधिक बुराई की है; क्योंकि उन्होंने
मेरे नियम तुच्छ जाने, क्योंकि उन्होंने मेरे
नियम तुच्छ जाने, और वे मेरी विधियों पर
नहीं चले। 7 इस कारण प्रभु याहवे यों कहते
हैं: तुम लोग जो अपने चारों ओर के देशों
से हुल्लड़ मचाते और न मेरी विधियों पर
चलते और न मेरे नियमों को मानते और अपने
चारों ओर के देशों के नियमों के अनुसार
भी न किया। 8 इस कारण प्रभु याहवे कहते
हैं: देखो, मैं खुद तुम्हारे खिलाफ़ हूँ। दूसरे
देशों के देखते मैं तुम्हारे बीच इन्साफ के
काम करूँगा। 9 तुम्हारे सब घिनौने कामों
के कारण तुम्हारे बीच ऐसा करूँगा, जैसा
अब तक न किया है,और न आने वाले समय
कभी करूँगा। 10 इसलिए तुम्हारे बीच बच्चे
अपने अपने बच्चों का गोश्त खाएँगे और
मैं तुम को सज़ा दूँगा 11 और तुम्हारे सब
बचे हुओं को चारों ओर तितर बितर करूँगा,
इसलिए प्रभु कहते हैं, कि मेरे जीवन की
सौगन्ध, इसलिए कि तुमने मेरे पवित्रस्थान
को अपनी सारी घिनौनी मूरतों और सारे
घिनौने कामों से अशुद्ध किया है। मैं तुम्हें
घटाऊँगा, और तुम पर कुछ भी कोमलता न
करुँगा। 12 तुम्हारी एक तिहाई मरी से जा
मरेगी, एक तिहाई भूख से और एक तिहाई
तलवार से। एक तिहाई को मैं इधर-उधर
छितरा दूँगा और तलवार उनके पीछे पड़ी
रहेगी। 13 इस तरह से मेरा गुस्सा ठंडा
हो सकेगा. अपने गुस्से को पूरी तरह से
प्रगट करके मुझे तसल्ली मिलेगी। तब वे
लोग जान सकेंगे कि मुझ याहवे ने यह सब
गुस्से में कहा है। 14 मैं तुम्हें दूसरे देशों के
सामने और आने-जाने वाले लोगों के सामने
शर्मिन्दा कर डालूँगा। 15 इसलिए जब मैं
तुम को गुस्से,जलजलाहट और रिसवाली
घुड़कियों के साथ दण्ड दूँगा, तब तुम्हारे
चारों ओर के देशों के सामने शर्मिन्दगी, ठट्ठा
और अचरज होगा,यह मुझ याहवे का कहना
है. 16 यह घटना तब होगी, जब मैं उन लोगों
को बर्बाद करने के लिए महँगाई करूँगा।
तुम्हारे आनाज में भी कमी आ जाएगी।
17 महँगाई के अलावा मैं खूँखार जानवर
भेजूँगा और बिना औलाद रह जाओगे। मरी
और खून का सिलसिला जारी रहेगा. तुम्हें
घात किया जाएगा. यह सब मैं कह चुका हूँ।

6 फिर याहवे का संदेश मुझे मिला:
2 हे यर्मियाह, अपना चेहरा इस्राएल
के पहाड़ों की ओर करके उनके खिलाफ़
भविष्यवाणी करो, 3 और कहो, हे इस्राएल
के पहाड़ो,प्रभु की आवाज़ सुनो! वह पहाड़ों,
पहाड़ियों, नालों और तराईयों से कहते हैं:
4 तुम्हारी वेदियाँ उजड़ जाएँगी, सूरज की
मूर्ति तोड़ी जाएगी। मैं तुम में से मारे हुओं
को तुम्हारी मूर्तियों के सामने फेंक दूँगा।
5 मैं इस्राएल की लाशों को उनकी मूर्तों के
सामने रखूँगा और उनकी हड्डियों को तुम्हारी
को तुम्हारी वेदियों के आस-पास बिखरा
दूँगा। 6 तुम्हारे बसाए हुए नगर ऐसे उजड़
जाएँगे, कि पूजा की जगह भी उजड़ जाएगी,
वेदियाँ ढा दी जाएँगी, मूरतें न रहेंगी, सूर्य की
प्रतिमाएँ काटी जाएँगी और सारी कारीगरी
मिटाई जाएगी। 7 तुम्हारे बीच मारे हुए गिरेंगे

और तुम जान जाओगे कि मैं याहवे हूँ। 8 फिर
भी मैं बहुत से लोगों को बचा लूँगा. इसलिए,
जब तुम तमाम देशों में बिखरा दिए जाओगे,
तब कुछ लोग तलवार से बच जाएँगे। 9 वे
बचे लोग उन देशों के बीच तुम्हारे कुछ लोग
तलवार से बच जाएँगे। मुझे याद करेंगे और
यह भी कि हमारा व्यभिचारी मन प्रभु से कैसे
हट गया है और व्यभिचारिणी की सी हमारी
आँखें मूरतों पर कैसी लगी हैं, जिससे प्रभु
का दिल टूट चुका है. 10 तब वे जान सकेंगे,
कि मैं याहवे हूँ और जो मैंने उनके नुक्सान
ठानी है, वह झूठ-मूठ नहीं है। 11 प्रभु का
कहना है: " अपना हाथ मारकर और अपना
पाँव पटककर कहो, " इस्राएल के घराने के
सभी घिनौने कामों पर हाय, क्योंकि वे सभी
तलवार, भूख और मरी से बर्बाद हो जाएँगे।
12 जो इन्सान दूर होगा, वह मरी से मरेगा,
जो पास में हो, वह तलवार से. जो बचा हुआ
नगर में घिर जाएगा, वह भूखा मरेगा. इस
तरह मैं अपन गुस्सा उँडेलूँगा। 13 जब हर
एक ऊँची पहाड़ी और पहाड़ों की हर एक
चोटी पर और हर एक हरे पेड़ के नीचे और
हर एक बाँज पेड़ की छाँव में, जहाँ- जहाँ वे
अपनी सब मूरतों को खुशबूदार चीजें चढ़ाते
हैं, वहाँ उनके मारे हुए लोग अपनी वेदियों के
आस-पास अपनी मूरतों के बीच पड़े रहेंगे;
तब तुम लोग जान जाओगे, कि मैं याहवे हूँ ।
14 मैं अपने हाथों को उनके खिलाफ़ बढ़ाकर
उस देश को सारे घरों सहित जंगल से ले
दिबला तक उजाड़ कर डालूँगा, तब वे जान
सकेंगे, कि मैं याहवे हूँ।

7 फिर प्रभु का यह संदेश मुझे मिला,
2 हे यर्मियाह, इस्राएल की ज़मीन के
सम्बन्ध में प्रभु का कहना है: देश का
अन्त सभी जगह देखा जा सकेगा। 3 तुम
भी खतम होने वाले हो, मेरा गुस्सा तुम
पर भड़केगा और तुम्हारे चरित्र या घिनौने
कामों के हिसाब से तुम्हें सज़ा मिलेगी.
4 तुम पर मेरी कृपा बनी न रहेगी मैं तुम
पर अपनी कोमलता न दिखाऊँगा, जब तक
तुम्हारे घिनौने कामों में तुम लगे रहोगे, तब
तक उसका परिणाम भुगतना पड़ेगा. तब
तुम जान सकोगे कि मैं याहवे हूँ। 5 प्रभु का
कहना है: मुसीबत हाँ एक बड़ी मुसीबत आने
वाली है। 6 अन्त आ चुका है। वह तुम्हारे
खिलाफ़ जाग चुका है. देखो. देखो, वह आ
रहा है। 7 देश में रहने वालो, तुम्हारे लिए
समय चक्र घूम चुका है, समय आ गया है,
दिन बहुत पास में है। पहाड़ों पर खुशी के
शब्द का दिन नहीं, हुल्लड़ का दिन ही
होगा। 8 कुछ ही दिनों में अपना गुस्सा मैं
तुम पर प्रगट करूँगा। मैं तुम्हारे चालचलन
के मुताबिक तुम्हें दण्ड दूँगा। तुम्हें गंदे
कामों का बदला चुकाना पड़ेगा। 9 मेरी दया
की नज़र तुम पर न होगी और न ही मैं
कोमल बर्ताव करूँगा। किए हुए गलत कामों
का परिणाम तो भुगतना ही पड़ेगा। 10 देखो,
समय आने वाला है. छड़ी फूल चुकी है.
घमण्ड बहुत बढ़ चुका है। 11 दंगा-फ़साद
बढ़ते-बढ़ते दुष्टता की सज़ा बन चुकी है।
उनमें से कोई भी बच नहीं पाएगा, न उनकी
भीड़ में से कोई, न उनकी दौलत या किसी
बड़ी वस्तु में से कुछ बच पाएगा. न ही
उनमें से कोई किसी के लिए रोएगा। 12 वक्त
आ चुका है, न खरीदनेवाला खुश हो, न
बेचनेवाला दुखी हो, क्योंकि उन सभी पर
क्रोध भड़क चुका है। 13 चाहे वे ज़िन्दा रहें
तौभी बेचनेवाला बेची हुई चीज़ के पास कभी
भी लौट न सकेगा। दर्शन की यह बात देश
की सारी भीड़ के लिए सच ठहरेगी। कोई
लौट न सकेगा, जो इन्सान बुराई में समय
बिताता है, शक्ति न पा सकेगा 14 उन लोगों

ने नरसिंगा फूँका और सब कुछ तैयार कर
लिया, लेकिन जंग में कोई नहीं जाता क्योंकि
सारे देश पर मेरा गुस्सा भड़क चुका है।
15 बाहर तलवार और अन्दर महँगाई और
मरी है। जो मैदान में हो, वह मरी और भुखमरी
से जान गँवाएगा । 16 उनमें से जो बच जाएँगे,
वे बचेंगे तो सही, लेकिन अपनी- अपनी
बुराई में फँसे रहकर तराईयों में रहनेवाले
कबूतरों की तरह पहाड़ों के ऊपर रोते रहेंगे।
17 सब के हाथ ढीले और घुटने बहुत कमज़ोर
हो जाएँगे। 18 वे कमर में टाट बाँधेंगे और
उनके रोएँ खड़े हो जाएँगे। उनके सिर के
बाल उतारे जाएँगे और मुँह सूख जाएँगे। 19 वे
लोग अपनी चाँदी सड़कों पर फेकेंगे और
सोना भी बेकार हो जाएगा। प्रभु की सज़ा
के दिन उनका चाँदी सोना उनके किसी काम
का न होगा, न ही उनका उससे जी भरेगा, न
ही पेट, क्योंकि वह उनके अधर्म के ठोकर
का कारण हुआ है। 20 उनका खूबसूरत और
महान देश था, लेकिन उन्होंने घमण्ड किया
और घिनौनी वस्तुओं की मूरतें और घिनौनी
वस्तुएँ बना रखीं, इसलिए मैंने उसे उनके
लिए अशुद्ध वस्तु ठहराया है। 21 मैं उन्हें
लूटे जाने के लिए विदेशियों के और छीने
जाने के लिए पृथ्वी के बुरे लोगों के हाथ में
सुपुर्द कर दूँगा और ये उन्हें पवित्र करेंगे।
22 मैं उनसे अपना मुँह भी फेर लूँगा और
वे मेरे रक्षित जगह को अपवित्र करेंगे; तब
लुटेरे घुसकर उसको अपवित्र करेंगे। 23 “
जंजीर बनाओ, क्योंकि देश हत्याकाण्ड से
और नगर झगड़ों-हत्याओं से भर चुका है।
24 इसलिए मैं दूसरे देशों के बुरे-बुरे लोगों
को लाऊँगा, जो उनके घरों पर अधिकार
कर लेंगे। मैं ताकतवरों के घमण्ड को भी
तोड़ डाला जाएगा और उनके पवित्रस्थान
अपवित्र कर दिए जाएँगे। 25 दुख-परेशानी
पड़ने पर वे शान्ति चाहेंगे, पर उन्हें मिलेगी
नहीं। 26 मुसीबत पर मुसीबत आएगी और
अफवाहों पर अफवाहें फैलेंगी। तब वे नबी
से दर्शन चाहेंगे,लेकिन याजकों के पास से
प्रभु की नियम आज्ञाएँ और प्राचीनों के पास
से सलाह मशविरा खतम हो जाएगा। 27 राजा
दुखी होगा, प्रधान दहशत में होगा और देश
के लोगों के हाथ काँपेंगे। उनके आचरण
के अनुसार में उनसे व्यवहार करूँगा और
उनकी न्याय-विधि के अनुसार मैं उनका
इन्साफ करूँगा. तब वे जान सकेंगे कि मैं
याहवे हूँ।

8 छठवें साल के छठवें महीने के पांचवे
दिन ऐसा हुआ कि जब मैं अपने घर में
अपने घर में बैठा था और यहूदा के प्राचीन
मेरे सामने मेरे सामने बैठे थे तो प्रभु याहवे का
हाथ मुझ पर आ ठहरा। 2 तब मैंने निगाह की
और देखो, मनुष्य का सा एक रूप दिखाई
पड़ा, उसकी कमर से नीचे तक आग सी तथा
कमर से ऊपर प्रज्जवल धातु की चमक सी
दिखाई पड़ी। 3 हाथ बढ़ाकर उसने मेरे बालों
को पकड़ा। फिर आत्मा ने मुझे पृथ्वी और
आकाश के बीच में उठाकर परमेश्वर के
दिखाए दर्शनों में यरुशलेम के आंगन के उस
फाटक के पास पहुँचाया, जिसका मुँह उत्तर
की ओर है। इस में जलन पैदा करनेवाली
मूर्ति की जगह थी, उसी की वजह से जलन
पैदा होती है। 4 जिस तरह का तेज मैंने मैदान
में देखा था, वैसा ही तेज वहाँ था 5 उसने मुझे
उत्तर की ओर देखने के लिए कहा। जब मैंने
वैसा किया,तो जलन करने वाली मूर्ति, वेदी
के फाटक के उत्तरी ओर दाखिल होने वाले
दरवाज़े पर दिखी। 6 उसने मुझ से कहा, “
तुम इस्राएल के घिनौने कामों को देख रहे हो,
वे ये सब इसलिए कर रहे हैं, ताकि मैं पवित्र
जगह से दूर रहूँ? लेकिन तुम इनसे अधिक

घिनौने कामों को देखोगे।” 7 तब वह मुझे आंगन के दरवाज़े पर ले गया, जहाँ दीवार में एक छेद था। 8 उसने मुझ से कहा, “ इस दीवार को तोड़ डालो।” जब मैंने वैसा किया, तो मुझे एक दरवाज़ा दिखा।” 9 वह मुझ से बोला कि जिन घिनौने कामों को वे कर रहे हैं, उन्हें अन्दर जाकर देखो 10 जब मैंने अन्दर जाकर अपनी निगाह दीवार पर डाली, तो हर रेंगने वाले तथा दूसरे जानवरों और घिनौनी चीज़ों की मूर्तियाँ खुदी हुई देखीं। 11 उनके सामने इस्राएल के सत्तर प्राचीन खड़े थे, जिनके बीच शापान का बेटा याजन्याह खड़ा था। हर एक के हाथ में धूपदान था और उसमें से धूप का खुशबूदार धुएँ का बादल उठ रहा था। 12 उसने मुझ से कहा, “ क्या तुम देख पा रहे हो, कि प्राचीन अपनी खुदी मूर्तियों के कमरों में क्या कर रहे हैं?उनका कहना है कि प्रभु हमें नहीं देखते हैं और उन्होंने हमें छोड़ दिया है। 13 आगे उसने यह भी कहा कि तुम इससे ज़्यादा घिनौने काम देखोगे 14 तब वह मुझे प्रार्थना घर के उस अन्दर जाने वाले दरवाज़े पर लाया जो उत्तर की ओर था। वहाँ बैठी महिलाएँ, तम्मूज़ के लिए रो रही थीं। 15 तब उसने कहा कि आने वाले समय में इससे बुरी हालत देखोगे। 16 तब वह मुझे प्रभु के भवन के अन्दरूनी आंगन में ले आया। वहाँ प्रवेश द्वार पर ओसारे और वेदी के बीच, तकरीबन पच्चीस जन थे। 17 उसने मुझसे कहा, “ जो काम यहूदा के लोग करते हैं, वे उनके लिए मामूली बात है। उन्होंने देश को हिंसा से भर डाला है और बार बार मेरे गुस्से को भड़काया है, अपनी नाक के सामने टहनी रखकर वे मुझे चिढ़ाते हैं। 18 इसलिए मैं भी उन पर अपना गुस्सा उण्डेलूँगा। मैं उन पर दया न करूँगा, न ही छोड़ूँगा। चाहे वे मेरे कानों में ऊँची आवाज़ से कहें, मैं सुनूँगा ही नहीं।”

9 मेरे सुनते ही वह ऊँची आवाज़ में बोला, हे नगर के जल्लादो अपने –अपने खतरनाक हथियार हाथ में लिए हुए मेरे पास आओ।” 2 तब छः आदमी घातक हथियार लिए उत्तर की ओर से ऊपरी फाटक से आए. उनके साथ महीन मलमल के कपड़े पहने हुए एक आदमी था, जिसकी कमर में कलमदान था,फिर वे अन्दर जाकर वेदी के पास खड़े हो गए। 3 तब इस्राएल के परमेश्वर का तेज जो करूबों पर विराजमान था, उठ गया और भवन की डयोढ़ी पर चला गया और मलमल के कपड़े पहने जन को, जिसकी कमर में कलमदान था, प्रभु ने पुकारा, 4 और कहा,“ नगर के, हाँ, यरुशलेम के बीच से होकर जाओ और मारते चलो और उन सबके माथे पर निशान लगाओ जो उससे किए जाने वाले सब घिनौने कामों के लिए आहें भरते और कराहते हैं।” 5 परन्तु उसने दूसरों से मेरे सुनते कहा, “तुम उसके पीछे नगर में जाओ और उन्हें मारते जाओ। दया न दिखाना और किसी को छोड़ना नहीं. 6 बूढ़ों, जवानों, कुंवारियों,छोटे बच्चों और महिलाओं सभी को मार डालना. पवित्र जगह से शुरू करना, लेकिन जिस इन्सान पर निशान हो, उसे छूना तक नहीं, इसलिए उन्होंने उन प्राचीनों से आरम्भ किया। 7 उन्होंने उनसे कहा, “भवन को अशुद्ध कर दो, हाँ इसके आंगनों को मारे हुओं से भर दो और चले जाओ।” इसके बाद वे गए और नरसंहार किया। 8 जब ऐसा नरसंहार जारी था और मैं अकेला बचा हुआ था, तभी मुँह के बल गिर पड़ा और चिल्ला उठा, “हाय, हे प्रभु क्या आप अपने गुस्से की आग यरुशलेम पर उण्डेल कर इस्राएल

के सभी बचे हुओं को बर्बाद कर डालेंगे
9 तब उन्होंने मुझसे कहा, “इस्राएल और
यहूदा के घराने की बुराई बहुत ज्यादा है.
देश खून से भर चुका है और नगर बुराईयों
से भर चुका है. वे कहते हैं कि प्रभु ने देश
को छोड़ दिया है और वह हम पर नज़र तक
नहीं डालते। 10 लेकिन मेरी आँखों में तो कुछ
भी दया न होगी और मैं उन्हें न छोड़ूँगा ।
उनके चरित्र को मैं उन्हीं पर लौटा दूँगा।”
11 तभी मलमल पहने एक आदमी जिसके
कमर में कलमदान था, उसने यह कह कर
सूचना दी, “तुमने जो आदेश दिया था, वैसा
ही मैंने किया है।

10 इसके बाद मैंने यह देखा कि करूबों
के सिरों के ऊपर जो आकशमण्डल
था उसमें नीलमणि की तरह, कुछ ऐसा
दिखा, जिसकी शक्ल तख्त की तरह थी।
2 याहवे प्रभु ने मलमल के कपड़े पहने हुए
उस आदमी से कहा, “ करूबों के नीचे
घूमने वाले पहियों के बीच में दाखिल होकर
और करूबों के बीच के धधकते हुए अंगारों
से अपने हाथ भर लो और उन्हें नगर के
ऊपर बिखेर दो.” इसके बाद जब मैं देख
ही रहा था, उनके बीच दाखिल हो गया।
3 उसके दाखिल होने के वक्त करूब भवन
के दाहिनी ओर खड़े थे, और बादल से
अन्दर का आंगन भर गया। 4 तब प्रभु
का तेज करूबों पर से उठकर भवन के
दरवाज़े पर चला गया, और मन्दिर बादल
से तथा आंगन प्रभु के तेज की रोशनी से भर
गया। 5 इसके अलावा करूबों के पंखो की
आवाज़ बाहरी आंगन तक सुनाई देती थी।
वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बोलने की
आवाज़ की तरह थी। 6 जब उसने मलमल
के कपड़े पहने हुए आदमी को यह कहकर
आदेश दिया, “करूबों के बीच घूमते हुए
पहियों के बीच से आग लो,” तब वह
प्रवेश करके पहिए की एक ओर खड़ा हो
गया। 7 तब करूबों में से एक करूब ने
दूसरे करूबों के बीच आग में अपना हाथ
बढ़ाया और आग में से कुछ लेकर मलमल
के कपड़े पहने हुए एक जन के हाथों पर
रख दिया, और वह उसे लेकर बाहर चला
गया। 8 करूबों के पंखों के नीचे इन्सान के
हाथों की तरह आकार दिखाई दिए। 9 फिर
मैंने देखा कि करूबों के पास चार पहिये थे
और हर एक करूब के पास एक पहिया था
और पहिये की शक्ल फिरोज़े की चमक सी
थी। 10 और उनका रूप अर्थात उन चारों का
आकार एक ही सा था. ऐसा लगता था जैसे
कि एक पहिये के अन्दर दूसरा हो। 11 जब वे
चलते थे, तो चारों दिशाओं में से एक दिशा
में चलते और और चलते समय मुड़ते नहीं
थे। 12 उनकी पूरी देह, उनकी पीठ, उनके
हाथ,उनके पंख,और उनके पहिये अर्थात
चारों के पहिए चारों ओर आँखों से भरे हुए
थे। 13 और मेरे सुनते हुए उन पहियों को घूमने
वाले पहिए 14 और हर एक के चार मुँह थे-
पहला मुँह करूब का, दूसरा मुँह इन्सान का,
तीसरा मुँह शेर का और चौथा मुँह उकाब का
सा था। 15 तब करूब ऊपर की ओर उठे. ये
वे ही ज़िन्दा जीव हैं, जिन्हें मैंने कबार नदी
के किनारे पर देखा था। 16 जब –जब करूब
चलते थे, तब-तब पहिये भी चलते थे। जब
कभी करूब पृथ्वी पर से ऊपर उठने के लिए
अपने पँख फैलाते थे, तो पहिये उनके पास
से दूर नही हटा करते थे। 17 जब करूब रुक
जाते तब पहिये भी रुक जाया करते थे और
जब वे ऊपर उठ जाते, तो पहिये भी उनके
साथ उठते थे. उन प्राणियों की आत्मा उनमें
थी। 18 तब प्रभु का तेज भवन की डचोढ़ी
पर से उठ कर करूबों पर मण्डराया। 19 मेरे

देखते देखते जब करूब वहाँ से चल पड़े, वे अपने पँख फैलाकर पहियों सहित पृथ्वी पर से ऊपर उठ गए। वे प्रभु के भवन के पूर्वी फाटक के प्रवेशद्वार पर ठहर गए. और इस्राएल के परमेश्वर का तेज उन पर बना रहा। 20 ये वे ही जीवित प्राणी हैं,जिन्हें मैंने कबार नदी के तट पर देखा था। इसलिए मुझे यह पहचान थी कि वे करूब हैं। 21 हर एक के चार मुँह और चार पंख थे। उन पंखों के नीचे इन्सान के हाथों की तरह थे। 22 उनके मुँह के रूप वैसे ही थे जैसे उन मुखों के रूप जो जो मैंने कबार नदी के तट पर देखे थे।उनके मुँह और शरीर वैसे ही थे। वे सीधे अपने -अपने साम्हने ही चलते थे।

11 एक दिन आत्मा ने मुझे उठाया और भवन के पूर्वी दरवाज़े पर ले गया, जिसका मुँह पूर्व की ओर है. वहाँ प्रवेश दरवाज़े पर पच्चीस जन थे, और मैंने उनके बीच अज्जूर के बेटे याजन्याह और बनायाह के बेटे पलत्याह को देखा. ये लोग प्रजा के मार्गदर्शक थे। 2 उसने मुझ से कहा, “ये वे लोग हैं, जो इस जगह पर खराब योजनाएँ बनाते और खराब सलाह देते हैं। 3 वे यह भी कहते हैं, “ क्या घर बनाने का समय पास नहीं है? यह नगर बड़ा बर्तन और हम उस में का मांस हैं”, 4 इसलिए तुम उनके खिलाफ़ नबूवत करो।” 5 तब प्रभु का आत्मा मेरे ऊपर आया और मुझ से कहा, तुम यह कहो, कि प्रभु का कहना यह है: हे इस्राएल के घराने, तुम ऐसा ही सोचते हो, क्योंकि मैं तुम्हारे मन की बातों को जानता हूँ। 6 इन नगरों में तुमने बहुत लोगों को मार डाला है और गलियों को लाशों से भर दिया है। 7 इसलिए प्रभु का कहना है, “ जिन लोगों की तुमने जान ली, वे मांस और यह नगर हण्डा है, लेकिन मैं तुम्हें इस से निकाल लाऊँगा। 8 तुम तलवार से डरते थे, इसलिए अब तुम्हारे खिलाफ़ वही चलेगी। 9 इस नगर से मैं तुम्हें बाहर कर डालूँगा और विदेशियों के हाथ सुपुर्द कर दूँगा। मैं तुम्हारे खिलाफ़ न्याय दूँगा। 10 तुम तलवार से मारे जाओगे, मैं इस्राएल की सरहद तक तुम्हारा इन्साफ करता जाऊँगा। इस तरह तुम लोग पता लगा सकोगे, कि मैं ही याहवे हूँ। 11 यह नगर तुम्हारे लिए हण्डा नहीं होगा न ही तुम उसमें रखे मांस की तरह होगे, लेकिन मैं इस्राएल की सरहद तक तुम्हारा न्याय चुकाऊँगा। 12 तभी तुम जानोगे कि मैं प्रभु हूँ। तुम मेरे बताए रास्ते पर न चले और न मेरी बातों को माना, लेकिन तुम अपने चारों ओर रहने वाले लोगों की तरह जीवन बिताते रहे। 13 मैं नबूवत कर ही रहा था कि बनायाह के बेटे का देहान्त हो गया । तब मैं मुँह के बल गिरकर बड़ी ज़ोर से चिल्ला उठा, हाय प्रभु क्या आप इस्राएल के बचे हुओं को बर्बाद कर डालेंगे? 14 तब प्रभु का संदेश मुझे मिला, 15 तुम्हारे भाई-बन्धु, तुम्हारे घर के लोग, निर्वासन में तुम्हारे साथी, इस्राएल का पूरा घराना- ये वे सब हैं जिनसे यरुशलेम में रहने वालों ने कहा है, ‘तुम सभी प्रभु से दूर हो जाओ। यह देश हमें मीरास में दिया गया है।’ 16 इसलिए लोगों को यह समाचार दो: हालांकि मैंने उन्हें दूर-दूर के देशों में पहुँचा दिया है, फिर भी जिस किसी देश में वे गए, उनके लिए मैं कुछ ही समय के लिए पवित्र स्थान ठहरा हूँ। 17 इसलिए उन्हें यह समझाओ, कि प्रभु उन्हें दूर- दूर के देशों से वापस लाएँगे और मैं तुम्हें इस्राएल का देश दूँगा। 18 और जब वे वहाँ आएँगे, तब वे सभी घिनौनी मूर्तियों और चीज़ों को उस से दूर कर देंगे। 19 उनका दिल मैं एकता में बाँध दूँगा। उनके अन्दर एन नयी आत्मा डालूँगा।

उनकी देह में से पत्थर का दिल निकालूँगा
और गोश्त का दिल दूँगा, 20 ताकि वे मेरी
बताई गयी बातों और नियमों को मानकर मेरे
रास्ते पर चलें. तब वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और
मैं उनका परमेश्वर। 21 लेकिन जिनका मन
अपनी घिनौनी मूर्तियों और घिनौनी चीज़ों के
लिए मचलता है,मैं उन्हीं के सिर पर उनकी
चाल को मढ़ दूँगा. यह प्रभु का कहना है।
22 तब करूबों ने अपने पंखों को ऊपर उठाया
और पहिये उनके साथ चल पड़े और इस्राएल
के परमेश्वर का तेज उनके ऊपर मण्डराता
रहा 23 नगर के बीच से प्रभु का तेज उठ गया
और नगर के पूर्व के पहाड़ पर ठहर गया।
24 इसके बाद आत्मा ने मुझे ऊपर उठाया
और दर्शन में कसदियों के देश में निकाले
हुओं के पास ले आया। इसके बाद वह दर्शन
नहीं दिखा 25 इसके बाद मैंने वे सब बातें
निकाले हुओं को बता दीं।

12 तब प्रभु का संदेश मुझे मिला; 2 हे
मनुष्य की सन्तान, तुम विद्रोही
परिवार से हो। वे लोग आँख होने के बावजूद
देख नहीं सकते, कान होने पर भी सुन नहीं
सकते, वे बलवई घराने के हैं। 3 इसलिए
यहेजकेल यहाँ से निकलने के लिए तैयार हो
जाओ, हाँ दिन में ही निकल जाना, हालाँकि
वे बलवई घराने के हैं, लेकिन हो सकता
है,ध्यान दें। 4 उनके देखते हुए दिन के वक्त
अपने सफर के थैले को निर्वासन के सामान
की तरह बाहर निकालना, तब उनके देखते
हुए सांझ के समय उनके समान प्रस्थान
करना जो निर्वासित किए जाते हैं। 5 उनके
देखते दीवार में एक छेद बनाना. उसी में
से होकर निकल जाना । 6 उनके देखते-
देखते कन्धे पर सामान लादना और अन्धेरे
में चले जाना. अपने चेहरे को ढक लेना,
ताकि तुम्हें पृथ्वी न दिख सके, क्योंकि
मैंने तुम्हें इस्राएल के घराने के लिए एक
निशान ठहराया है।" 7 जैसा आदेश मुझे दिया
गया था, वैसा मैंने किया भी. दिन के वक्त
मैंने यात्रा का सामान ऐसे बाहर निकाला,
जैसे कि निर्वासन का हो। तब शाम को
दीवार तोड़ी और अन्धेरे में चल दिया। मैंने
सामान को उनके देखते अपने कन्धे पर
उठा कर ले गया। 8 सुबह सवेरे प्रभु का
यह वचन मुझे मिला: 9 "क्या इस्राएल के
घराने ने, हाँ बलवई घराने ने तुम से यह नहीं
पूछा, कि तुम क्या कर रहे हो?' 10 उनसे
कहो, प्रभु याहवे यह कहते हैं: यह आवाज़
यरुशलेम के राजा और इस्राएल के घराने के
लोगों से जो उसमें रहते हैं, सम्बन्धित है।
11 उनसे कहो, 'मैं तुम्हारे लिए एक निशान
हूँ. जैसे मैंने किया है, वैसे ही उनके साथ
भी किया जाएगा, तुम गुलामी में जाओगे.
12 उनका राजा उनके बीच में है, वह अन्धेरे
में अपना सामान कन्धे पर उठा कर बाहर
चला जाएगा। उसे बाहर ले जाने के लिए
वे दीवार खोदकर रास्ता बना लेंगे। वह
अपने चेहरे को ढांक लेगा, ताकि पृथ्वी
को न देख पाए , 13 मैं अपने जाल को
फैलाकर उसे फँसा लूँगा। मैं उसे कसदियों
के देश बेबिलोन पहुँचाऊँगा. हालांकि वह
वहाँ मर जाएगा, लेकिन देखने नहीं पाएगा।
14 मैं उसके मददगारों और उसकी सारी फौज
अर्थात जितने उसके आसपास होंगे, उन
सब को चारों ओर तितर-बितर करूँगा और
तलवार से पीछा करूँगा 15 जब मैं उन्हें
देश-देश में फैला दूँगा, तब उनको एहसास
होगा कि मैं याहवे हूँ। 16 लेकिन मैं उनमें से
कुछ को तलवार महामारी,आकाल और मारे
जाने से बचा लूँगा, ताकि वे जिन देशों में
जाएँ, अपने घिनौने कामों के बारे में बताएँ
और जानें कि मैं ही याहवे हूँ।" 17 याहवे

का यह संदेश मुझे मिला: 18 “हे मनुष्य
की सन्तान,काँपते हुए अपना भोजन करना
और थरथराते हुए चिन्ता के साथ पानी
पीना। 19 तब इस देश के लोगों से कहना,
इस्राएल देश के यरुशलेम निवासियों के बारे
में प्रभु याहवे कहते हैं: वे चिन्ता और दर में
अपना खाना- पीना करेंगे, क्योंकि वहाँ के
निवासियों के कारण उनका देश बहुतायत
से खाली रह जाएगा। 20 खूब अच्छी तरह
से बसे नगर उजाड़ होने से देश उजाड़ हो
जाएगा, तब तुम जानोगे कि मैं ही याहवे हूँ।”
21 फिर प्रभु के यह वचन मुझे मिला, 22 “ हे
यहेजकेल, क्या तुम मुझे इस कहावत क
मतलब बता सकोगे जो इस्राएल देश के बारे
में है, ‘ दिन बीतते जा रहे हैं और दर्शन एक
भी पूरा नहीं हो रहा है।’ 23 इसलिए उनसे
कहो,प्रभु याहवे कहते हैं: मैं इस कहावत
को समाप्त कर दूँगा, जिससे इस्राएल में
यह कहावत फिर कभी न चल सके। लेकिन
उनसे कहो, ‘ दिन और दर्शन जल्दी ही पूरे
होंगे। 24 क्योंकि इस्राएल के घराने में झूठे
दर्शन या चापलूसी में शकुन विचारने की बात
फिर कभी न होगी। 25 क्योंकि मैं याहवे जो
कुछ कहूँगा, उसे पूरा भी करूँगा। उसमें देर
न होगी, क्योंकि हे बलवा करने वाले घराने,
तुम्हारे दिनों में जो कुछ मैं कहूँगा, उसे भी
पूरा करूँगा। 26 फिर याहवे का यह संदेश
मुझे मिला, 27 “ हे यहेजकेल, देखो, इस्राएल
का घराना कहता है, यह दर्शन जो वह देखता
है, काफी समय के बाद ही पूरा होगा, वह
आने वाले युगों के लिए है।’ 28 इसलिए उनसे
कहो, ‘प्रभु याहवे कहते हैं: अब से किसी
भी बात को पूरा होने में देर न होगी, जो भी
मैं कहूँगा, वह पूरा होना ही है, यह प्रभु का
कहना है।’

13 तब याहवे का संदेश मुझे मिला.,
2 “ हे मनुष्य की सन्तान, इस्राएल
के भविष्यवाणी करने वाले भविष्यद्वक्ताओं
के खिलाफ़ नबूवत करो ये लोग मनगढ़न्त
बातों को भविष्यवाणी करके पेश करते हैं,
इनसे कहो, याहवे का संदेश सुनो, 3 प्रभु
कहते हैं: उन बेवकूफ नबियों पर अफसोस,
जो बिना दर्शन पाए अपनी आत्मा से चलते
हैं। 4 हे इस्राएल, तुम्हारे सारे भविष्यद्वक्ता
खण्डहर की लोमड़ियों की तरह हैं। 5 तुम न
तो दरारों पर चढ़े, न ही इस्राएल के घराने
के चारों ओर शहरपनाह बनाई कि वे याहवे
के दिन में लड़ाई के समय मज़बूत बने रहें।
6 जो कहते हैं, यह याहवे की वाणी है, वे
झूठ देखते हैं और झूठा शकुन विचारते हैं,
हालांकि याहवे ने उन्हें भेजा नहीं है, फिर
भी वे अपने वचन के पूरा होने की आशा
रखते हैं। 7 जबकि मैंने तुम से कुछ नहीं
कहा और तुमने झूठ-मूठ भरमाया, कि यह
याहवे का संदेश है, तो तुमने क्या बेकार
का दर्शन नहीं देखा और झूठा शकुन नहीं
विचारा?” 8 इसलिए परमेश्वर याहवे यों
कहते हैं, “ इसलिए कि तुमने बेकार की
बातें कहीं और झूठा दर्शन देखा, इसलिए मैं
तुम्हारे खिलाफ़ हूँ.” यह प्रभु याहवे के वचन
हैं। 9 जो भविष्यद्वक्ता झूठे दर्शन देखते हैं
और झूठ-मूठ आनेवाली बातों को बताते हैं
10 निश्चय यह इसलिए है, क्योंकि उन्होंने
मेरे लोगों को यह कहकर धोखा दिया है
कि शान्ति है, जबकि शान्ति नहीं है,तथा
इसलिए कि कोई दीवार बनाता है,तब वे
उस पर कच्ची लेसाई करते हैं। 11 इसलिए
जो लोग कच्ची लेसाई करते हैं, उनको
बताओ, कि वह गिर पड़ेगी।ज़ोरदार बरसात
और ओलों की बरसात होगी, या तेज़ आँधी

चलेगी। 12 देखो, जब दीवार ढह जाएगी तो
क्या तुमसे पूछा कि जाएगा कि वह लेसाई
कहाँ गई , जो तुमने की थी?" 13 इसलिए प्रभु
याहवे कहते हैं," मैं अपने गुस्से में तेज आँधी
चलाऊँगा, तथा अपने गुस्से में ज़ोरदार
आँधी चलाऊँगा,तथा अपने गुस्से में भीषण
वर्षा और विनाशकारी ओले बरसाऊँगा।
14 अत: जिस दीवार पर तुमने कच्ची लेसाई
की है, मैं उसे ढाकर धूल में मिला दूँगा,
जिससे उसकी नींव खुल जाएगी, और जब
वह गिरेगी तो तुम जान लोगे कि मैं याहवे
हूँ। 15 इस तरह मैं दीवार और उसके लेसाई
करनेवालों पर गुस्सा उतारूँगा, तब मैं तुमसे
कहूँगा, न तो दीवार रही , न उसकी लेसाई
करनेवाले 16 और न ही इस्राएल के नबी ही
बचे जो शान्ति न होते हुए भी यरुशलेम के
खिलाफ़ नबूवत करते तथा दर्शन देखते हैं,
यह प्रभु का कहना है। 17 "अब हे मनुष्य की
सन्तान , तुम अपना मुँह अपने ही लोगों की
उन बेटियों के खिलाफ़ करो जो अपने ही मन
से नबूवत करती हैं। तुम उनके विरुद्ध नबूवत
करके यह कहो: 18 प्रभु याहवे यह कहते हैं,
उन महिलाओं पर हाय जो हर एक बाँह पर
बाँधने के लिए ताबीज़ सीती हैं और सब
डीलडौल के लोगों के सिर ढाँपने के लिए
आवरण बनाती हैं कि प्राणों का शिकार करें।
क्या तुम मेरे लोगों के प्राणों का तो शिकार
करोगी पर अपने लिए अन्य लोगों की जान
बचा रखोगी? 19 तुमने मुट्ठी भर जौ और रोटी
के टुकड़ों के लिए मेरे लोगों के सामने मुझे
अपवित्र ठहराया और मेरे लोगों के सामने
जो झूठ सुनते हैं, झूठ बोलकर जिन्हें मरना
नहीं चाहिए था उन लोगों को मार डाला और
जिन्हें ज़िन्दा नहीं रहना चाहिए था उन्हें
बचाया। 20 "इसलिए प्रभु याहवे यों कहते हैं,
"देखो, मैं उन ताबीज़ों के खिलाफ़ हूँ, जिन
के द्वारा तुम प्राणों का शिकार ऐसे करती हो,
मानो पक्षियों । 21 मैं तुम्हारे सिर के आवरण
को भी फाड़कर अपने लोगों को तुम्हारे हाथ
से छुड़ा लूँगा। वे फिर तुम्हारे हाथों में पड़ने
के लिए न रहेंगे, तब तुम जान सकोगे कि
मैं याहवे हूँ। 22 क्योंकि तुमने झूठ से धर्मी
को निराश किया, जबकि मैंने उसे दुखी नहीं
होने दिया। तुमने दुष्ट को उकसाया है कि वह
अपनी बुराई में लगा रहे और अपनी जान
बचाए। 23 इसलिए हे महिलाओ, तुम फिर
झूठे दर्शन न देखोगी और न शकुन विचारोगी,
और मैं तुम्हारे हाथ से अपने लोगों को
छुड़ाऊँगा। इस प्रकार तुम जान लोगी, कि
मैं याहवे हूँ।

14 एक दिन इस्राएल के कुछ प्राचीन
मेरे पास आकर बैठ गए। 2 तभी
मुझे याहवे का संदेश मिला : 3 "इन लोगों
ने अपनी मूर्तियों को अपने मनों में रख लिया
है। इन लोगों ने अपनी ठोकर अपने सामने
ही रखी हुई है। फिर ये मुझसे कुछ पूछने की
हिम्मत कर सकते हैं? 4 इसलिए उनसे कहो,
कि प्रभु का कहना है : कोई भी इस्राएली
जिसने अपने मन में मूर्ति समा कर रखी है
और अपनी आँखों के सामने अपने बुरे काम
की ठोकर रखते हुए भविष्यद्वक्ता के पास
आए, तो मेरा जवाब उसकी तमाम मूर्तियों
के अनुसार ही होगा। 5 जिससे इस्राएल के
उन घरानों के मनों पर फिर से राज्य करूँ,
जो अपनी सभी मूर्तियों के कारण मुझसे दूर
हो गए हैं। 6 इसलिए इस्राएल के घराने से
कहो, कि प्रभु यह कहते है : पश्चाताप करके
अपनी मूर्तियों से दूर हो जाओ और सारी
घिनौनी वस्तुओं से किनारा करो। 7 इस्राएल
के घराने का कोई जन अथवा विदेशी जो
इस्राएल में रहता है। और मुझ से अलग हो
गया हो, और अपने हृदय में मूर्तियाँ स्थापित

करे, अपने अधर्म की ठोकर अपने मुँह के
ठीक सामने रखे और फिर अपने बारे में मेरी
इच्छा जानने के लिए नबी के पास आए,
तो मैं याहवे खुद ही उसे जवाब दूँगा। 8 मैं
उस इन्सान से अपना चेहरा मोड़ लूँगा, उसे
मैं एक कहावत ही ठहराऊँगा और अपने
लोगों में से मिटा डालूँगा। तभी तुम जानोगे
कि मैं ही याहवे हूँ। 9 लेकिन यदि एक नबी
बोलने के लिए मजबूर हुआ हो, तो मैं उसके
खिलाफ़ अपना हाथ बढ़ाऊँगा और अपनी
इस्त्राएल प्रजा में से बर्बाद कर डालूँगा। 10 वे
लोग अपने गलत कामों की सज़ा पाएँगे।
जिस तरह से खोज करने वाले का उसी
तरह भविष्यद्वक्ता के भी बुरे काम होंगे।
11 जिससे इस्त्राएल का घराना मेरे रास्ते से
फिर भटककर अपने गुनाह के कारण भ्रष्ट
न हो जाए। इस तरह वे मेरी प्रजा और मैं
उनका परमेश्वर बना रहूँगा यह याहवे का
कहना है।" 12 तब याहवे का यह संदेश
मुझे मिला; 13 "हे यहेजकेल, यदि कोई देश
धोखा देकर मेरे खिलाफ़ अपराध करे और मैं
उसके विरूद्ध अपनी बाँह को बढ़ाकर उसके
उसका खाना बन्द कर दूँ, उसमें अकाल भेज
दूँ और वहाँ के जानवर और मनुष्य दोनों को
नष्ट कर दूँ। 14 तब चाहे नूह, दानिय्येल और
अय्यूब ये तीनों व्यक्ति उनके बीच होते, तो
वे अपनी धार्मिकता से मात्र अपने को ही
बचा पाते, यह प्रभु का कहना है। 15 यदि
मैं देश में जंगली जानवरों को भेज देता, जो
उसे उजाड़ डालते और उसकी हालत ऐसी
हो जाती, कि उन पशुओं के कारण उसमें
से होकर कोई न जा सकता, 16 और तब
चाहे ये तीनों व्यक्ति उसमें होते, फिर भी
प्रभु याहवे के वचन ये हैं कि मेरे जीवन
की शपथ, ये भी अपने बेटों और बेटियों
को न बचा पाते। केवल ये ही बच पाते,
लेकिन देश उजाड़ हो जाता। 17 या यदि मैं यह
कहकर उस देश पर तलवार चलवाता कि
इस देश पर तलवार चले और इन्सानों तथा
जानवरों दोनों का समाप्त कर डाले। 18 तब
चाहे उसमें वे तीन पुरुष भी होते, तौभी प्रभु
का कहना है, मेरे जीवन की सौगन्ध, न तो
वे बेटों को और न बेटियों को बचा सकते,
केवल ये ही बच पाते। 19 फिर यदि मैं उस
देश पर महामारी भेजता, और अपने गुस्से
में इन्सानों और जानवरों को उसमें से बर्बाद
करने के लिए खून खराबा करता, 20 तब
चाहे नूह, दानिय्येल और अय्यूब उसमें होते,
फिर भी प्रभु याहवे का संदेश यह है कि मेरे
जीवन की शपथ, वे न अपने बेटों-बेटियों को
बचा पाते। वे अपने सही चरित्र से केवल
अपने आपको ही बचा पाते।" 21 क्योंकि प्रभु
याहवे कहते हैं, "फिर यह कितना ज्यादा
भयानक होगा, जब मैं यरूशलेम पर अपने
चारों ओर खतरनाक सज़ा को उण्डेलूँगाः
अर्थात तलवार, अकाल, क्रूर जानवर और
महामारी कि मनुष्य और पशु सभी बर्बाद हो
जाएँ। 22 फिर भी उसमें से कुछ बेटे-बेटियाँ
बच जाएँगे। देखो, वे तुम्हारे पास पहुँचाए
जाएँगे और तुम उनका व्यवहार और काम
देख सकेंगे। तब उस मुसीबत को और
उस सब को जो मैंने यरूशलेम पर डाला
है देखकर सुकून पाओगे। 23 उनके बर्ताव
और काम को देखकर तुम्हें शान्ति मिलेगी,
क्योंकि तुम एहसास कर पाओगे कि जो कुछ
मैंने किया, वह सब बेकार नहीं था",यह प्रभु
याहवे कहते हैं।

15 तब प्रभु का संदेश मुझे प्राप्त
हुआ; 2 हे यहेजकेल, दाखलता की
लकड़ी जंगल के किसी भी पेड़ की डाल की
लकड़ी से बेहतर कैसे हो सकती है? 3 क्या
कोई उस लकड़ी से कुछ बना पाएगा? क्या

उससे खूंटी बनाई जा सकेगी, जिस पर बर्तन
को लटकाया जा सके? 4 यदि उसे जलाने
वाली लकड़ी के लिए आग में डाले और
आग उसके दोनों सिरों को जला डाले, तथा
उसका बीच का हिस्सा भी जल जाए, तो क्या
वह किसी काम के लायक रहेगी? 5 देखो,
जब साबुत लकड़ी से कुछ बनाया जाना
नामुमकिन हो तो वह आग में जलने के बाद
और ज़्यादा बेकार क्यों न ठहरेगी? 6 इसलिए
प्रभु याहवे कहते हैं : जिस तरह जंगल के
पेड़ों में अँगूर की लकड़ी को मैंने आग का
ईंधन ठहरा दिया, उसी तरह मैंने यरूशलेम
के लोगों को भी ईंधन होने के लिए ठहरा
दिया है; 7 और मैं उनका नुकसान करने का
इरादा कर लूँगा। हालांकि वे आग से निकल
आए हैं, फिर भी आग उन्हें जला डालेगी।
जब मैं उनका नुकसान करने का निश्चय कर
लूँगा, तब तुम जान सकोगे, कि मैं याहवे हूँ।
8 इस तरह मैं देश को उजाड़ डालूँगा, क्योंकि
उन्होंने विश्वासघात किया है, यह प्रभु याहवे
के वचन हैं।

16 तब याहवे की ओर से मुझे यह
बताया गया; 2 "हे मनुष्य की
सन्तान, यरूशलेम पर उसके घिनौने कामों
को प्रगट करके कहो, 3 कि प्रभु याहवे
यरूशलेम से यह कहते हैं; तुम्हारी पैदाईश
और तुम्हारी शुरूआत कनान देश की है।
तुम्हारे पिता एमोरी और माता हित्ती थी।
4 जिस दिन तुम पैदा हुए उस दिन तुम्हारी
नाल न काटी गयी और न शुद्ध करने के
लिए पानी से नहलाया गया। न ही तुम पर
नमक मला गया और न ही कपड़े में लपेटा
गया। 5 इन सभी में कुछ भी करने के लिए
किसी ने तुम पर करूणा न दिखाई, वरन,
तुम्हारे जन्म के दिन ही में तुम्हें घिनौनी वस्तु
समझकर खुले मैदान में फेंक दिया गया।
6 जब मैं तुम्हारे पास से निकला, तुम्हें खून
में छटपटाते देखा, जबकि तुम खून में ही
थी, मैंने तुमसे कहा, 'जिन्दा रहो।' 7 तुमको
मैंने खेत के पौधों की तरह बढ़ाया था। तुम
फल-फूलकर ऊँची हो गई और सबसे बढ़िया
गहना बन गई। तुम्हारी छातियाँ खूबसूरत हो
गईं और बाल बढ़ गए। लेकिन तुम नंगी थी।
8 तब मैं तुम्हारे पास से होकर गुज़रा और तुम
पर निगाह डाली, तो जाना कि प्यार करने
लायक तुम्हारी उम्र हो चुकी है। इसलिए
मैंने अपना बागा तुम्हारी देह पर डाल दिया।
उससे तुम्हारा नंगापन ढक गया। मैंने तुमसे
शपथ खाकर वाचा बांधी और अपना लिया
यह प्रभु याहवे का कहना है। 9 तब मैंने
तुम्हें पानी से नहलाया, खून साफ़ किया
और देह पर तेल मला। 10 मैंने तुम्हें बूटेदार
कपड़े भी पहनाए, तथा सूइसों की खाल की
बनी जूतियाँ पहनाई, मैंने तुम्हें महीन मलमल
में लपेटा था और रेशमी कपड़ा उढ़ाया
था। 11 मैंने गहनों से तुम्हें सजाया, हाथों में
चूड़ियाँ और गले में हार पहनाया, 12 तुम्हारी
नाक में नथ, कानों में बालियाँ पहनाई, तथा
तुम्हारे सिर पर खूबसूरत ताज रखा। 13 इस
तरह तुम सोने-चाँदी, महीन मलमल, रेशम
और बूटेदार कपड़ों से सजाई गई। तुम्हारा
खाना मैदा, शहद और तेल था; इसलिए तुम
बहुत खूबसूरत वरन रानी होने के लायक
हो गई। 14 तब खूबसूरती के कारण तुम्हारी
शौहरत तमाम देशों में फैल गई, क्योंकि उस
भव्यता के कारण जो मैंने तुम्हें दी, तुम्हारी
सुन्दरता सिद्ध हो गई।" यह प्रभु याहवे की
वाणी है। 15 लेकिन तुमने अपनी सुन्दरता
पर भरोसा किया और अपने मशहूर होने के
कारण व्यभिचार किया और हर एक इच्छुक
पथिक के साथ कुकर्म किया। 16 और तुमने
अपने खूबसूरत कपड़े लेकर अपने लिए

रंग-बिरंगे ऊँचे स्थान बना लिए और वहाँ
ऐसी वेश्यावृत्ति की जैसी न कभी हुई और
न होनी चाहिए। 17 और तुमने मेरे दिए हुए
सोने चाँदी के बने अपने सुन्दर गहने भी
लेकर उनसे अपने लिए पुरुषों की मूर्तियाँ
बनाईं कि उनके साथ व्यभिचार करे। 18 तब
तुमने अपने बेल बूटेदार कपड़े लेकर उनको
ढांप दिया और मेरा तेल और धूप उनके
सामने चढ़ाया। 19 मेरी रोटी जो मैंने दी थी,
मैदा, तेल और शहद जो मैं खिलाता था, उसे
लेकर तुमने उनके सामने सुखदायक सुगन्ध
करके चढ़ाया; ऐसा ही हुआ है, प्रभु याहवे
का यह वचन है। 20 इसके अलावा तुमने
अपने बेटे-बेटियों को लेकर, जिन्हें तुमने मेरे
लिए पैदा किया, खा जाने के लिए मूर्तियों
के सामने कुर्बान कर दिया। क्या तुम इस
व्यभिचार को हल्की-फुलकी बात समझती
हो? 21 तुमने मेरे बच्चों को मार डाला है और
उन्हें मूर्तियों के सामने आग में होमबलि किया
है। 22 और अपने सभी घिनौने कामों और
व्यभिचार के अलावा तुमने अपनी जवानी
के दिनों को याद न किया, जब तुम बिना
वस्त्रों के और नंगी अपने खून में छटपटा
रही थी। 23 "तब तुम्हारी सारी कुटिलता के
बाद क्या हुआ? प्रभु याहवे कहते हैं, हाय
तुम पर कि, 24 तमने हर एक चौराहे में अपने
लिए मन्दिर और वेदी बनाई। 25 हर एक
गली के सिरे पर तुमने अपने लिए ऊँचा
स्थान बनवाया और अपनी खूबसूरती को
घिनौना कर डाला और अपने व्यभिचार को
बढ़ाने के लिए हर एक राहगीर के सामने
अपने पैर फैलाए। 26 तुमने अपने कामुक
मिस्री पड़ोसियों के साथ भी व्यभिचार किया
और मुझे गुस्सा दिलाने के लिए अपनी काम
वासना को बढ़ाया। 27 इसलिए अब देखो,
मैंने अपना हाथ तुम्हारे खिलाफ़ बढ़ाया है
और तुम्हारी रसद को कम कर डाला है।
मैंने तुम्हें उन पलिश्ती महिलाओं की इच्छा
पर छोड़ दिया है, जो तुमसे नफ़रत करती
हैं और तुम्हारी लम्पटता से शर्माती हैं।
28 तुमने असीरियायों से भी व्यभिचार किया,
क्योंकि तुम्हारी प्यास शान्त न हुई, हां उनसे
व्यभिचार करके भी तुम्हारी प्यास खतम न
हुई। 29 तुमने अपना व्यभिचार कसदियों के
देश तक बढ़ाया, लेकिन फिर प्यासी रह गई।
30 प्रभु याहवे कहते हैं : तुम्हारा मन कितना
चंचल है कि बेशर्म वेश्या की तरह यह सब
करती रहती हो। 31 हर गली के सिरे पर वेदी
और हर चौक में ऊँचा स्थान बनाकर तुमने
कमाई को बेकार समझा है, इसलिए, तुम
वेश्या भी न रही। 32 हे व्यभिचारिणी पत्नी,
तुम अपने पति को छोड़ दूसरे आदमियों
के साथ यौन सम्बन्ध रखती हो। 33 आदमी
तो सभी वेश्याओं को ईनाम देते हैं, लेकिन
तुम अपने प्यार करने वालों को आकर्षित
करने के लिए खुद ईनाम देती हो, ताकि वे
अनैतिक यौन सम्बन्ध के लिए तुम्हारे पास
आएँ। 34 इसलिए तुम्हारी वेश्यावृत्ति और
दूसरी महिलाओं की वेश्यावृत्ति में अन्तर है।
तुम्हारी वेश्यावृत्ति की तरह और कोई नहीं
करता, क्योंकि तुम खुद पैसा देती हो, जबकि
तुम्हें कोई पैसा नहीं देता। इसलिए तुम अलग
ही हो। 35 इसलिए हे व्यभिचारिणी, अब
सुनो, 36 कि प्रभु क्या कहते हैं : तुमने अपने
सभी चाहने वालों और सारी घिनौनी मूर्तियों
के साथ व्यभिचार करके तथा देवता को
अपने बेटों का खून देकर अपनी बेशर्मी
दिखा दी है और वस्त्रहीन हुई; 37 इसलिए
अब देखो, मैं तुम्हारे उन सभी प्रेमियों को,
जिनके साथ तुमने भोग-विलास किया, उन्हें
एक जगह पर लाऊँगा, हाँ जिनसे तुमने प्रेम
किया और जिनसे नफ़रत की, उन सभी को

मैं सभी दिशाओं से इकट्ठा करूँगा, और
तुम्हें नंगा कर डालूँगा, ताकि वे सभी इसे
देखें। 38 तुम्हारा इन्साफ मैं वैसा ही करूँगा
जैसा व्यभिचारिणी या हत्यारी महिलाओं
का इन्साफ किया जाता है। मैं तुम्हें गुस्से
और जलन से सज़ा दूँगा। 39 मैं तुम्हें तुम्हारे
चाहने वालों के सुपुर्द के दूँगा। वे तुम्हारी
वेदियों को ढा देंगे। तुम्हारे कपड़े उतार
डालेंगे, ऊँचे स्थानों को गिरा देंगे और
गहने छीन लेंगे। 40 वे तुम्हारे विरूद्ध भीड़
को भड़काएँगे, पत्थरवाह करके तलवार से
टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे। 41 तुम्हारे घरों में
आग लगाकर भस्म कर डालेंगे। बहुत सी
महिलाओं के सामने तुम्हें सज़ा देंगे। तब
मैं तुम्हें वेश्यावृत्ति करने से रोकूँगा और
तुम व्यभिचार की कीमत चुकाती न रहोगी।
42 इस तरह मैं अपना गुस्सा शान्त करूँगा
और मेरी जलजलाहट तुमसे दूर हो जाएगी।
तब मैं खामोश हो जाऊँगा और मेरा गुस्सा
बना न रहेगा। 43 क्योंकि तुमने अपनी जवानी
के समय को याद न रखा, लेकिन इन सब
गलत बातों से मेरे गुस्से को भड़काया है,
इसलिए देखो, तुम्हारे चरित्र को तुम्हारे ही
सिर पर लौटा दूँगा, जिससे तुम अपने तमाम
घिनौने कामों से ज़्यादा और कोई बुरा काम
न करो। यह प्रभु याहवे कहते हैं। 44 देखो,
जो लोग कहावत का उपयोग करते हैं, वे
कहेंगे, 'जैसी माँ, वैसी बेटी।' 45 तुम अपनी
माँ की बेटी हो जो अपने पति और बच्चों से
नफरत करती थी। तुम्हारी माँ हित्ती और पिता
एमोरी था। 46 तुम्हारी बड़ी बहन सामरिया
है, जो तुम्हारे उत्तर में अपनी बेटियों के साथ
रहती है। तुम्हारी छोटी बहन सदोम है जो
दक्षिण में अपनी बेटियों के साथ रहती है।
47 लेकिन तुम न ही उनके रास्ते पर चली,
और घिनौने काम किए, लेकिन इनको बहुत
छोटी बात जानकर अपने सारे व्यवहार में
उनसे ज़्यादा गलत किया। 48 प्रभु कहते हैं,
मेरे जीवन की शपथ, तुम्हारी बहन सदोम
की बुराई यह थी, कि उसकी बेटियों ने वैसा
नहीं किया, जैसा तुमने और तुम्हारी बेटियों
ने किया। 49 देखो, तुम्हारी बहन सदोम का
अधर्म यह था, कि वह अपनी बेटियों के साथ
अहंकार, पेटू और सुखविलास को चाहने
वाली थी। उसने गरीबों के ऊपर नज़र तक
नहीं डाली। 50 वे घमण्ड से भरी थी और
उन्होंने मेरे सामने घिनौने काम किए, इसलिए
मैंने उन्हें निकाल दिया। 51 इसके अलावा
सामरिया ने तुम्हारे गुनाहों के आधे गुनाह
भी न किए, उस तरह जितने घिनौने काम
तुमने किए, उनके सामने तुम्हारी बहने धर्मी
दिखाई देती हैं। 52 इसलिए अपनी शर्म को
भी सहा, तुमने न्याय को अपनी बहनों के
पक्ष में कर दिया। तुम्हारे अपराधों के कारण
जिसमें तुमने अधिक घिनौना जीवन जिया,
वे तुम्हारे से कम दोषी हैं। हाँ तुम शर्मिन्दा
भी हो और अपनी निन्दा सहो, क्योंकि
तुमने अपनी बहनों को कम दोषी ठहराया
है। 53 फिर भी मैं उनको गुलामी से वापस
लाऊँगा, अर्थात सदोम और उसकी बेटियों
को तथा सामरिया और उसकी बेटियों को
और उनके साथ तुम्हारे गुलामों को भी
गुलामी से लौटा लाऊँगा। 54 जिससे कि तुम
अपनी बेइज्ज़ती सहती रहो और जो कुछ
तुमने किया है उसके कारण शर्मिन्दा होती
रहो, क्योंकि तुमने उनके लिए शान्ति का
कारण ठहरी हो; 55 तथा तुम्हारी बहनें, सदोम
और सामरिया अपनी-अपनी बेटियों के साथ
अपनी पहली हालत को पहुँचेगी और तुम
भी अपनी बेटियों के साथ अपनी पहली दशा
में पहुँचोगी। 56 तुम्हारे गौरव के वक्त अर्थात
तुम्हारी दुष्टता के प्रकट होने से पहले जैसे

तुम्हारी बहन सदोम का नाम तुम्हारे मुँह से
कभी नहीं सुना गया।, 57 वैसे ही अब एदोम
की बेटियाँ और उसकी सभी पड़ोसिनें तथा
पलिश्तियों की बेटियाँ - वे सभी जो तुम्हारे
आस-पास हैं, तुम्हें तुच्छ जानती हैं। 58 तुम
अपने अनुचित और घिनौने कामों की सज़ा
भोग रही हो, यह प्रभु कहते हैं। 59 प्रभु याहवे
कहते हैं, "जैसा तुमने किया है, वैसा ही मैं भी
तुम्हारे साथ करूँगा, क्योंकि वाचा तोड़कर
तुमने जैसा किया है, वैसा ही मैं भी तुम्हारे
साथ करूँगा ,क्योंकि तुमने वाचा तोड़कर
शपथ को बेकार समझा है। 60 फिर भी मैं
तुम्हारी जवानी के समय की अपनी वाचा
को याद करूँगा और तुम्हारे साथ हमेशा
की वाचा बान्धूँगा। 61 जब तुम अपनी दोनों
बहनों, अर्थात छोटी और बड़ी बहन को
स्वीकार करेगी तब अपने चरित्र को याद
करके शर्मिन्दा होगी। मैं तुम्हें तुम्हारी बेटियों
के रूप में दूँगा। लेकिन तुम्हारी वाचा के
कारण नहीं। 62 इस प्रकार मैं तुम्हारे साथ
अपनी वाचा दृढ़ करूँगा, तब तुम जान लोगी
कि मैं याहवे हूँ। 63 जिससे तुम याद करके
शर्मिन्दा हो और निन्दा के कारण कभी कुछ
न बोलो। यह सब तभी होगा, जब मैं वह सब
जो तुमने किया है,माफ कर दूँगा। "

17 तब याहवे का यह संदेश मुझे मिला,
2 "हे मनुष्य की सन्तान, इस्राएल
के घराने से कहो, प्रभु, याहवे यों कहते
हैं: 3 एक बड़ा उकाब था। उसके बड़े डैने,
लम्बे पर और रंग- बिरंगे घने पंख थे। उसने
लेबनोन जाकर उसने देवदार की फुनगी को
नोच लिया। 4 वह उस फुनगी की सबसे ऊपर
की पतली टहनियों को तोड़कर व्यापारियों
के देश में ले गया। उसने उन्हें लेन-देन करने
वालों के नगर में रोप दिया। 5 उसने देश
से कुछ बीज मोल ले जाकर अच्छी ज़मीन
में बोया। वहाँ बहुत पानी था। उसने उसे
मजनू पेड़ की तरह लगाया। 6 उसमें से अंकुर
फूटा और वह नीचे फैलानेवाली दाखलता
बन गई। उसकी टहनियाँ उसी की ओर झुक
गई, लेकिन जड़ उसके नीचे ही रही। तब
उस दाखलता में कोपलें और डालियाँ फूट
गईं। 7 एक दूसरा उकाब था, जिसके बड़े डैने
और घने पंख थे। और देखो, यह दाखलता
अपनी क्यारी से जहाँ वह रोपी गई थी उसकी
ओर अपनी जड़ फैलाते और डालियाँ झुकाने
लगी कि वह उसे सीचें। 8 वह तो उपजाऊ
ज़मीन में बहुत पानी के पास इसलिए लगाई
गई, कि उसमें डालियाँ निकलें, फल लगें
और वह एक बढ़िया दाखलता बने। 9 अब
तुम कहो, कि प्रभु का कहना यह है : क्या
वह बढ़ती जाएगी? क्या वह उसको जड़ से
निकाल न फेंकेगा और फलरहित न करेगा,
कि वह सूख जाए और कोपलें मुर्झा जाएँ,
जिससे उसको उखाड़ने में न तो बड़ी ताकत
और न ज़्यादा लोगों की ज़रूरत पड़े। 10 देखो
वह रोपने पर फिर से क्या बढ़ेगी नहीं? जब
पुरवाई चले, तो क्यारी में बिल्कुल सूख न
जाएगी।" 11 फिर याहवे का संदेश मुझे मिला
: 12 उस बलवई घराने से कहो : क्या तुम्हें
मालूम नहीं कि इन बातों का मतलब क्या है?
उससे कहो कि बेबिलोन का राजा यरूशलेम
आकर उसके राजा और प्रधानों को अपने
संग बेबिलोन ले गया। 13 उसने राजपरिवार
को एक व्यक्ति को लेकर उससे वाचा बान्धी
तथा उसे शपथ दिलाई। वह देश के बलवानों
को भी ले गया, 14 कि राज्य उसके अधिकार
में रहे और सिर न उठाए और वाचा का
पालन करता रहे, कि वह मज़बूत बना रहे।
15 लेकिन उसने उससे बलवा करके अपने
दूत मिस्र को भेजे कि घोड़े और बहुत से
सैनिक जा सके। क्या वह कामयाब होगा?

क्या ऐसा करने वाला बच सकेगा? क्या
वह सचमुच वाचा भंग करके बच सकेगा?,
16 प्रभु याहवे का कहना है," मेरे जीवन की
शपथ जिस राजा ने उसे तख्त पर बैठाया,
और जिसकी शपथ को उसने तुच्छ समझा,
तथा जिसकी वाचा को उसने भंग किया,
निश्चत उसी के देश अर्थात बेबिलोन में ही
वह बर्बाद हो जाएगा। 17 जब युद्ध में बहुत
से प्राणियों को नाश करने के लिए टीले और
घेराबन्दी की दीवारें बनाईं जाएँ, तो फिरौन
भी अपनी बड़ी फौज और अनगिनत सैनिकों
के द्वारा उसकी मदद न कर पाएगा। 18 उसने
वाचा तोड़ने के द्वारा शपथ का तिरस्कार
किया है और देखो, वायदा करने के बावजूद
उसने यह सब किया है, इसलिए वह बचेगा
नहीं।": 19 इसलिए प्रभु याहवे कहते हैं, "मेरे
जीवन की सौगन्ध, मेरी जिस शपथ को उसने
तुच्छ जाना है और मेरी जिस वाचा को तोड़ा
है, उनको मैं उसी के सिर पर मढ़ दूँगा।
20 मैं अपना जाल उस पर फैलाऊँगा और मेरे
चंगुल में फंस जाएगा। तब मैं उसे बेबिलोन ले
आऊँगा और विश्वासघात का जो काम उसने
मेरे खिलाफ़ किया है, वहाँ उसका न्याय
करूँगा। 21 उसकी पूरी सेना के सभी बलवान
लोग तलवार से मारे जाएँगे। बाकी बचे लोग
चारों ओर तितर-बितर किए जाएँगे। तब तुम
जान लोगे कि मुझ याहवे ने ऐसा कहा है।"
22 प्रभु याहवे कहते हैं, "मैं भी देवदार की
ऊँची फुनगी से एक कोपल लूँगा और उसे
रोपूँगा। मैं उसकी सबसे ऊँची टहनियों में
से एक मुलायम टहनी लेकर उसे बहुत ऊँचे
पहाड़ पर लगाऊँगा। 23 मैं उसे इस्त्राएल के
ऊँचे पहाड़ पर रोपूँगा, जिससे उसमें टहनियाँ
फूट निकलें और फल लगें, तथा वह बड़ा
देवदार बन जाए। उस में हर तरह के पक्षी
घोंसला बनाकर उसकी डालियों की छाया में
घोंसला बनाएँगे। 24 तब मैदान के सभी पेड़ों
को मालूम हो जाएगा, कि मैं याहवे हूँ। मैं ही
ऊँचे पेड़ को नीचा और नीचे को ऊँचा करता
हूँ। हरे पेड़ को सुखा देता हूँ और सूखे पेड़
को हरा-भरा कर देता हूँ। मैं याहवे हूँः मैंने
कहा है और मैं ही पूरी करूँगा।"

18 फिर याहवे का यह वचन मुझे मिला,
2 "इस्त्राएल देश के बारे में तुम
यह कहावत क्यों कहते हो, खट्टे अंगूर तो
बापदादों ने खाए, लेकिन उनके बेटे-बेटियों
के दाँत खट्टे हो गए। 3 प्रभु याहवे कहते हैं
: मेरे जीवन की शपथ, तुम यह कहावत
इस्त्राएल में फिर कभी न कह सकोगे।
4 देखो, सभी प्राण मेरे हैं, चाहे पिता का हो
या बेटे का, दोनों मेरे ही है। जो कोई अपराध
करेगा, वही मरेगा। 5 लेकिन यदि इन्सान
धर्मी है और ईमानदारी सच्चाई से चलता है,
6 जो पहाड़ के पूजा के स्थानों में नहीं खाता,
न इस्त्राएल के घराने की मूर्तियों की ओर
निगाह करता है, न पड़ोसी की पत्नी से
व्यभिचार करता, न ऋतुमती महिला के पास
जाता है। 7 जो किसी पर अन्धेर नहीं करता,
लेकिन कर्जदार को उसका बन्धक लौटा
देता, लूट-पाट नहीं करता, लेकिन भूखे को
अपनी रोटी देता और नंगे को कपड़े पहनाता,
8 ब्याज पर कर्ज नहीं देता और न सूदखोरी
करता, अपने हाथ दुष्टता से रोकता और
मनुष्यों में सच्चा इन्साफ करता, 9 मेरे विधान
का पालन करता और मेरे रास्ते (विधियों)
पर सच्चाई से चलता है ऐसा इन्सान धर्मी है,
वह ज़रूर ज़िन्दा रहेगा।", यह प्रभु याहवे
कहते हैं। 10,11 तब चाहे उसने खुद इनमें से
कोई काम न किया हो, यदि उसकी एक बेटा
निर्दयी और खूनी हो। यदि वह पहाड़ के
मन्दिरों में खाता हो, तथा अपने पड़ोसी की
पत्नी के साथ अनुचित यौन सम्बन्ध करता

हो, 12 गरीबों पर अन्धेर करता और लूट-पाट
करता हो, बन्धक वापस नहीं करता हो,
मूर्तियों को आदर देता हो और घिनौना काम
करता हो, 13 ब्याज पर कर्ज देता हो और
सूदखोरी करता हो, तो क्या वह ज़िन्दा
रहेगा? बिल्कुल नहीं। 14 फिर देखो, यदि
उसका एक ऐसा बेटा है, जिसने अपने पिता
के सभी गुनाहों को देखा है और देखकर भी
उनकी तरह नहीं करता है, 15 अर्थात पहाड़
पर के पूजा-स्थलों में नहीं खाता, न इस्त्राएल
के घराने की मूर्तियों की ओर निगाह करता
है, न अपने पड़ोसी की पत्नी को भ्रष्ट करता!
16 न किसी पर अन्धेर करता, न बन्धक
रखता, न चोरी करता, परंतु भूखे को अपनी
रोटी देता और जिसके पास पहनने को नहीं
है, कपड़े देता है। 17 गरीब के नुकसान करने
से हाथ रोकता, ब्याज नहीं लेता, न सूदखोरी
करता, लेकिन मेरी बातों को मानता और मेरे
कहने के अनुसार जीता है। उसे अपने पिता
की बुराई का नतीजा नहीं भुगतना पड़ेगा,
वह जीवित रहेगा। 18 लेकिन उसका पिता
जिसने अन्धेर किया, अपने भाई का हक्क
मारा और अपने लोगों के बीच अनुचित काम
किया, देखो, वह तो अपने अपराध के कारण
मर जाएगा। 19 फिर भी तुम कहते हो कि
बेटा अपने पिता के अधर्म की सजा क्यों
न पाए? जबकि बेटे ने इन्साफ और सच्चाई
की ज़िन्दगी जी है। और उसने मेरे कहने के
अनुसार किया है, वह निश्चत जीवित रहेगा।
जो अनुचित करेगा, वही भुगतेगा। न तो
पुत्र पिता के और न पिता पुत्र के कुकर्मों
की सज़ा भुगतेगा। 20 धर्मी को अपनी ही
धार्मिकता का और दुष्ट को उसकी दुष्टता
का परिणाम भुगतना पड़ेगा। 21 लेकिन यदि
दुष्ट अपने किए हुए सभी अपराधों से मुड़कर
मेरे बताए मार्ग पर चले तथा इन्साफ़और
ईमानदारी से चले, तो वह जिएगा और मरेगा
नहीं। 22 उसके किए सभी अपराध उसके
खिलाफ़ याद नहीं किए जाएँगे। इसलिए कि
वह ईमानदारी से जिया, वह जीवित रहेगा।
23 प्रभु याहवे का यह कहना है, क्या मैं दुष्ट
की मौत से खुश होता हूँ? क्या इसी से
नहीं, कि वह अपने रास्ते से फिरकर जिन्दा
रहे। 24 लेकिन जब धर्मी अपनी धार्मिकता
से फिरकर बुराई करे तथा दुष्ट की तरह
सब घिनौने काम करे तो क्या वह जीवित
रहेगा? उसके सभी अच्छे काम जो उसने
किए वे उसके किए गए विश्वासघात और
अपराध के कारण याद नहीं किए जाएँगे,
लेकिन उनके कारण मरेगा। 25 फिर भी तुम
कहते हो, कि प्रभु का बर्ताव सही नहीं।
इसलिए इस्त्राएल के घराने अब सुनो। क्या
मेरे नियम-आज्ञाएँ उचित नहीं है? 26 जब धर्मी
अपनी धार्मिकता को छोड़कर बुरा करने
लगे और उसके कारण मर जाए, तो जो दुष्टता
उसने की है, उसी के कारण वह मरेगा।
27 जब कोई दुष्ट अपने गलत चालचलन को
छोड़कर न्याय और धार्मिकता से चलने लगे,
तो उसकी जान बच जाएगी। 28 इसलिए कि
वह सोच-विचार कर किए हुए सब बुराई
से मुड़ गया। वह जिन्दा रहेगा, मरेगा नहीं।
29 लेकिन इस्त्राएल का घराना कहता है कि
प्रभु का व्यवहार उचित नहीं है। हे इस्त्राएल
के घराने, क्या मेरा बर्ताव अच्छा नहीं है?या
तुम्हारा ही बर्ताव अच्छा नहीं है? 30 प्रभु
याहवे कहते हैं : इसलिए हे इस्त्राएल के
घराने मैं तुम में से हर एक का इन्साफ उसके
आचरण के अनुसार ही करूँगा। मन बदलो,
अपने सभी गुनाहों को छोड़ दो, जिससे
अनुचित काम तुम्हारे ठोकर का कारण न
हों। 31 अपने किए हुए सभी अपराधों को दूर
हटाओ। अपने दिल और आत्मा को नया

बनाओ। हे इस्त्राएल के घराने, तुम क्यों
मरो? 32 जो मरता है, उसकी मौत से मुझे
खुशी नहीं होती है। इसलिए मन बदलो और
जीवित रहो", यह प्रभु याहवे का कहना है।
19 तुम इस्त्राएल के प्रधानों के बारे में
इस शोक गीत को सुनाओ, 2 और
कहो, "तुम्हारी माँ क्या थी? वह शेरों के
बीच शेरनी थी। जवान शेरों के बीच लेटकर
उसने अपने बच्चों का पालन-पोषण किया।
3 जब एक जवान शेर बन गया, वह शिकार
करना सीख गया। वह इन्सानों को भी फाड़
खाना सीख गया। 4 तब देश-देश के लोगों
को यह बात मालूम हुई। वह उनके गड्ढे
में फँस गया। आंकड़ों से फंसाकर वे उसे
मिस्र देश ले आए। 5 जब शेरनी ने देखा कि
इन्तज़ार करते-करते उसकी आशा टूट गई,
तब उसने अपने बच्चों में से एक और को
लेकर उसे जवान शेर बनाया। 6 वह शेरों
के बीच घूमने-फिरने लगा। वह जवान हो
गया। वह शिकार करना सीख गया, तथा
इन्सानों को भी फाड़ खाने लगा। 7 उसने
उनके मजबूत किलों को गिरा दिया और
नगरों को सूना कर डाला। पूरा देश उसके
गरजने से डर गया। 8 तब देश-देश के लोगों
ने चारों ओर के प्रदेशों से उस पर घात
लगाई। उन्होंने उस पर अपना जाल फैलाया,
और वह उनके गढ्ढे में फंस गया। 9 वे
उसे आंकड़ों से पिंजड़े में डालकर बेबिलोन
के राजा के पास ले आए। वे उसे जाल
में फंसाकर ले आए, जिससे उसकी गर्जन
इस्त्राएल के पहाड़ों पर फिर न सुनाई दे।
10 तुम्हारी माता पानी के किनारे लगाई गई
वह बगीचे की एक दाखलता की तरह थी,
जो पानी की भरपूरी के कारण फलों और
डालियों से लदी हुई थी। 11 उसकी डालियाँ
राजाओं के राजदण्ड बनाने लायक मजबूत
थीं। उसकी ऊँचाई बादलों से भी अधिक
थी, जिससे वह अपनी घनी डालियों सहित
ऊँची दिखाई देती थी। 12 लेकिन वह गुस्से
में उखाड़ डाली गई। वह ज़मीन पर फेंक दी
गई और पुरवाई ने उसके फलों को सुखा
दिया। उसकी मज़बूत डालियाँ काट डाली
गई और सूख गईं। उन्हें आग में जला दिया।
13 अब वह जंगल में सूखी ज़मीन पर लगाई
गई है। 14 उसकी एक शाखा में से आग फैली,
जिससे उसके फलों और टहनियों को भस्म
कर दिया। इसलिए अब राज्य करने के लिए
उसमें एक भी मज़बूत डाली अर्थात राजदण्ड
न रहा।" यह शोक गीत है और शोक गीत ही
बना रहेगा।
20 सातवें साल के पाँचवे महीने के
दसवें दिन, याहवे की इच्छा जानने
के लिए कुछ प्राचीन आकर मेरे सामने बैठ
गए। 2 तब प्रभु का यह संदेश मुझे मिला :
3 "हे मनुष्य की सन्तान इस्त्राएल के प्राचीनों
से बातें करो और उन्हें बतलाओ, कि प्रभु
याहवे कहते हैं, क्या तुम मेरी इच्छा जानने
आए हो? मेरे जीवन की सौगन्ध, तुम मेरी
इच्छा न जान सकोगे यह प्रभु कहते हैं। 4 हे
मनुष्य की सन्तान, क्या तुम उनका न्याय
न करोगे?उनके पूर्वजों के घिनौने कामों को
उन्हें बतलाओ। 5 उनसे कहो कि प्रभु याहवे
कहते हैं : जिस दिन मैंने इस्त्राएल को चुन
लिया और याकूब के वंशजों से वायदा किया
और मिस्र देश में अपने आपको उन पर
प्रकट किया और कहा कि मैं तुम्हारा परमेश्वर
याहवे हूँ, 6 उसी दिन मैंने यह भी प्रण किया
कि मैं तुम्हें मिस्र देश से निकालकर उस देश
में पहुँचाऊँगा, जो मैंने तुम्हारे लिए चुना है।
उसमें दूध और शहद बहता है और वह सभी
देशों का गौरव है। 7 और मैंने उनसे कहा,
जिन घिनौनी वस्तुओं पर तुम में से हर एक

की आँखें लगी हैं, उन्हें फेंक दो, और मिस्र
की मूर्तियों से अपने को अशुद्ध न करो, मैं ही
तुम्हारा परमेश्वर याहवे हूँ। 8 लेकिन उन्होंने
मेरे विरोध में बलवा किया और मेरी सुनने
से इन्कार किया। जिन घिनौनी वस्तुओं पर
उनकी आँखें लगी थीं, उनको उन्होंने दूर
नहीं फेंका न ही मिस्र की मूर्तियों को त्यागा।
तब मैंने कहा कि मैं उन पर अपने गुस्से
को उण्डेलूँगा और मेरी जलजलाहट पूरे मिस्र
देश पर आएगी। 9 लेकिन मैंने अपने नाम की
खातिर ऐसा किया है, जिससे मेरा नाम उन
देशों की दृष्टि में जिनके बीच इस्त्राएली रहते
थे अर्थात जिनके देखते मैंने उन्हें मिस्र देश से
निकालने के द्वारा अपने आपको प्रकट किया
था अपवित्र न ठहरे। 10 इसलिए मैं उन्हें मिस्र
देश से निकालकर जंगल में ले आया। 11 वहाँ
मैंने अपनी विधियाँ उन्हें दी और अपने नियम
सिखाए, जिनको यदि मनुष्य माने, तो जीवित
रहेगा। 12 मैंने उनके लिए सब्त भी ठहराए
जो मेरे और उनके बीच निशान ठहरे, जिससे
वे जान सके, कि याहवे उन्हें पवित्र करने
वाला हूँ। 13 परंतु इस्त्राएल ने जंगल में मेरे
विरोध में बलवा किया। उन्होंने मेरी विधियों
का पालन नहीं किया लेकिन उन्हें बेकार
जाना। उनका पालन यदि मनुष्य मेरी विधियों
का पालन यदि मनुष्य करे तो वह जीवित
रहेगा। इस तरह उन्होंने मेरे सब्त के दिनों की
अत्याधिक उपेक्षा कर उन्हें अपवित्र किया।
इसलिए मैंने उन्हें जंगल में उन पर अपना
क्रोध भड़काकर उन्हें बर्बाद कर डालने का
इरादा किया। 14 लेकिन ऐसा मैंने अपने नाम
के लिए किया है, जिससे मेरा नाम उस देशों
की दृष्टि में जिनके देखते मैं उनका निकाल
लाया था, अपवित्र न ठहरे। 15 जंगल में मैंने
उनसे यह प्रण भी किया था कि जो देश मैंने
तुम्हें दिया है और जिनमें दूध और शहद की
नदियाँ बहती है और जो सभी देशों का गौरव
है, उसमें मैं तुम्हें नहीं पहुँचाऊँगा। 16 क्योंकि
उन्होंने मेरे नियमों को नीचा समझा और मेरी
विधियों पर नहीं चले मेरे सब्त को भी उन्होंने
नहीं माना और उनका मन मूर्तियों में लगा
रहा। 17 फिर भी उन्हें मार डालने के बजाए
मेरी दयादृष्टि उन पर नहीं रही और मैंने जंगल
में उन सभी को नाश न कर डाला। 18 और
मैंने जंगल में उनके बाल-बच्चों से कहा, अपने
पूर्वजों की विधियों को न माना। न ही उनके
नियमों के पैरोकार बनो, न ही उनकी मूर्तियों
की पूजा करो। 19 मैं तुम्हारा परमेश्वर याहवे
हूँ, मेरी विधियों पर चलो और मेरे बताए
रास्ते को अपनाओ। 20 मेरे सब्त के दिनों को
मानो वे मेरे और तुम्हारे बीच निशान ठहरे,
जिस से तुम जान सको कि मैं तुम्हारा परमेश्वर
हूँ। 21 लेकिन उनके बच्चों - नाती पोतों ने
मुझसे बलवा किया। उन्होंने मेरे रास्ते को
छोड़ दिया। यदि कोई मेरे रास्ते को न छोड़े
तो वह जिन्दा रहेगा। उन लोगों ने मेरे सब्त
को अपवित्र किया। इसलिए मैंने जंगल में
उन पर अपना गुस्सा दिखाकर ठण्डी सांस
ली। 22 मैंने अपना हाथ खींच लिया और यह
मैंने अपने नाम की खातिर किया, जिससे
मेरा नाम उन देशों (जातियों) की दृष्टि में
जिनके देखते मैं उनको निकाल ले आया,
अपवित्र न ठहरें 23 फिर भी जंगल में मैंने
उनसे यह प्रतिज्ञा की कि मैं तुम्हें सब जगह
फैला दूँगा। 24 क्योंकि उन्होंने मेरी बातों को
न माना और मेरी बताई गई विधियों को
तोड़ा और मेरे को पवित्र न जाना। उनकी
निगाह उनके पूर्वजों की मूर्तियों पर टिकी
रही। 25 तब मैंने उन्हें ऐसी विधियाँ भी दीं, जो
अच्छी न थीं, और ऐसे नियम, जिनके द्वारा
वे जिन्दा न रह सके। 26 मैंने उन्हें उन्हीं की
भेटों के कारण अर्थात सब पहलौठों को आग

में होमबलि करने के कारण अशुद्ध ठहराया,
जिससे कि मैं उन्हें उजाड़ दूँ और वे जान
सकें, कि मैं याहवे हूँ। 27 इसलिए हे मनुष्य
की सन्तान, तुम इस्त्राएल के घराने से कहो,
कि प्रभु याहवे का कहना है : इस विषय
पर भी तुम्हारे पुरखाओं ने मुझसे विश्वासघात
करके मेरी बेइज्जती की। 28 जब मैं उन्हें
उस देश में ले आया, जिसे देने का वायदा
किया था, तब मैंने उनसे शपथ खायी थी
कि तब वे हर एक ऊँची पहाड़ी और हर
एक घने पेड़ को देखकर वही कुर्बानी चढ़ाने
लगे, वहीं खुशबूदार द्रव्य हवन करने लगे
और वही अपने अर्पण देने लगे। 29 तब मैंने
उनसे पूछा जिस ऊँची जगह पर तुम जाते
हो, वह क्या है? इसलिए उसका नाम आज
तक बामा कहलाता है। 30 इसलिए इस्त्राएल
के घराने से कहो कि प्रभु याहवे कहते हैं :
कया तुम भी अपने पूर्वजों की तरह अपने
आपको अशुद्ध करके उनकी घृणित चीज़ों
के साथ व्यभिचारिणी का सा बर्ताव करोगे?
31 जब तुम अपनी कुर्बानी चढ़ाते हो और
अपने बेटों को आग में होमबलि करते हो
तो तुम आज तक अपने आपको मूर्तियों से
अशुद्ध करते हों हे इस्त्राएल के घराने, क्या
तुम मुझसे पूछने पाओगे? 32 और तुम्हारे मन
में यह जो इच्छा होती है, कि हम देश-देश
और जाति-जाति के लोगों की तरह लकड़ी
और पत्थर की पूजा-पाठ करेंगे, तो वह पूरी
नहीं होगी। 33 प्रभु याहवे का कहना यह है
: मेरे जीवन की सौगन्ध ज़रूर ही मैं अपने
ताकतवर हाथ, अपनी बड़ी हुई बांह तथा
अपने भड़के हुए गुस्से से तुम पर राज्य
करूँगा। 34 और मैं अने शक्तिशाली हाथ,
अपनी बड़ी भुजा तथा अपने कड़के हुए
गुस्से के द्वारा तुम्हें जाति-जाति में से निकाल
ले आऊँगा। तुम-तुम जिन देशों में तितर-बितर
होकर रहते रहोगे, वहाँ से इकट्ठा करूँगा।
35 और मैंने तुम्हें देश-देश के लोगों को जंगल
में ले आऊँगा और वहाँ आमने-सामने तुमसे
मुकदमा लड़ूँगा। 36 जिस तरह से मैं मिस्र
देश के जंगल से तुम्हारे पूर्वजों से मुकद्मा
लड़ा, वैसे ही तुम्हारे साथ भी लड़ूँगा, यह
प्रभु याहवे कहते हैं। 37 मैं तुम्हें लाठी के
नीचे चलाऊँगा और तुम्हें वाचा के बन्धन
में बाधूँगा। 38 मैं तुम्हारे बीच में बलवा करने
वालों को और जो मेरे विरोध में गुनाह करते
हैं, उन्हें निकालकर तुम्हें शुद्ध करूँगा। मैं
उन्हें उसी देश से जिसमें वे परदेशी होकर
रहते हैं, निकाल लाऊँगा, परन्तु वे इस्त्राएल
देश में दाखिल न हो सकेंगे। इस तरह तुम
लोग जान जाओगे, कि मैं याहवे हूँ। 39 प्रभु
याहवे कहते हैं, हे इस्त्राएल के घराने, तुम
सभी अपनी मूर्ति की पूजा करो, लेकिन बाद
में निश्चय ही तुम मेरी सुनोगे और अपनी भेटों
और अपनी मूर्तियों के द्वारा मेरे पवित्र नाम
को फिर अपवित्र न करोगे। 40 प्रभु याहवे का
संदेश यह है : मेरे पवित्र पहाड़ पर अर्थात
इस्त्राएल के पूरे घराने के सभी लोग इस
देश में मेरी उपासना करेंगे। वहाँ मैं उन्हें
स्वीकार करूँगा और वहीं मैं तुम्हारे दानों
और पवित्र वस्तुओं सहित तुम्हारी बढ़िया
से बढ़िया भेटों को लिया करूँगा। 41 जब मैं
तुम्हें देश-देश से निकाल लाऊँगा और उन
देशों से, जहाँ तुम बिखर चुके होगे, इकट्ठा
करूँगा, मैं तुम्हें सुख देने वाली खुशबूदार
भेंट की तरह ग्रहण करूँगा और दुनिया
के लोगों के बीच मैं अपने आपको पवित्र
ठहराऊँगा 42 और जब मैं तुम्हें इस्त्राएल देश
में जिसको देने का वायदा मैंने तुम्हारे पूर्वजों
से किया था, पहुँचाऊँगा, तब तुम्हें मालूम
पड़ेगा कि मैं याहवे हूँ। 43 तब तुम वहाँ
अपनी करतूतों और उनकामों की, जिनसे

तुमने अपने आपको अशुद्ध किया है, याद करोगे। तब तुम अपने सभी बुरे कामों के कारण अपनी दृष्टि में घिनौने ठहरोगे। 44 हे इस्त्राएल के घराने, जब मैं तुम्हारी बुराईयों और अनुचित कामों के अनुसार नहीं, लेकिन अपने नाम के लिए तुम्हारे साथ व्यवहार करूँगा, तब तुम जान पाओगे। 45 तब याहवे का यह संदेश मुझे मिला, 46 "हे मनुष्य की सन्तान, अपना चेहरा, तेमान की ओर करो, हाँ, दक्षिण के विरूद्ध बोलो और नेमेन के जंगली प्रदेश के विरूद्ध भविष्यद्वाणी करो। 47 तुम नेगेव के वन्य प्रदेश से कहो, याहवे की बातों को सुनो। प्रभु याहवे कहते हैं : देखो, मैं तुम में आग लगाने वाला हूँ। तुम्हारे जो सूखे और हरे भरे सभी पेड़ों को भस्म कर देगी, भड़की ज्वाला बुझ न पाएगी, लेकिन दक्षिण से उत्तर तक पूरी जगह को जला डालेगी। 48 तब सभी लोग देखेंगे कि मुझे याहवे ने वह आग लगाई है। वह बुझेगी नहीं।" 49 तब मैंने कहा, "हाय, प्रभु याहवे। वे मेरे बारे में कह रहे हैं : 'क्या वह केवल दृष्टान्त कहने वाला ही नहीं है?"

21 प्रभु का संदेश मुझ मिला, 2 "हे मनुष्य की सन्तान (यहेजकेल), अपना चेहरा, यरूशलेम की ओर करो और पवित्र स्थानों के विरोध में बोलो और इस्त्राएल देश के खिलाफ़ भविष्यद्वाणी करो, 3 और इस्त्राएल देश से कहो, याहवे कहते हैं, "देखो, मैं तुम्हारे विरूद्ध हूँ , मैं म्यान से तलवार खीचूँगा और तुम में से सही जीवन जीने वालेऔर और सही जीवन न जीने वाले दोनों ही को काट डालूँगा, 4 इसलिए मैं तुम में से धर्मी और दुष्ट दोनों ही को काट दूँगा, और मेरी तलवार म्यान में से निकलकर दक्षिण से उत्तर तक सभी प्राणियों के विरूद्ध चलेगी। 5 इस तरह सभी जान सकेंगे कि मुझ याहवे ने अपनी तलवार म्यान में से निकाल ली है। वापस वह म्यान में न जाएगी। 6 लेकिन हे मनुष्य की सन्तान, तुम बड़े दुख के साथ उनके सामने दिल को पिघला देने वाली आह भरो, 7 और जब वे तुम से पूछें, कि तुम आहें क्यों भर रहे हो, तो जवाब देना, उस समाचार के कारण जो आने वाला है : सब निराश हो जाएँगे और सबके हाथ ढीले पड़ जाएँगे और सभी के घुटने कमज़ोर हो जाएँगे, देखो ऐसा होने वाला है, और ऐसा ही होगा, प्रभु याहवे की यह वाणी है। 8 फिर याहवे का यह वचन मुझे मिला, 9 हे मनुष्य की सन्तान, नबूवत करके कहो : याहवे कहते हैं कि देखो, तलवार, सान चढ़ाई हुई तलवार और चमकाई हुई तलवार। 10 वह मार डालने के लिए सान चढ़ाई गई है, बिजली की तरह कौंधने के लिए चमकाई गई है। तो क्या हम खुश हों, वह तो याहवे के बेटे का राजदण्ड है और सभी पेड़ों को बेकार जानने वाला है। 11 वह झलकाने के लिए इसलिए दी गई कि हाथ में ली जाए। वह इसलिए सानपर चढ़ाई और झलकाई गई कि मारने वालों के हाथ में दी जाए। 12 हे मनुष्य की सन्तान चिल्लाओ और विलाप करो, क्योंकि वह मेरी प्रजा पर चला चाहती है, वह इस्त्राएल के सभी प्रधानों पर चलना चाहती है। मेरी प्रजा के साथ वे भी तलवार के अधिकार में आ गए। इस कारण तुम अपनी छाती पीटो। 13 क्योंकि उसकी परख सचमुच हुई है और यदि उसे तुच्छ जानने वाला राजदण्ड भी नहीं रहेगा, तो क्या? यह प्रभु याहवे कहते हैं। 14 इसलिए हे मनुष्य की सन्तान, नबूवत करो और हाथ पर हाथ मारकर तलवार की शक्ति दुगना करो। वह तो जान लेने वाली तलवार है, जिससे कोठरियों का इन्सान भी नहीं बच सकता। 15 मैंने इस तलवार का

उपयोग इसलिए किया है, ताकि लोग हताश
हो जाएँ और वे ठोकर खाएँ। हाय, हाय!
वह तो बिजली की तरह बन गई और मारने
के लिए सान चढ़ाई गई है। 16 सिकुड़कर
दाहिनी ओर जाओ, फिर तैयार होकर बाई
ओर मुड़ो, जिधर भी तुम्हारा मुँह हो। 17 मैं
भी ताली बजाऊँगा और अपनी जलजलाहट
को ठण्डा करूँगा, यह मैं याहवे कह रहा
हूँ। 18 फिर प्रभु का संदेश मुझे फिर मिला,
19 हे मनुष्य की सन्तान, दो रास्ते तय कर लो
कि बाबुल के राजा की तलवार आए। दोनों
रास्ते एक ही देश से निकलें। फिर एक निशान
बनाओ, अर्थात नगर के रास्ते के सिर पर
एक निशान बनाओ। 20 एक रास्ता ठहराओ
कि तलवार अम्मोनियों के रब्बा नगर पर,
यहूदा देश के गढ़वाले नगर यरूशलेम पर
भी चले। 21 क्योंकि बाबुल का राजा तिर्मुहाने
अर्थात दोनों रास्तों के निकलने के स्थान
पर भविष्य बताने को खड़ा हुआ है, उसने
तीरों को हिला दिया है, और गृहदेवताओं से
सवाल किया है और कलेजे को भी देखा।
22 उसके दाहिने हाथ में यरूशलेम का नाम
है, कि वह उसकी ओर युद्ध के हथियार
लगाए और ज़ोर से चिल्लाकर घात करने का
आदेश दे और ललकारे, फाटकों की ओर
युद्ध के हथियार लगाए, दमदमा बान्धे और
कोट बनाए। 23 लेकिन लोग तो उस भावी
कहने को झूठ समझेंगे, लेकिन वह उनके
गलत काम की याद दिलाएगा ताकि उन्हें
पकड़ा जा सके पकड़ लेगा। 24 इसलिए प्रभु
याहवे कहते हैं, इसलिए कि तुम्हारा गलत
काम जिन्हें याद किया गया है, और तुम्हारे
गुनाह सबके सामने आ गए हैं, इसलिए उनसे
ही तुम पकड़े जाओगे। 25 हे ईस्राएल के दुष्ट
प्रधान, तुम्हारा दिन आ गया है : अधर्म
समाप्त होने वाला है। 26 तुम्हारा बारे में याहवे
कहते हैं, पगड़ी उतारो, ताज़ भी उतार डालो।
वह ज्यों का त्यों नहीं रहेगा। जो नीचा है,
उसे ऊँचा करो, जो ऊँचा है, उसे नीचा। 27 मैं
इसको उलट दूँगा और उलट-पुलट कर दूँगा।
हाँ जब तक उसका अधिकारी न आए, तब
तक वह उलटा रहेगा, तब मैं उसे दे दूँगा।
28 फिर हे मनुष्य की सन्तान, भविष्यद्वाणी
करके कहो कि प्रभु याहवे अम्मोनियों और
उनकी की हुई बदनामी के बारे में ऐसा कहता
है, तुम ऐसे कहो, खींची हुई तलवार है, वह
तलवार घात के लिए झलकाई हुई है कि नाश
करे और बिजली की तरह हो, 29 जब तक
कि वे तुम्हारे बारे में झूठे दर्शन पाते, और झूठे
भावी तुम को बताते हैं - कि तुम उन घात होने
वाले दुष्टों की गर्दनों पर पड़े जिनका दिन आ
गया, और जिनके अधर्म के अन्त का समय
आ चुका है। 30 उसको फिर से म्यान में रखो।
जिस जगह तुम्हें बनाया गया और जहाँ तुम
पैदा हुई, उसी में मैं तुम्हारा न्याय करूँगा।
31 और मैं तुम पर अपना गुस्सा भड़काऊँगा।
तुम पर अपनी जलजलाहट की आग फूँक
दूँगा। तुम्हें जानवर की तरह मनुष्य के सुपुर्द
कर दूँगा, जो बर्बाद करने में निपुण है। 32 तुम्हें
आग निगल जाएगी। तुम्हारा खून देश में बना
रहेगा। तुम्हें याद न किया जाएगा, क्योंकि
याहवे ही ने यह कहा है।

22 प्रभु का यह संदेश मुझे मिला, 2 "हे
मनुष्य की सन्तान, क्या तुम उस
हत्या करने वाले नगरों का इन्साफ न करोगे?
उसके किए हुए सभी घिनौने कामों को
उसे दिखाओ, 3 और कहो, परमेश्वर का यह
कहना है, हे नगर तुम अपने बीच में हत्या
करते हो, जिससे तुम्हारा समय आए और
अपना ही नुकसान करने और अशुद्ध होने
के लिए मूरतें बनाता है। 4 जो हत्या तुमने
की है, उस से तुम आरोपी बन चुके हो।

जो मूरतें तुमने बनाई है, उसके कारण तुम
अशुद्ध हो गई हो, तुमने अपने अंत के समय
को पास कर लिया है, और अपने पिछले
सालों तक पहुँच गई हो। इसलिए मैंने तुम्हें
देश देश के लोगों की ओर से बदनामी का
और सब देशों के ठट्ठे का कारण कर दिया
है। 5 हे बदनाम, हे हुल्लड़ से भरे हुए नगर,
जो पास और दूर हैं, वे सभी तुम्हें ठट्ठों में
उड़ाएँगे। 6 देखो, इस्त्राएल के मुखिया अपनी
ताकत के आधार पर तुम में हत्या करने वाले
हुए हैं। 7 तुम में माता-पिता तुच्छ जाने गए
हैं : तुम्हारे बीच परदेशी पर अन्धेर किया
गया, और अनाथ विधवा को पीसा गया है।
8 तुमने मेरी पवित्र वस्तुओं को बेकार समझा
और मेरे विश्राम दिनों को अपवित्र किया है।
9 तुम में लुच्चे लोग हत्या करने को उत्सुक हुए
और तुम्हारे लोगों ने पहाड़ों पर खाना खाया
और तुम्हारे बीच घोर अपराध किया गया
है। 10 तुम्हारे यहाँ पिता की देह को निर्वस्त्र
किया गया। तुम्हारे यहाँ ऋतुमती महिला से
यौन सम्बन्ध किया गया। 11 किसी ने तुम में
पड़ोसी की पत्नी के साथ कुकर्म किया गया।
किसी-किसी ने अपनी बहू के साथ भी यौन
सम्बन्ध किया। कुछ ने अपनी बहन यानि
कि अपने पिता की बेटी के साथ घिनौना
काम किया। 12 हत्या करने के लिए लोगों ने
घूस भी ली है। तुमने ब्याज पर पैसा दे-देकर
लोगों को पीसा है। इस तरह तुमने अन्याय
से फायदा उठाया है। मुझ को तुम भूल चुके
हो, यह प्रभु कह रहे हैं। 13 इसलिए देखो,
जो लाभ तुमने अन्याय से उठाया है और
हत्याएँ की हैं, उस से मैंने हाथ पर हाथ दे
मारा है। 14 इसलिए, जब मैं तुम्हारा न्याय
करूँगा, क्या उनमें तेरा हृदय मज़बूत और
तुम्हारे हाथ स्थिर रहेंगे। यह बात मैं याहवे
कह रहा हूँ और इसे पूरा भी करूँगा। 15 मैं
तुम्हारे लोगों को देश-देश में बिखरा दूँगा
और तुम्हारी अशुद्धता को तुममें से बर्बाद
करूँगा। 16 देश-देश के लोगों के देखते-देखते
अपनी ही निगाह में अपवित्र ठहरोगी, तब
जान सकोगी कि मैं याहवे हूँ। 17 फिर याहवे
का यह वचन मेरे पास पहुँचा। 18 हे मनुष्य
की सन्तान, इस्त्राएल का घराना, मेरी दृष्टि
में धातु का मैल हो चुका है, वे सभी भट्टी के
बीच के पीतल और रांगे और लोहे और शीशे
की तरह बन चुके हैं। वे चान्दी की गन्दगी
की तरह बन गए हैं। 19 इस कारण प्रभु याहवे
उनसे यह कहते हैं, इसलिए कि तुम सभी
धातु की मैल की तरह बन गए हो, मैं तुम्हें
यरूशलेम के अन्दर इकट्ठा करने वाला हूँ।
20 जिस तरह लोग चान्दी, पीतल, लोहा,
शीशा और रांगा इसलिए भट्टी के अन्दर
बटोरकर रखते हैं, कि उन्हें आग फूंककर
पिघला दें, वैसे ही मैं तुम्हें अपने गुस्से और
जलजलाहट से इकट्ठा करके, वहीं रखकर
पिघला डालूँगा। 21 वहीं मैं तुम्हें बटोरकर
अपने रोष की आग से फूँकूँगा, और तुम
उसके बीच पिघलाए जाओगे, 22 जैसे चान्दी
भट्टी के अन्दर पिघलाई जाती है, वैसे ही
तुम उनके बीच पिघलाए जाओगे, तब तुम्हें
पता चलेगा, कि जिसने अपनी जलजलाहट
भड़काई है, वह याहवे हैं। 23 फिर याहवे की
ओर से मुझे संदेश मिला, 24 हे मनुष्य की
सन्तान, उस देश से कहो, तुम ऐसे देश हो,
जो शुद्ध नहीं हुआ, और जलजलाहट के दिन
में तुम्हारे यहाँ बरसात नहीं हुई। 25 तुम्हारे
भविष्यद्वक्ताओं ने तुम में राजद्रोह की योजना
बनाई। उन्होंने गरजने वाले शेर की तरह
शिकार पकड़ा और प्राणियों का सफाया कर
डाला है। वे रखी हुई कीमत दौलत को
छीन लेते हैं और तुम्हारी बहुत सी महिलाओं
को विधवा कर डाला है। 26 उसके याजकों

(पुरोहितों) ने मेरे नियम-आज्ञाओं का मतलब
खींचतान कर लगाया है, और मेरी पवित्र
वस्तुओं को अपवित्र किया है, उन्होंने पवित्र
में कुछ अन्तर नहीं समझा और न औरों
को शुद्ध-अशुद्ध का अन्तर सिखाया है, और
वे मेरे विश्रामदिनों के बारे में बेफिक्र रहते
हैं, जिससे मैं उनके बीच अपवित्र ठहरता
हूँ। 27 उसके प्रधान हुंडारों की तरह अहेर
पकड़ने, और अन्याय से लाभ उठाने के
लिए हत्या करते हैं और प्राण घात करने को
उत्सुक रहते हैं। 28 और उसके भविष्यद्वक्ता
उनके लिए कच्ची लेसाई करते हैं, उनका
दर्शन पाना झूठ है; याहवे के बिना कुछ
कहे भी वे यह कहकर झूठा भविष्य बताते
हैं कि 'प्रभु याहवे यो कहते हैं।' 29 देश के
साधारण लोग भी अन्धेर करते और परायी
दौलत छीनते हैं, वे गरीब को पीसते और
न्याय की चिन्ता छोड़कर परदेशी पर अन्धेर
करते हैं। 30 और मैंने उनमें ऐसा मनुष्य ढूँढ़ना
चाहा जो बाड़े को सुधारे और देश के निमित्त
नाके में मेरे सामने ऐसा खड़ा हो कि मुझे
उसको नाश न करना पड़े, परंतु ऐसा कोई
नहीं मिला। 31 इस कारण मैंने उन पर अपना
गुस्सा भड़काया और अपनी जलजलाहट की
आग से उन्हें भस्म कर दिया है, मैंने उनकी
चाल उन्हीं के सिर पर लौटा दी है, परमेश्वर
याहवे की यह वाणी है।"

23 याहवे का वचन मेरे पास पहुँचा, 2 हे
मनुष्य की सन्तान, एक ही माँ की
दो बेटियाँ थी। 3 वे अपने बचपन ही में वेश्या
का काम मिस्र में करने लगीं। उनकी छातियाँ
कुंवारेपन में पहले वहीं मींजी गईं और उनका
मरदन भी हुआ। 4 उन लड़कियों में से बड़ी
का नाम ओहोला और उसकी बहिन का
नाम ओहोलीबा था। वे मेरी हो गई, उनके
बेटे-बेटियाँ हुईं। उनके नामों में से ओहोला,
शोमरोन और ओहोलीबा यरूशलेम है।
5 ओहोला जब मेरी थी, तब ही व्यभिचारिणी
होकर अपने दोस्तों पर आकर्षित होने लगी
जो उसके पड़ोसी असीरियी थे। 6 वे तो सब
के सब नीले कपड़े पहनने वाले मनभावने
जवान, अधिपति और प्रधान थे, और घोड़ों
पर सवार थे। 7 सो उसने उन्हीं के साथ
व्यभिचार किया, जो सब के साथ सबसे
उत्तम असीरियाई थे; और जिस किसी पर
वह मोहित हुई, उसी की मूरतों से वह
अशुद्ध हुई। 8 जो व्यभिचार उसने मिस्र में
सीखा था, उसको भी उसने न छोड़ा, क्योंकि
बचपन में मनुष्यों ने उसके साथ बुरा काम
किया, और उसकी छातियाँ मींजी, और तन
मन से उसके साथ व्यभिचार किया गया
था। 9 इसलिए मैंने उसको उन्हीं असीरियाई
दोस्तों के हाथ कर दिया, जिन पर वह
मोहित हुई थी। 10 उन लोगों ने उसको नंगा
किया; क्योंकि उसके बेटे-बेटियाँ छीनकर
उसको तलवार से मारा; इस तरह उनके
हाथ से सज़ा पाकर वह महिलाओं में मशहूर
हो गई। 11 उसकी बहन ओहोलीबा ने यह
देखा और मोहित होने पर व्यभिचार करने
में अपनी बहन से आगे बढ़ गई। 12 वह
अपने असीरियाई पड़ोसियों पर आकर्षित
होती थी, जो सब के सब बहुत खूबसूरत
कपड़े पहनने वाले और उनके घोड़ों के
सवार मनभावने, जवान अधिपति और दूसरे
तरह के प्रधान थे। 13 तब मैंने उसे भी अशुद्ध
देखा। दोनों ही बहनों का चालचलन एक सा
था। 14 लेकिन ओहोलीबा ज़्यादा व्यभिचार
करती गई। इसलिए जब उसने दीवार पर
सेंदूर से खींचे हुए ऐसे कसदी आदमियों की
तस्वीर देखी, 15 जो कमर में फेंटे बान्धे हुए,
सिर में छोर लटकती हुई रंगीली पगड़ियाँ
पहने हुए और सब के सब अपनी कसदी

मातृभूमि अर्थात बाबुल के लोगों के तौर
तरीकों पर प्रधानों का रूप धरे हुए थे। 16 तब
उन्हें देखते ही वह उन पर आकर्षित हुई
और उनके पास कसदियों के देश में दूत
भेजें 17 इसलिए बाबुल के लोग उसके पास
चारपाई पर आए और उसके साथ कुकर्म
करके उसे अशुद्ध कर डाला। अशुद्ध होने के
बाद उसका मन उनसे उचट गया। 18 तौभी
जब वह देह उघाड़ती और व्यभिचार करती
गई, तब मेरा मन जैसे उसकी बहन से उचट
गया था, वैसे ही उससे भी उचट गया।
19 इतना होने के बावजूद वह मिस्र देश के
अपने बचपन के दिन याद करके जब वेश्या
का काम करती थी ,उसमें बनी रही; 20 ऐसे
दोस्तों पर भी वह आकर्षित हुई, जिनका
मांस - गदहों का सा और वीर्य, घोड़ों का
सा था। 21 तुम इस तरह से अपने बचपन के
उस समय के महाअपराध को याद कराती
है, जब मिस्री लोग तुम्हारी छातियाँ दबाते
थे। 22 इसलिए, हे ओहोलीबा, परमेश्वर तुम
से यह कह रहे हैं, देखो, मैं तुम्हारे दोस्तों
को उभारकर जिनसे तुम्हारा मन हट गया
था, चारों ओर से तुम्हारे विरूद्ध ले आऊँगा।
23 अर्थात बाबुलियों और सभी कसदियों को,
और पकोद, शो और कोआ के लोगों को
और उनके साथ सभी असीरिया के लोगों
को ले आऊँगा, जो सब के सब घोड़ों पर
सवार मनभावने जवान अधिपति, और कई
तरह के प्रतिनिधि, प्रधान और नामी पुरुष हैं।
24 वे लोग हथियार, रथ, छकड़े और देश देश
के लोगों का दल लिए हुए, तुम पर हमला
करेंगे। वे ढाल और फरी और टोप धारण
किए हुए तुम्हारे खिलाफ़ चारों ओर पंक्ति
बान्धेंगे। मैं न्याय का काम उन्हीं के सुपुर्द
करूँगा। वे अपने कानून के मुताबिक तुम्हारा
न्याय करेंगे। 25 मैं तुम पर जलूँगा, जिससे
वे जलजलाहट के साथ तुम से व्यवहार
करेंगे। वे तुम्हारी नाक और तुम्हारे कान
काट लेंगे। तुम्हारा सब कुछ बचा जो बच
जाएगा, उसे तलवार से नाश किया जाएगा।
तुम्हारे बेटे-बेटियों को छीन कर ले जाएँगे,
बची हुई चीज़ों को आग से जला डालेंगे।
26 तुम्हारे कपड़े उतारेंगे और खूबसूरत गहने
लूट लेंगे। 27 इस तरह से मैं तेरे घोर अपराध
और वेश्यावृत्ति को जो मिस्र में सीखी थी,
उसे भी तुम से छुड़ाऊँगा। यहाँ तक कि फिर
तुम अपनी आँख उनकी ओर न लगाओगी
और न ही फिर मिस्र देश को याद करोगी।
28 क्योंकि प्रभु याहवे तुमसे कह रहे हैं: देखो,
मैं तुम्हें उनके हाथ सुपुर्द करूँगा, जिनसे
तुम दुश्मनी रखती हो, और जिन में अब
तुम्हारा मन नहीं लग रहा है। 29 वे तुम्हारे
साथ दुश्मनी का व्यवहार करेंगे। तुम्हारी
सारी कमाई को जब्त कर लेंगे और नंगा
करके छोड़ देंगे। तुम्हारे शरीर के उघाड़े
जाने से तुम्हारा व्यभिचार और घोर अपराध
दिख जाएगा। 30 तुम्हारे साथ ये काम इसलिए
किए जाएँगे, क्योंकि तुम गैरयहूदियों के पीछे
व्यभिचारणी के समान हो गई और उनकी
मूरतों को पूजने से अशुद्ध हो गई हो। 31 तुम
अपनी बहन के रास्ते पर चलती रही हो,
इसलिए मैं तुम्हारे हाथ में उसका सा कटोरा
दूँगा। 32 प्रभु का कहना है, अपनी बहन के
कटोरे में से तुम्हें पीना पड़ेगा। वह कटोरा
गहरा, और चौड़ा है। तुम्हारे ऊपर लोग
हँसेंगे, क्योंकि उस कटोरे में बहुत कुछ आ
जाता है। 33 तुम मतवालेपन और दुख से
छक जाओगी। तुम अपनी बहन शोमरोन
के कटोरे को अर्थात विस्मय और उजाड़
को पीकर छक जाओगी। 34 उसमें से तुम
बूंद- बूंद पिओगी, और उसके ठीकरों को
भी चबाओगी और अपनी छातियाँ जख्मी

करोगी; क्योंकि मैंने ही ऐसा कहा है। यह प्रभु
के वचन हैं। 35 इसलिए कि तुमने मुझे भुला
दिया है और अपना चेहरा मुझ से फेर लिया
है, इसलिए तुम खुद अपने महाअपराध और
व्यभिचार का बोझ उठाओ, यह परमेश्वर
याहवे का कथन है। 36 प्रभु ने मुझसे कहा,
'हे मनुष्य की सन्तान, क्या तुम ओहोला
और ओहोलीबा का न्याय करोगे? तो फिर
उनके घिनौने कामों की जानकारी उन्हें दो,
37 क्योंकि उन्होंने व्यभिचार किया है। उनके
हाथ खून से रंगे हैं। उन्होंने अपनी मूरतों
के साथ व्यभिचार किया है। उन्होंने अपने
बाल-बच्चों को जो मुझ से पैदा हुए थे, मूरतों
के आगे भस्म करने के लिए चढ़ाया है।
38 उनका बर्ताव ऐसा था, कि मेरे पवित्रस्थान
को उन्होंने अशुद्ध किया और विश्रामदिन
को तुच्छ जाना। 39 वे अपने बाल-बच्चों को
अपनी मूरतों के सामने कुर्बान करके उसी
दिन मेरा पवित्रस्थान अपवित्र करने उसमें
घुसीं। देखो, उन्होंने इस तरह का काम मेरे
भवन के अन्दर किया है। 40 उन्होंने दूर से
पुरुषों को बुलवाया और वे आ भी गए।
उनके लिए तुमने स्नान किया, आँखों मे
काजल लगाया, गहने पहनें; 41 सुन्दर पलंग
पर बैठी रहीं। तुम्हारे सामने एक मेज़ रखी
हुई थी, जिस पर तुमने मेरा धूप और मेरा
तेल रखा था। 42 तब उसके साथ निश्चिंत
लोगों की भीड़ का शोर सुनाई पड़ा और
उन साधारण लोगों के पास जंगल से बुलाए
हुए पियक्कड़ लोग भी थे। उन्होंने उन दोनों
बहनों के हाथों मे चूड़ियाँ पहनाई और उनके
सिरों पर खूबसूरत मुकुट रखे। 43 तब जो
व्यभिचार करते-करते बुढ़िया हो चुकी थी,
उसके बारे में बोल उठा, अब तो वे उसी के
साथ व्यभिचार करेंगे। 44 क्योंकि वे उसके
पास ऐसे गए, जैसे लोग वेश्या के पास
जाते हैं। वैसे ही वे ओहोला और ओहोलीबा
नाम महाअपराधिनी महिलाओं के पास जाते
हैं। 45 इसलिए धर्मी लोग व्यभिचारिणियों
और हत्यारों के लायक उसका न्याय करे;
क्योंकि वे व्यभिचारिणी हैं और उनके हाथों
में खून लगा है। 46 इस वजह से परमेश्वर
याहवे कहते हैं, मैं एक भीड़ से उन पर
हमला कराकर उन्हें ऐसा करूँगा कि वे
मारी-मारी फिरेंगी और लुटी जाएँगी। 47 और
उस भीड़ के लोग उनको पत्थरवाह करके
उन्हें अपनी तलवारों से काट डालेंगे। तब वे
उनके बेटे-बेटियों को मारकर उनके घरों को
भी फूँक देंगे। 48 इस तरह महाअपराध को मैं
देश से दूर करूँगा। तब सारी महिलाओं को
एक सीख मिलेगी और वे तुम्हारी सी बड़ी
बुराई करने से बच सकेंगे। 49 इस अपराध
का परिणाम तुम्हें ही भुगतना है। तुम अवश्य
अपनी मूरतों की पूजा के अपराधों का बोझ
उठाओगे। तब तुम जान सकोगे, कि मैं ही
परमेश्वर याहवे हूँ।

24 तब नए साल के दसवें महीने के
दसवें दिन को याहवे का यह संदेश
मुझे प्राप्त हुआ। 2 हे मनुष्य की सन्तान, आज
के दिन के बारे में लिख लो, क्योंकि इसी दिन
बाबुल के राजा ने यरूशलेम को घेरा था।
3 इस बलवई घराने से यह दृष्टान्त कहो, प्रभु
याहवे कहते हैं, "हण्डे को आग पर रखो,
उसमें पानी डालो, 4 तब उसमें जाँघ, कन्धा
और सब अच्छे-अच्छे टुकड़े बटोरकर रखो
और उसे बढ़िया से बढ़िया हड्डियों से भर दो।
5 झुण्ड में से सबसे अच्छे जानवर लेकर उन
हड्डियों को हण्डे के नीचे करो, और उनको
अच्छी तरह पकाओ ताकि अन्दर ही हड्डियों
भी पक जाएँ। 6 इसलिए प्रभु याहवे कहते
हैं, हाय, उस हत्यारी नगरी पर! हाय उस
हण्डे पर! जिसका मोर्चा उसमें बना है और

छूता नहीं, उसमें से टुकड़ा करके निकाल
लो, उस पर कोई चिट्ठी न डाले। 7 क्योंकि
उस नगरी में किया हुआ खून उस में है, उसने
उसे ज़मीन पर डालकर मिट्टी से नहीं ढका,
लेकिन नंगी चट्टान पर रख दिया। 8 इसलिए
मैंने भी उसका खून नंगी चट्टान पर रखा है
कि वह ढँक न सके और कि बदला लेने को
जलजलाहट भड़के।" 9 प्रभु याहवे कहते हैं,
"हाय, उस खूनी नगरी पर। मैं भी ढेर को
बड़ा करूँगा। 10 और ज़्यादा लकड़ी डालो,
आग तेज करो, मांस को अच्छे से पकाओ,
मसाला मिलाओ और हड्डियों को भी जला
दो। 11 तब हण्डे को छूछा करके अंगारों पर
रखो जिससे वह गर्म हो और उसका पीतल
जले और उसमें से मैल गले, और उसका जंक
बर्बाद हो जाए। 12 मैं उसके कारण मेहनत
करके थक गया, लेकिन उसका जंक छूटता
नहीं, उसका जंक आग से भी नहीं छूटता।
13 हे नगरी तुम्हारी अशुद्धता महाअपराध की
है। मैं तो तुम्हें शुद्ध करना चाहता था, परंतु
तुम शुद्ध नहीं हुई, इस कारण तब तक मैं
अपनी जलजलाहट तुम पर शान्त न कर
लूँ, तब तक तुम फिर शुद्ध न की जाओगी।
14 मैं याहवे कहता हूँ और ऐसा होगा भी। मैं
तुम्हें छोड़ूँगा नहीं, न ही तरस खाऊँगा, न ही
पछताऊँगा। तुम्हारे चरित्र और कामों ही के
अनुसार तुम्हारा इन्साफ किया जाएगा, यह
प्रभु याहवे कहते हैं। 15 प्रभु का यह संदेश भी
मुझे मिला है, 16 हे मनुष्य की सन्तान, देखो,
मैं तुम्हारी आँखों की प्रिय को मारकर तुम्हारे
पास से ले लेने पर हूँ, लेकिन तुम रोना-धोना
नहीं। 17 लम्बी सांसें ले लो, लेकिन कोई
उन्हें सुन न सके, जो मर चुके हैं, उनके
लिए मत रोना। तुम्हारे सिर पर पगड़ी रहे
और पाँवों में जूती रहे; अपने होठों को न
ढाँपना, न ही दुख के लायक खाना खाना।
18 तब मैंने सुबह लोगों से कहा, "क्या तुम
हमें बताओगे नहीं कि जो तुम कर रहे हो,
हमारे लिए इसका मतलब क्या है?" 19 तब
लोग मुझ से कहने लगे, क्या तुम हमें यह न
बताओगे कि यह जो तुम करते हो, इसका
हम सभी के लिए मतलब क्या है? 20 मैंने
जवाब में कहा, याहवे का यह वचन मुझे जो
मिला, वह यह है, 21 तुम इस्त्राएल के घराने
से कहो, प्रभु याहवे यों कहते हैं, देखो, मैं
अपने पवित्र स्थान को जिसके किला होने
पर तुम घमण्ड करते हो और जो तुम्हारी
आँखें चाहती हैं, और जिसको तुम्हारा मन
चाहता है, उसे मैं अपवित्र कर दूँगा, और
अपने जितने बेटे-बेटियों को तुम वहाँ छोड़
आए हो, वे तलवार से मारे जाएँगे। 22 और
जैसा मैंने किया है, वैसा ही तुम लोग करोगे,
तुम लोग अपने होठों को न ढ़ाँपोगे, न दुख के
लायक खाना खाओगे 23 तुम सिर पर पगड़ी
बान्धे और पाँवों में जूती पहने रहोगे, न ही
रोओगे, न छाती पीटोगे, लेकिन अपने अधर्म
के कामों में फँसे हुए गलते जाओगे और एक
दूसरे की ओर कराहते रहोगे। 24 इस तरह
यहेजकेल तुम्हारे लिए निशान ठहरेगा; जैसा
उसने किया, वैसा तुम भी करोगे। जब ऐसा
हो जाए, तब तुम्हें एहसास होगा, कि मैं याहवे
हूँ। 25 हे मनुष्य की सन्तान, क्या यह सही
नहीं, कि जिस दिन मैं उनका मज़बूत किला,
उनकी खूबसूरती और खुशी का कारण और
उनके बेटे-बेटियों जो उनकी सुन्दरता, उनकी
आँखों की खुशी और मन की चाह है, उनको
मैं उनसे ले लूँगा। 26 जो उस दिन भागकर
बचेगा, वह तुम्हारे पास आकर तुम्हें समाचार
सुनाएगा। 27 उसी दिन तुम्हारा मुँह खुलेगा,
और फिर तुम चुपचाप न रहोगे, लेकिन उस

शेष लोगों के साथ बात करोगे। इसलिए तुम
इन लोगों के लिए चिन्ह ठहरोगे और ये जान
सकेंगे कि मैं याहवे हूँ।
25 याहवे का यह संदेश मुझे मिला, 2 हे
मनुष्य की सन्तान, अम्मोनियों की
ओर चेहरा करके उनके बारे में नबूवत करो।
3 उससे कहो, "हे अम्मोनियों, परमेश्वर की
कही बातों पर कान लगाओ, वह यह, कि
जब मेरा पवित्रस्थान अपवित्र किया गया
था और इस्त्राएल देश उजड़ गया था और
यहूदा का घराना गुलामी में चला गया था,
कहा, 'अहा, अहा।' 4 इसलिए देखो, मैं तुम
को पूरबियों के वश में कर दूँगा। वे तुम्हारे
बीच अपनी छावनियाँ डालेंगे, और अपने
घर बनाएँगे। वे तुम्हारे फल खाएँगे, और
तुम्हारा दूध पीएँगे। 5 मैं रब्बा नगर को ऊँटों
के रहने और अम्मोनियों के देश को भेड़
बकरियों के बैठने की जगह कर दूँगा, तब
तुम्हें यह ज्ञात हो जाएगा कि मैं याहवे हूँ।
6 क्योंकि परमेश्वर याहवे यों कहते हैं, तुमने
इस्त्राएल के देश के कारण ताली बजाई
और नाचे, और अपने सारे मन के घमण्ड
से खुश हुए। 7 इस कारण देखो, मैंने अपना
हाथ तुम्हारे ऊपर बढ़ाया है, और तुम को
देश-देश की लूट कर दूँगा, और देश-देश के
लोगों में से तुम्हें मिटाऊँगा, और देश-देश
में से बर्बाद करूँगा। मैं तुम्हारा सत्यानाश
कर डालूँगा; तब तुम जान सकोगे, कि मैं
याहवे हूँ। 8 परमेश्वर याहवे कहते हैं, मोआब
और सेईर जो कहते हैं, देखो, यहूदा का
घराना और सभी देशों की तरह हो गया है।
9 इस कारण देखो, मोआब के देश के किनारे
के नगरों को बेत्याशीमोत, बालमोन, और
किर्यातैम, जो उस देश के शिरोमणि हैं, मैं
उनका रास्ता खोलकर, 10 उन्हें पूरबियों के
वश में ऐसा कर दूँगा कि वे अम्मोनियों पर
हमला करें; और मैं अम्मोनियों को यहाँ तक
उनके अधिकार में कर दूँगा कि देश-देश के
बीच उनकी याद न रहेगी। 11 और मैं मोआब
को भी सज़ा दूँगा। और वे जान सकेंगे कि
मैं याहवे हूँ। 12 परमेश्वर याहवे यों भी कहते
हैं, एदोम ने यहूदा के घराने से पलटा लिया,
और उनसे बदला लेकर बड़ी दोषी हो गया
है, 13 इस कारण परमेश्वर याहवे कहते हैं,"
मैं एदोम के देश के खिलाफ़ अपना हाथ
बढ़ाकर उसमें से मनुष्य और जानवर दोनों ही
को मार डालूँगा, और तेमान से लेकर ददान
तक उसको उजाड़ूँगा, वे लोग तलवार से
मारे जाएँगे। 14 और मैं अपनी प्रजा, इस्त्राएल
के द्वारा एदोम से अपना बदला लूँगा, और
वे उस देश में मेरे गुस्से और जलजलाहट
के अनुसार काम करेंगे। तब उन्हें एहसास
होगा कि मैं कैसे बदला लेता हूँ, यह प्रभु
का कहना है। 15 परमेश्वर याहवे यों कहते
हैं, क्योंकि पलिश्ती लोगों ने बदला लिया,
वरन अपने युग-युग की दुश्मनी के कारण
अपने घमण्ड से बदला लिया, कि नाश
करें। 16 इसलिए परमेश्वर याहवे यों कहते हैं,
देखो, मैं पलिश्तियों के विरूद्ध अपना हाथ
बढ़ाऊँगा और करेतियों को मिटा डालूँगा।
मैं समुद्र के किनारे के बचे रहने वालों को
बर्बाद करूँगा। 17 गुस्से के साथ मैं मुकद्मा
लड़कर, सख्ती के साथ पलटा लूँगा। तब
उन्हें यह समझ आएगी, कि मैं याहवे हूँ।
26 ग्यारहवें साल के पहले महीने के
पहले दिन को याहवे का यह संदेश
मुझे मिला, 2 हे मनुष्य की सन्तान, सोर ने जो
यरूशलेम के बारे में कहा है, अहा, अहा! जो
देश देश के लोगों के फाटक की तरह थी, वह
नाश हो गई। 3 उसकी बर्बादी से मुझे भरपूरी
का अनुभव होगा। इसलिए परमेश्वर याहवे
कहते हैं, हे सोर, देख, मैं तुम्हारे खिलाफ़

में हूँ। मैं ऐसा करने वाला हूँ, कि बहुत से
देश तुम्हारे ऐसे विरोध में हो जाएँगे,जैसे
समुन्दर की लहरें उठती हैं। 4 वे सोर की
शहरपनाह को गिरा देंगे, उसके गुम्मटों को
तोड़ डालेंगे। उसकी मिट्टी खुरचकर मैं उसे
नंगी चट्टान कर दूँगा। 5 वह समुद्र के बीच
का जाल फैलाने ही का स्थान हो जाएगा,
क्योंकि यह प्रभु कहते हैं, कि वह दूसरे देशों
से लूटा जाएगा। 6 उसकी मैदान की बेटियाँ,
तलवार से हताहत हो जाएँगी, तब वे जानेंगी
कि मैं याहवे हूँ। 7 क्योंकि परमेश्वर याहवे
कहते हैं, देखो मैं सोर के विरूद्ध बाबुल के
राजा नबूकदनेस्सर को घोड़ों, रथों, सवारों,
बड़ी भीड़ और दल सहित उत्तर दिशा से
लाऊँगा। 8 तुम्हारी मैदान में की बेटियों को
वह तलवार से नाश करेगा वह तुम्हारे विरोध
में कोट बनाकर, दमदमा बान्धेगा और ढाल
उठाएगा। 9 वह तुम्हारी शहरपनाह के विरूद्ध
युद्ध के हथियार चलाएगा और तुम्हारे गुम्मटों
को फरसों से गिराएगा। 10 उनके घोड़ों की
अनगिनित संख्या से जो धूल उड़ेगी, उससे
सब कुछ ढप जाएगा। जब वह तुम्हारे
फाटकों में से ऐसे घुसेगा, जैसे लोग नाकेवाले
नगर में घुसते हैं, तब तुम्हारी शहरपनाह,
सवारों, छकड़ों और रथों की आवाज़ से
काँप उठेगी। 11 वह अपने घोड़ों की टाप
से तुम्हारी सभी गलियों को रौंदेगा और
तुम्हारे लोगों को तलवार से मारेगा। तुम्हारे
मज़बूत खंबे गिर पड़ेंगे। 12 वे तुम्हारी दौलत
लूटेंगे और व्यापार के सामान को छीनेंगे।
वे तुम्हारी शहरपनाह को गिरा देंगे। तुम्हारे
पत्थर, इमारती लकड़ी और मलबे को समुद्र
में डाल देंगे। 13 तुम्हारे गाने की आवाज़ को मैं
रोक दूँगा और वीणा फिर सुनाई नहीं देंगी।
14 तुमको मैं नंगी चट्टान बना दूँगा और तुम
जाल फैलाने की जगह बन जाओगी। फिर
से तुम्हें कोई न बसाएगा, क्योंकि मुझ याहवे
के मुँह से यह बात निकल चुकी है। 15 सूर
से प्रभु याहवे यह कहते हैं, “जब तुम में
महावध होगा और ज़ख्मी लोग कराहेंगे, तब
क्या समुद्र के किनारे के देश काँपेंगे नहीं?
16 तब समुद्र के किनारे के सभी राज्य करने
वाले राजासन पर से उतरेंगे, तथा अपने चोगे
और जरीदार कपड़ों को उतारकर थरथराहट
के कपड़े पहनेंगे। वे ज़मीन पर बैठकर हर
समय काँपते रहेंगे और तुमसे डरे रहेंगे। 17 वे
तुम्हारे बारे में दुख का गीत बनाएँगे और तुम
से कहेंगे : हे बसी हुई नगरी, तुम कैसी बर्बाद
हो गई। हे मशहूर नगरी जो अपने रहने वालों
सहित समुद्र के बड़ी ताकतवर थी और जो
सभी लोगों पर अपने डर को फैलाए हुए थी।
तुम्हें समुद्र में से कैसे मिटा दिया गया। 18 तब
तुम्हारे नाश के दिन द्वीप थरथरा उठेंगे, हाँ,
तुम्हारे अन्त पर द्वीप दहल जाएँगे। 19 क्योंकि
प्रभु याहवे यों कहते हैं : जब मैं तुम्हें उजाड़
नगरों की तरह सुनसान कर डालूँगा, जब मैं
तुम पर समुद्र चढ़ा लाऊँगा और असीमित
पानी तुम्हें ढांप लेगा, 20 तब मैं तुम्हें पुराने
समय के उन लोगों के साथ पहुँचाऊँगा, जो
मरे हुओं के स्थान पहुँच चुके हैं, हाँ तुम्हें
पृथ्वी के प्राचीन काल से उजड़ी हुए निचली
जगहों में उनके साथ रखूँगा, जो गड्ढे में उतर
चुके हैं, कि तुम फिर बसाए न जाओ।और न
जीवन के लोक में कोई जगह पाओगे। 21 मैं
तुम्हें डराऊँगा कि तुम ज़िन्दा ही न रहो तुम्हें
ढूँढा जाएगा, लेकिन कोई पा न सकेगा, यह
प्रभु कहते हैं।”

27 मुझे याहवे का वचन मिला, 2 हे
मनुष्य की सन्तान, सोर के बारे में
एक रोने वाला गीत बनाकर उससे ऐसा
कहो, 3 हे समुद्र तट पर रहने वाली, हे बहुत
से द्वीपों के लिए देश-देश के लोगों के साथ

व्यापार करने वाली, परमेश्वर याहवे कहते
हैं, "हे सोर, तुमने कहा है, मैं बहुत खूबसूरत
हूँ।" 4 तुम्हारी सरहद समुद्र के बीच है, तुम्हें
बनाने वालों ने तुम्हें बहुत खूबसूरत बनाया
है। 5 तुम्हारी सभी पटरियाँ सनीर पहाड़ के
सनौवर की लकड़ी की बनी हैं, तुम्हारे
मस्तूल के लिए लबानोन के देवदार लिए
गए हैं। 6 तुम्हारी पतवारें उन्होंने बाशान के
बांजवृक्षों से और फर्श साइप्रस के सनौवर
से, हाथी दाँत जड़कर बनाए हैं। 7 तुम्हारे
जहाजों के पास मिस्र से लाए गए बूटेदार
सन के कपड़े के बने, कि तुम्हारे लिए झण्डे
का सा काम करें। तुम्हारी चाँदनी एलीशा के
द्वीपों से लाए गए नीले और बैंजनी रंग के
कपड़ों की बनी 8 तुम्हारे मांझी सीदोन और
अर्बद के निवासी थे, हे सूर तुम्हारे बीच पाए
जाने वाले अक्लमन्द लोग तुम्हारे नाविक
थे। 9 गेबाल के पुरनिए और अक्लमन्द लोग
मरम्मत करने के लिए तुम्हारे संग थे। समुद्र
के सारे जहाज और उनके नाविक, तुम्हारा
व्यापार संभालने के लिए तुम्हारे साथ थे।
10 तुम्हारी फौज में फारसी, लूदी और पूती
सैनिक थे। वे तुम में अपनी ढालें और टोप
टाँगकर तुम्हारी शान बढ़ाते थे। 11 तुम्हारी
शहरपनाह पर चारों ओर अर्बदी और तुम्हारी
फौज के लोग थे, और तुम्हारी गुम्मटों पर
शूरवीर थे। उन लोगों ने अपनी ढालें तुम्हारे
चारों ओर की शहरपनाह पर टाँगी थी।
तुम्हारी खूबसूरती उनके द्वारा पूरी हुई थी।
12 अपनी हर तरह की दौलत की बढ़ोतरी
के कारण तर्शीशी लोग तुम्हारे व्यापारी
थे। उन्होंने चान्दी, लोहा, रांगा और सीसा
देकर तुम्हारा माल खरीद लिया। 13 यावाल,
तूबल, और मेशेक के लोग तुम्हारे माल के
बढ़ते गुलाम और पीतल के बर्तन का तुमसे
व्यापार करते थे। 14 तोगर्मा के घराने के
लोगों ने तुम्हारी दौलत लेकर घोड़े, सवारी
के घोड़े और खच्चर दिए। 15 ददानी तुम्हारे
व्यापारी थे। बहुत से द्वीप तुम्हारे बाज़ार
बने थे। वे तुम्हारे पास हाथी दाँत की सींग
और आबनूस की लकड़ी व्यापार में लाते
थे। 16 तुम्हारी बढ़िया कारीगरी के कारण
आराम तुम्हारा व्यापारी था, मरकत, बैंजनी
रंग का और बूटेदार कपड़े, सन, मूंगा और
लालड़ी देकर तुम्हारा माल लेते थे। 17 यहूदा
और इस्त्राएल भी तुम्हारे व्यापारी थे; उन्होंने
मिन्नीत का गेहूँ, पन्नग और शहद, तेल और
बलसान देकर तुम्हारा माल लिया। 18 तुम में
बहुत कारीगरी हुई और हर तरह की दौलत
इकट्ठी हुई, इससे दमिश्क तुम्हारा व्यापारी
बना; तुम्हारे पास हेलबोन का दाखमधु औ
सफेद ऊन पहुँचाया गया। 19 वदान और
यावान से तुम्हारे माल के बदले में धागा
दिया, और उनके कारण फौलाद, तज और
अगर में भी तुम्हारा व्यापार हुआ। 20 ददान
तुम्हारे साथ घोड़ों की जीन के कपड़े का
लेन देन किया करता था। 21 अरब और
केदार के सभी प्रधान तुम्हारे व्यापारी हुए,
उन्होंने मेमने, मेंढ़े, और बकरे लाकर तुम्हारे
साथ लेन-देन किया। 22 शबा और रामा के
व्यापारी तुम्हारे व्यापारी हुए; उन्होंने बढ़िया
से बढ़िया प्रकार का हर तरह का मसाला,
सब तरह के मणि और सोना देकर तुम्हारा
माल लिया। 23 हारान, कन्ने, एदेन, शबा के
व्यापारी और असीरिया और कलमद, ये
सभी तुम्हारे व्यापारी ठहरे। 24 इन्होंने उत्तम
से उत्तम वस्तुएँ अर्थात ओढ़ने के नीले और
बूटेदार कपड़े और डोरियों से बन्धी और
देवदार की बनी हुई तस्वीर, अजीब कपड़ों
की पेटियाँ लाकर तुम्हारे साथ लेन-देन
किया। 25 तर्शीश के जहाज तुम्हारे व्यापार
के सामान को ढोनेवाले हुए। उनके द्वारा तुम

समुद्र के बीच रहकर बहुत दौलतमन्द और
सामर्थी हो गई थी। 26 तुम्हारे खिवैयों ने तुम्हें
गहरे पानी में पहुँचा दिया है, और पुरवाई ने
तुम्हें समुद्र के बीच तोड़ डाला है। 27 जिस
दिन तुम डूबोगी, उसी दिन तुम्हारी दौलत,
व्यापार का माल, मल्लाह, मांझी, जुड़ाई
का काम करने वाले, व्यापारी लोग, और
तुम्हारे में जितनी सिपाही हैं, और तुम्हारी
सारी भीड़-भाड़ समुद्र के बीच गिर जाएगी।
28 तुम्हारे मांझियों के चिल्लाने से आस-पास
की जगहें काँप उठेंगी। 29 सभी खेनेवाले और
मल्लाह और समुद्र में जितने मांझी रहते हैं,
वे अपने-अपने जहाज पर से उतरेंगे, 30 ओर
वे ज़मीन पर खड़े होकर तुम्हारे बारे में
ऊँची आवाज़ से बिलख-बिलखकर रोएँगे।
वे अपने-अपने सिर पर मिट्टी उड़ाकर राख
में लोटेंगे। 31 और तुम्हारे दुख में अपने सिर
मुंडवा देंगे, और कमर में टाट बांधकर अपने
मन के कड़े दुख के साथ तेरे बारे में रोएँगे
और छाती पीटेंगे। 32 वे विलाप करते हुए
तुम्हारे बारे में विलाप का यह गीत बनाकर
गाएँगे, सोर जो अब समुद्र के बीच चुपचाप
पड़ी है, उसके समान कौन सा नगर है?
33 जब तुम्हारा माल समुद्र पर से निकलता
था, तब बहुत से देशों के लोग तृप्त होते
थे, तुम्हारी दौलत और व्यापार का माल
और तुम्हारे सब निवासी भी तुम्हारे अन्दर
रहकर बर्बाद हो गए। 34 अब, जबकि तू
समुद्र की गहराई में लहरों से टूट गई है तो
तेरा माल और तेरे सब साथी भी तेरे साथ
नष्ट हो गए हैं। 35 टापुओं के सभी निवासी
तुम्हारे कारण घबरा गए और उनके सभी
राजाओं के रोएं खड़े हो गए, और उनके मुँह
उदास दिखाई देते हैं। 36 देश-देश के व्यापारी
तुम्हारे खिलाफ़ हथौड़े बजा रहे हैं; तुम डर
का कारण हो गई हो और फिर स्थिर न रह
सकोगी।

28 मुझे याहवे की ओर से यह बात
बताई गई; 2 हे यहेजकेल, सोर के
प्रमुख से कहो, परमेश्वर याहवे का कहना
यह है, कि घमण्ड में आकर तुमने कहा है, मैं
ईश्वर हूँ, मैं समुद्र के बीच परमेश्वर के आसन
पर बैठा हुआ हूँ। लेकिन हालांकि तुम अपने
को परमेश्वर करके पेश कर रहे हो, लेकिन
सच्चाई यह है कि तुम ईश्वर नहीं, इन्सान
हो। 3 तुम दानिय्येल से ज़्यादा अक्लमन्द
तो हो, तुम सभी कुछ का ज्ञान रखते हो।
4 अपनी बुद्धि और समझ से तुमने धन हासिल
किया और अपने पास बहुत सा सोना, चाँदी
रखा है। 5 बड़ी बुद्धिमानी से तुम लेन-देन
करते रहे, जिससे तुम दौलतमन्द हो गए
और तुम घमण्डी हो गए। 6 इसलिए परमेश्वर
याहवे कहते हैं, तुम जो अपना मन परमेश्वर
का सा दिखाते हो, 7 इसलिए देखो, मैं तुम
पर ऐसे परदेशियों से हमला करवाऊँगा,
जो सभी देशों से अधिक बलात्कारी हैं। वे
अपनी तलवारें तुम्हारी बुद्धि की सुन्दरता
पर चलाएँगे और तुम्हारी चमक-दमक को
खराब कर डालेंगे। 8 वे तुम्हें कब्र में उतारेंगे
और तुम समुद्र के बीच के मारे हुओं की
रिवाज़ पर मर जाओगे। 9 तब क्या तुम अपने
मारने वालों के सामने कहते रहोगे, कि तुम
ईश्वर हो? तुम अपने ज़ख्मी करने वाले
के हाथ में ईश्वर नहीं, मनुष्य ही ठहरोगे।
तुम परदेशियों के हाथ से खतनारहित लोगों
की तरह मारे जाओगे। 10 तुम विदेशियों के
हाथ से खतनारहित की मौत मरोगे, क्योंकि
मैंने ऐसे कहा है, प्रभु याहवे यही कहते हैं।
11 याहवे का संदेश फिर मुझे मिला : 12 हे
मनुष्य की सन्तान, सूर के राजा के बारे में

विलापगीत शुरू करो और उस से कहो कि
प्रभु याहवे कहते हैं : तुम्हारे ऊपर सिद्धता
की मोहर लगी है कि, तुम बुद्धि से भरपूर
और बहुत सुन्दर हो। 13 तुम परमेश्वर के
बगीचे अदन में थे। तुम्हारे कपड़े हर तरह के
कीमती माणिक अर्थात लालमणि, पुखराज,
हीरा, फीरोज़ा, सुलैमानी मणि, मरकत और
लाल से जड़े थे। जिस दिन तुम्हें बनाया गया,
उसी दिन वे तैयार किए गए। 14 तुम सुरक्षा
देने वाले अभिषिक्त करूब थे और मैंने तुम्हें
वहाँ रखा था। तुम परमेश्वर के पवित्र पहाड़
पर थे। तुम आग के पत्थरों के बीच चलते
फिरते थे। 15 तुम्हारे रचे जाने के दिन से,
जब तक तुम में बुराई नहीं पाई गयी, अपने
आचार-विचार में निर्दोष थे। 16 तुम व्यापार
के बढ़ जाने से अन्दर ही अन्दर उपद्रव
से भरकर अपराध करने लगे। इसलिए मैंने
तुम्हें अपवित्र समझकर परमेश्वर के पवित्र
पर्वत पर से गिरा दिया। हे सुरक्षा देने वाले
करूब, मैंने तुम्हें अग्निमय पत्थरों के बीच
से बर्बाद किया। 17 खूबसूरती के कारण
तुम घमण्ड से भर गए थे। वैभव के कारण
तुम्हारी बुद्धि भी खराब हो गई थी। मैंने तुम्हें
उठाकर ज़मीन पर पटक दिया। मैंने तुम्हें
राजाओं के सामने रखा, कि वे तुम्हें देखें।
18 तुम्हारे अधर्मों के बढ़ जाने से और व्यापार
के धोखा-घड़ी से, तुमने अपने पवित्रस्थानों
को दूषित किया है। इसलिए मैंने तुम में
से ऐसी आग पैदा की, जिसने तुम्हें जला
डाला। सब के देखते-देखते भूमि पर तुम्हें
जला डाला है। 19 देश-देश के लोगों में से,
जितने तुम्हें जानते हैं, वे सभी तुम्हारे कारण
घबराए हुए हैं। तुम डर का एक कारण बन
चुके हो और आने वाले समय में न रहोगे।
20 तब याहवे का यह संदेश मुझे मिला, 21 हे
मनुष्य की सन्तान, अपना चेहरा सीदोन की
ओर करके उनके विरोध में भविष्यद्वाणी
करो। 22 और कहो, कि प्रभु याहवे कहते
हैं : हे सीदोन, देखो, मैं तुम्हारे खिलाफ़ हूँ।
तुम्हारे बीच मैं महिमा पाऊँगा। जब मैं उसके
बीच सज़ा भेजूँगा, तब वे जान सकेंगे कि
मैं याहवे हूँ और मैं अपनी पवित्रता उसमें
प्रकट करूँगा। 23 क्योंकि मैं उस पर महामारी
भेजूँगा, उसकी गलियों में खून ही खून दिखाई
देगा। चारों ओर से उस पर तलवार चलेगी,
तमाम ज़ख्मी वहाँ गिरेंगे। तब लोग जानेंगे कि
मैं याहवे हूँ। 24 इस्त्राएल के घराने के लिए
उनके चारों ओर के तिरस्कार करने वालों
में से कोई चुभने वाला काँटा या बेधनेवाला
काँटा न रहेगा। तब वे जान सकेंगे कि मैं
याहवे हूँ। 25 प्रभु याहवे कहते हैं : जब मैं
इस्त्राएल के घराने को उन लोगों में से इकट्ठा
करूँगा, जिनके बीच वे तितर-बितर हुए हैं
और देश-देश के सामने उन में अपनी पवित्रता
प्रकट करूँगा, तब वे अपने देश में निवास
करेंगे, जिसे मैंने अपने दास याकूब को दिया
था। 26 उसमें से बिना डर के रहा करेंगे। जब
मैं चारों ओर से उन्हें तुच्छ ठहराने वालों को
दण्ड दूँगा, तब वे घर बनाकर और अंगूर के
बगीचे लगाकर सुरक्षित रहेंगे। तब वे जान
भी जाएँगे कि मैं ही उनका प्रभु याहवे हूँ।

29 दसवें साल के दसवें महीने के
बारहवे दिन याहवे का यह वचन
मुझे मिला, 2 हे यहेजकेल अपना चेहरा मिस्र
के राजा फिरौन के विरूद्ध करके उसके और
सारे मिस्र के विरूद्ध नबूवत करो। 3 ऐसा
कहो कि प्रभु याहवे यों कहते हैं : हे मिस्र के
राजा फिरौन, हे अपनी नदियों के बीच पड़े
हुए विशाल मगरमच्छ, तुम जिसका कहना है
कि नील नदी मेरी है और उसे मैंने बनाया है,
देखो, मैं तुम्हारे विरूद्ध हूँ। 4 मैं तुम्हारे जबड़ों
में काँटे फँसाऊँगा। मैं तुम्हारी खाल में तुम्हारी

नदियों की सभी मछलियाँ चिपकाऊँगा। तब
मैं तुम्हें और तुम्हारे साथ तुम्हारी खाल में
चिपटी हुई तुम्हारी नदियों की सभी मछलियों
को नदियों में से खींच लाऊँगा। 5 तब मैं
तुम्हें और तुम्हारी नदियों की सब मछलियों
को निर्जन प्रदेश में फेंक दूँगाः तुम खुले
मैदान में पड़े रहोगे, तुम न तो इकट्ठे किए
जाओगे, न बटोरे जाओगे। मैंने तुम्हें जंगल
के जानवरों और आकाश की चिड़ियों को
खाना होने के लिए दे दिया है। 6 तब मिस्र के
सभी रहनेवाले जान जाएँगे, कि मैं याहवे हूँ,
क्योंकि वे इस्त्राएल के घराने के लिए केवल
नरकट की टेक थे। 7 जब उन्होंने तुम्हें हाथ से
पकड़ा, तब तुमने टूटकर उन सभी के कन्धों
को उखाड़ दिया, और जब उन्होंने तुम्हारा
सहारा लिया, तब तुम टूट गए, और उन सभी
की कमर की नसें चढ़ गई। 8 इसलिए प्रभु
याहवे कहते हैं : देखो, मैं तुम पर तलवार
चलाऊँगा और तुम में से मनुष्य और पशु
दोनों ही को मार डालूँगा। 9 और मिस्र देश
उजाड़ हो जाएगा, तब उन्हें मालूम पड़ेगा,
कि मैं याहवे हूँ। तुमने कहा, 'नील नदी मेरी
है, मैंने उसे बनाया है।' 10 इसलिए देखो, मैं
तुम्हारे और तुम्हारी नदियों के विरूद्ध हूँ और
मैं मिस्र देश को मिगदाल से लेकर सवेने
वरन, इथियोपिया की सरहद तक बिल्कुल
उजाड़ और निर्जन कर डालूँगा। 11 चालीस
साल तक न उसमें किसी मनुष्य का और
न जानवर का पैर पड़ेगा और न उसमें कोई
रहेगा। 12 इसलिए मैं मिस्र देश को उजड़े हुए
देशों के बीच उजाड़ देश ठहराऊँगा और
उसके नगर चालीस वर्ष तक उजड़े हुए नगरों
में उजाड़ रहेंगे। मैं मिस्रियों को तमाम देशों में
बिखरा दूँगा। 13 क्योंकि प्रभु याहवे यों कहते
हैं : चालीस साल के बाद मैं मिस्रियों को उन
लोगों में से जिनके बीच वे तितर-बितर किए
गए थे, इकट्ठा करूँगा। 14 मैं मिस्रियों की
हालत सुधारूँगा, तथा उन्हें उनकी जन्मभूमि
पत्रास देश में लौटा दूँगा, और वे वहाँ एक
छोटा ही राज्य रहेंगे। 15 वह राज्यों मे सबसे
छोटा होगा। भविष्य में वह कभी भी प्रमुख
न बन पाएगा। मैं उन्हें इतना छोटा करूँगा
कि वे गैरयहूदियों पर शासन न कर पाएँगे।
16 फिर मिस्र कभी भी इस्त्राएल के घराने
का विश्वासपात्र न रहेगा, लेकिन यह उसके
लिए, मिस्रियों की ओर मुड़ने के अधर्म की
याद दिलाएगा। तब वे जानेंगे कि मैं याहवे
हूँ। 17 अब सत्ताइसवे साल के पहले महीने
के पहले दिन याहवे का यह संदेश मुझे
मिला : 18 हे मनुष्य की सन्तान, बेबिलोन
के राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी फौज से
सूर के खिलाफ़ कड़ी मेहनत करायी, सभी
के सिर गंजे कराए, कन्धों की खाल छिली
गई, लेकिन उसको तथा उसकी फौज को
इसका कोई फायदा न हुआ। 19 इसलिए प्रभु
याहवे कहते हैं : "देखो, मैं बेबिलोन के
राजा नबूकदनेस्सर को मिस्र देश दे दूँगा।
वह उसकी धन-दौलत को उठा ले जाएगा।
वह उसका सबकुछ लूटकर अपने वश में
करेगा। यही उसकी फौज का मेहनताना
होगा। 20 उसकी मेहनत के लिए मैंने उसे
मिस्र देश इसलिए दिया है, क्योंकि उन्होंने
मेरे लिए मेहनत की थी।" यह प्रभु का कहना
है। 21 उस दिन मैं इस्त्राएल के लिए एक
सींग उगाऊँगा और उनके बीच तुम्हारा मुँह
खोलूँगा। तब वे जानेंगे कि मैं याहवे हूँ।

30 तब याहवे का संदेश मुझे मिला,
2 हे मनुष्य की सन्तान, भविष्यद्वाणी
करके कहो, कि प्रभु याहवे यह कहते हैं
: रोओ और कहो, हाय, उस दिन पर!
क्योंकि वह समय पास है, हाँ, हाय उस
दिन पर! 3 क्योंकि वह दिन पास आ चुका

है, हाँ, याहवे का दिन पास है। वह बादलों
का दिन होगा, वह देशों के लिए बर्बादी
का दिन होगा। 4 मिस्र पर तलवार चलेगी,
इथियोपिया भी वेदना से पीड़ित होगा। जब
मिस्र में लोग वध होकर गिरेंगे, तो वे उसकी
दौलत ले जाएँगे और उसकी नीवें उलट
दी जाएगी। 5 इथियोपिया, पूत, लूद, सम्पूर्ण
अरब लीबिया तथा उनके दोस्त देशों के
निवासी - ये सभी तलवार से मारे जाएँगे।
6 याहवे कहते हैं : निश्चय मिस्र का समर्थन
करने वालों का पतन होगा और अपने जिस
सामर्थ्य पर मिस्र फूलता है वह टूटेगा।
मिग्दोल से लेकर सवेने तक उसके निवासी
तलवार से मारे जाएँगे 7 और वे खण्डहर किए
गए देशों में खण्डहर ठहरेंगे । 8 जब मैं मिस्र
में आग लगाऊँगा और उसके सब मददगार
बर्बाद होंगे, तब वे जान सकेंगे कि मैं याहवे
हूँ। 9 उस दिन निडर इथियोपिया को डराने
के लिए मेरी ओर से संदेशवाहक जहाजों से
यात्रा आरम्भ करेंगे, और उन पर मिस्र के
दिन की तरह घबराहट होगी, क्योंकि देखो,
वे दिन जल्दी आएँगे। 10 प्रभु याहवे कहते हैं,
“बेबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर के हाथों
मैं मिस्र की भीड़ को भी नाश करूँगा।”
11 वह और उसके निर्दयी लोग उस देश को
उजाड़ने के लिए लाए जाएँगे वे मिस्र के
विरोध में तलवार खीचेंगे और देश को मारे
हुओं से भर देंगे। 12 इसके अलावा मैं नील
की धाराओं को सुखा डालूँगा और देश को
दुष्टों के हाथ बेच दूँगा। मैं देश और जो कुछ
उसमें है, उसे विदेशियों के द्वारा उजाड़ दूँगा।
यह याहवे ने कहा है। 13 प्रभु याहवे कहते हैं,
मैं मेम्फिस में से मूर्तियों को नष्ट करूँगा, हाँ,
बेकार वस्तुओं को मिटा डालूँगा। भविष्य में
मिस्र में कोई शासक न होगा और मैं मिस्र
में आतंक फैलाऊँगा। 14 पत्रोस को मैं उजाड़
दूँगा, सोअन मे आग लगा दूँगा, तथा थीबीस
नगर को सज़ा दूँगा। 15 सीन जो मिस्र का गढ़
है, अपना क्रोध भड़काऊँगा। मैं थीबीस की
भीड़ को नाश करूँगा। 16 मैं मिस्र में आग
लगाऊँगा। सीन पीड़ा से तड़पेगा। थीबीस
की शहरपनाह तोड़ दी जाएगी। मेम्फिस पर
हर दिन मुसीबतें आ पड़ेंगी। 17 ओन और
पी-बेसेत के जवान तलवार से मारे जाएँगे
और महिलाएँ गुलामी में चली जाएँगी। 18 जब
मैं तहपन्हेस में मिस्र का जूआ तोड़ूँगा, तब
वह दिन अन्धेरे में बदल जाएगा। तब वह
अपने ऊपर घमण्ड करना भूल जाएगा। एक
बादल उसे ढँक लेगा। उसकी बेटियाँ गुलामी
में चली जाएँगी। 19 इस तरह मैं मिस्र को सज़ा
दूँगा और वे जान जाएँगे कि मैं याहवे हूँ।
20 ग्यारहवें साल के पहले महीने के सातवें
दिन याहवे का यह संदेश मुझे मिलाः 21 हे
मनुष्य की सन्तान, मैंने मिस्र के फिरौन राजा
की बाँह तोड़ दी है और देखो वह न तो
जोड़ी गई है और न उस पर पट्टी बाँधी गई है,
ताकि अच्छी होकर फिर से तलवार पकड़ने
लायक हो जाए। 22 इसलिए प्रभु याहवे कहते
हैंः देखो, मैं मिस्र के राजा फिरौन के विरूद्ध हूँ
और मैं उसकी अच्छी तथा टूटी दोनों भुजाएँ
तोड़ डालूँगा और उसके हाथ से तलवार
गिरा दूँगा। 23 मैं मिस्रियों के देशों के बीच
तितर-बितर करूँगा। 24 क्योंकि मैं बेबिलोन
के राजा के हाथ मज़बूत करके उसके हाथों
में अपनी तलवार दूँगा, लेकिन फिरौन की
भुजाओं को मैं तोड़ डालूँगा, कि वह जख्मी
की तरह उसके सामने कराहे। 25 इस तरह मैं
बेबिलोन के राजा के हाथ मज़बूत करूँगा,
लेकिन फिरौन की भुजाएँ तोड़ी जाएँगी। जब
मैं अपनी तलवार बेबिलोन के राजा के हाथ
में दूँगा, और वह उसे मिस्र के खिलाफ़
चलाएगा, तब वे जान जाएँगे कि मैं याहवे

हूँ। 26 जब मैं मिस्रियों को देशों में तितर-बितर
करूँगा, तब वे जान सकेंगे, कि मैं याहवे हूँ।
31 ग्यारहवें साल के तीसरे महीने के
पहले दिन याहवे का यह वचन मेरे
पास पहुँचा: 2 "हे मनुष्य की सन्तान, मिस्र के
राजा फिरौन और उसकी बड़ी फौज से कहो:
वैभव में तुम्हारे समान कौन है? 3 देखो,
असीरिया तो लेबनोन का देवदार था, जो
बहुत ऊँचा था। उसकी डालियाँ खूबसूरत
और छायादार थीं। उसकी फुनगियाँ बादलों
को छूती थीं। 4 उसे पानी ने उगाया, गहरे
सोतों ने बढ़ाया। इनकी धाराएँ उसके रोपण
स्थल के चारों ओर बराबर बहा करती थी।
इनकी जल धाराएँ मैदान के सभी पेड़ों तक
सिंचाई करती थीं। 5 इसलिए उसकी ऊँचाई
जंगल के सभी पेड़ों से ज़्यादा हो गई। बहुत
पानी के कारण उसकी शाखाएँ अनेक और
डालें लम्बी होकर बहुत, बहुत फैल गई।
6 उसकी डालियाँ पर आसपास के सब पँछी
बसेरा करते थे। उसकी डालियों के नीचे
मैदान के हर तरह के जानवर बच्चे देते थे।
उसकी छाया में सभी बड़ी जातियाँ रहा
करती थीं। 7 इस तरह वह अपनी ऊँचाई
और डालियों की लम्बाई के कारण खूबसूरत
था, क्योंकि जड़ों के पास पानी बहुत था।
8 परमेश्वर के बगीचों के देवदार भी उसकी
बराबरी नहीं कर सकते थे। सनौवर के पेड़
उसकी डाली के समान न थे। परमेश्वर के
बगीचे का कोई भी पेड़ खूबसूरती में उसकी
बराबरी न कर सकता था। 9 मैंने डालियों से
उसे सुंदर बनाया था। यहाँ तक कि परमेश्वर
की अदन की बारी के सभी पेड़ भी उससे
जलते थे। 10 इसलिए प्रभु याहवे कहते हैं:
क्योंकि वह ऊँचाई में बड़ा है और उसकी
फुनगी बादलों तक पहुँचती है, और ऊँचाई
के कारण उसका मन घमण्ड से भर चुका
है। 11 इसलिए मैं उसे एक तानाशाह जाति के
सुपुर्द कर दूँगा। वह उसे अच्छी तरह सबक
सिखाएगा। मैंने उसे, उसकी दुष्टता के कारण
निकाल दिया है। 12 निर्दयी विदेशी लोगों ने
उसे काट कर छोड़ दिया है। उसकी डालें
पहाड़ों पर सभी तराईयो में गिरी पड़ी है।
पृथ्वी के सभी लोग उसकी छाया छोड़कर -
जा चुके हैं। 13 उस गिरे हुए पेड़ पर आकाश
में उड़ने वाले सभी पक्षी अपना घोंसला
बनाएँगे और उसकी टूटी हुई डालियों पर
मैदान के जानवर रहेंगे। 14 जिससे कि पानी
के किनारे के सभी पेड़ ऊँचाई में न बढ़े
और न ही अपनी फुनगियों को आकाश
तक पहुँचाए। न ही बहुत सा पानी पाकर
अपने सिर उठाएँ, क्योंकि वे सभी कब्र में
पड़े मनुष्यों की तरह मौत अर्थात अधोलोक
के आधीन कर दिए गए हैं। 15 प्रभु याहवे
कहते हैं : जिस दिन वह अधोलोक में उतर
गया, मैंने विलाप करवाया। गहरे पानी को
मैंने ढाँक दिया और नदियों को रोक दिया।
उसके पानी की बहुतायत को रोक दिया। मैंने
लेबनोन से उसके लिए विलाप करवाया और
उसके कारण मैदान के सारे पेड़ मुरझा गए।
16 जब मैंने उसे गड्ढे में जाने वालों के साथ
अधोलोक में पटक दिया तो उसके गिरने
की आवाज़ से मैंने देश देश को कँपा दिया।
तब अदन के भरपूर पानी पाने वाले पेड़ों
तथा लेबनोन के बढ़िया पेड़ों को अधोलोक
में सदा की शान्ति मिली। 17 वे हाँ, वे भी
जो उसकी ताकत थे और उसकी छाया में
देश-देश के बीच रहते थे उसके साथ तलवार
से मारे गए हुओं के पास अधोलोक में उतर
गए। 18 इसलिए महिमा और वैभव में अदन
का कौन सा पेड़ तुम्हारे समान है? फिर भी
तुम अदन के पेड़ों के साथ अधोलोक मे
उतारे जाओगे। तुम खतनारहितों के बीच,

हाँ, तलवार से घात किए हुओं के बीच पड़े रहोगे। फिरौन और उसकी सेनाओं के साथ भी ऐसा ही होगा। प्रभु याहवे यह कह रहे हैं।

32 बाहर वर्ष के बारहवें महीने के पहले दिन याहवे का वचन मुझे मिलाः
2 "हे मनुष्य की सन्तान, मिस्र के राजा फिरौन के बारे में शोक का गीत बनाकर उसे सुनाओ। तुमने अपनी तुलना जाति जाति के जवान शेर से की है, लेकिन तुम समुन्दर के मगरमच्छ की तरह हो। तुम अपनी नदियों पर टूट पड़े हो और तुमने उनके पानी को अपने पैरों से गंदा किया है। उनकी धारा को खराब कर दिया है। 3 प्रभु याहवे यों कह रहे हैंः मैं बहुत से देशों के साथ तुम पर अपना जाल फैलाऊँगा, और वे तुम्हें मेरे जाल में खींच लेंगे। 4 मैं तुम्हें पृथ्वी पर छोड़ दूँगा। मैं तुम्हें खुले मैदान में फेंक दूँगा। मैं आकाश की सभी चिड़ियों को तुम्हारे ऊपर बैठाऊँगा और सारी दुनिया के जानवरों को तुम्हारे गोश्त से तृप्त करूँगा। 5 मैं पहाड़ों पर तुम्हारा मांस बिखेर दूँगा और घाटियों को तुम्हारे अवशेष से भर दूँगा। 6 पहाड़ों पर बहे तुम्हारे खून से मैं ज़मीन को सींचूँगा और तंग घाटियाँ तुम से भर जाएँगी। 7 जब मैं तुम्हें मिटाने लगूँ, तब मैं आकाश को ढाँप दूँगा और उसके तारों को अन्धेरा कर दूँगा। मैं सूरज को बादल से ढँक दूँगा और चाँद रोशनी देना बन्द कर देगा। 8 मैं आकाश की सारी ज्योतियों को तुम्हारे कारण अन्धकारमय कर डालूँगा और तुम्हारे देश पर अन्धेरा छा जाएगा। 9 जब मैं तुम्हारे विनाश का समाचार देश-देश में पहुँचाऊँगा अर्थात उन देशों में, जिन्हें तुम जानते तक नहीं तब बहुत से लोग घबरा जाएँगे। 10 मैं बहुत से देशों को तुम्हारे कारण विस्मित कर दूँगा। जब मैं अपनी तलवार उनके सामने चलाऊँगा तो उनके राजा तेरे कारण अत्यन्त डर जाएँगे, और तेरे पतन के दिन उनमें से प्रत्येक अपने प्राण के लिए काँपता रहेगा। 11 क्योंकि परमेश्वर याहवे कहते हैं, बाबुल के राजा की तलवार तुम पर चलेगी। 12 मैं तुम्हारी भीड़ को ऐसे ताकतवरों की तलवार के द्वारा गिराऊँगा, जो सभी देशों में भयानक हैं। वे मिस्र के घमण्ड को तोड़ेंगे और उसकी सारी भीड़ बर्बाद होगी। 13 मैं उसके सभी जानवरों तालाबों के किनारे पर से नाश करूँगा। भविष्य में वे न मनुष्य के पाँव से, न पशुओं के खुरों से गंदले किए जाएँगे। 14 तब मैं उनका पानी मीठा कर दूँगा। उनकी नदियाँ तेल की तरह बहेंगी, यह परमेश्वर याहवे कह रहे हैं। 15 जब मैं मिस्र देश को उजाड़ूँगा उसे छूछा कर दूँगा और सभी निवासियों को मारूँगा ,तब जानेंगे कि मैं याहवे हूँ। 16 लोगों के विलाप करने के लिए गीत यह है जिसे वे गाएँगे: ;देश-देश की महिलाएँ इसे गाएँगी। मिस्र और उसकी भीड़ के बारे में वे यही विलापगीत गाएँगी, परमेश्वर का यही वचन है। 17 बारहवें साल के पहले महीने के पन्द्रहवें दिन को याहवे का यह संदेश मुझे मिला, 18 हे मनुष्य की सन्तान, मिस्र की भीड़ के लिए हाय-हाय करो और उसको प्रतापी देशों की बेटियों सहित बंकर में गड़े हुओं के पास अधोलोक में उतार दो। 19 तुम किस से अधिक सुन्दर हो? तुम उतरकर खतनारहितों के साथ पड़े रहो। 20 वे तलवार से मरे हुओं के बीच गिरेंगे। उनके लिए तलवार ही ठहराई गई है; इसलिए मिस्र को उसकी सारी भीड़ समेत घसीट लाओ। 21 सामर्थी शूरवीर उससे और उसके मददगारों से अधोलोक में बातें करेंगे। वे खतनारहित लोग वहाँ तलवार से मरे पड़े हैं। 22 अपने सारे दल सहित असीरिया भी वहाँ है, उनकी कबरें उनके चारों ओर हैं। सभी

तलवार से मारे जा चुके हैं। 23 उसकी कबरें
गड्ढे के कोनों में बनी हुई हैं, और उसकी
कबर के चारों ओर उसकी सभा है। वे सभी
जो जीवनलोक में डर पैदा करते थे, वे अभी
तलवार से मारे जा चुके हैं। 24 वहाँ एलाम
हे, और उसकी कबर के चारों ओर उसकी
पूरी भीड़ है। वे सभी तलवार के शिकार
बन चुके हैं। वे खतनारहित अधोलोक में जा
चुके हैं। वे जीवनलोक में डर उत्पन्न करते
थे, लेकिन अब कबर में और गड़े हुओं के
संग उसके मुँह पर कालिख छाई हुई है।
25 उसकी सारी भीड़ सहित उसे मारे हुओं
के बीच सेज मिली। उसकी कबर उसी के
चारों ओर हैं, वे सभी खतनारहित तलवार
से नष्ट किए गए। उन्होंने जीवन लोक में डर
उत्पन्न किया था। परन्तु अब कबर में और
गड़े हुओं के साथ उनके चेहरों पर सियाही
छाई हुई है। उन्हें मरे हुओं के बीच रखा गया
है। 26 सारी भीड़ के साथ वहाँ मेशेक और
तूबल हैं, उनके चारों ओर कबरे हैं। वे सब
के सब खतनाहीन तलवार से बर्बाद किए
गए, क्योंकि जीवनलोक में वे डर पैदा करते
थे। 27 और उन गिरे हुए खतनाहीन शूरवीरों
के साथ वे पड़े न रहेंगे, जो अपने अपने युद्ध
के हथियार लिए हुए अधोलोक में उतर गए
हैं, वहाँ उनकी तलवारें उनके सिरों के नीचे
रखी हुई हैं। उनके बुरे काम उनकी हड्डियों
में बसे हुए हैं, क्योंकि जीवनलोक में उनसे
शूरवीरों को भी डर लगता था। 28 लेकिन
तुम खतनारहितों के बीच तोड़े जाओगे और
तलवार से मारे गए लोगों के साथ पड़े रहोगे।
29 वहाँ एदोम, उसके राजा और उसके सभी
प्रधान भी हैं, तो ताकतवर होने के बावजूद
तलवार से मारे लोगों के बीच पड़े हैं। वे
खतनारहितों और कब्र में जाने वालों के साथ
पड़े रहेंगे। 30 वहाँ उत्तर के सभी प्रधान और
सभी सीदोनी भी, जिनकी ताकत से आतंक
फैलता था, शर्मिन्दा होकर मारे हुओं के
बीच पड़े हैं। इसलिए वे खतनारहित हालत
में तलवार से मारे हुओं के बीच पड़े हैं
और कब्र में जाने वालों के साथ बेइज़्ज़ती
सहते हैं। 31 फिरौन, हाँ, फिरौन अपनी पूरी
फौज सहित उन्हें देखेगा और तलवार से
मारी गई अपनी फौज के कारण शान्ति पा
सकेगा। यह याहवे कह रहे हैं। 32 हालांकि
मैंने ही जीवनलोक में उसका आतंक फैलाया
था, फिर भी फिरौन को उसकी भीड़ सहित
तलवार से मारे हुओं के साथ खतनारहितों
के बीच सुलाया जाएगा। यह वचन याहवे
का है।

33 फिर याहवे का यह संदेश मुझे दिया
गया 2 हे मनुष्य की सन्तान, अपनी
प्रजा के लोगों से बातचीत करो और उनसे
कहो, यदि मैं किसी देश पर तलवार चलवाऊँ
और उस देश के लोग अपने लोगों में से किसी
को लेकर अपना चौकीदार रखें, 3 और वह
देश पर तलवार को आते देखकर नरसिंगा
फूंकें और लोगों को सतर्क कर दें, 4 तब वह
जो नरसिंगे की चेतावनी सुनकर भी सावधान
न हो, और तलवार आकर उसे घात करे,
तो उसका अपराध उसी के नाम होगा।
5 उसे नरसिंगे की आवाज़ सुनाई दी थी,
लेकिन बेपरवाह रहा। यदि उसने लापरवाही
न की होती, तो अपनी जान बचा लेता।
6 लेकिन यदि चौकीदार तलवार को आते
देख, नरसिंगा फूंककर लोगों को सावधान न
करे और लड़ाई में कोई मर जाएगा, लेकिन
उसका बदला मैं चौकीदार से ही लूँगा।
7 इसलिए, हे मनुष्य की सन्तान, मैंने तुम्हें
इस्त्राएल के घराने का पहरेदार बनाया है।
तुम मेरे मुँह से बातें सुनकर उन्हें मेरी ओर
से सावधान करो। 8 यदि मैं दुष्ट से कहूँ,

हे दुष्ट तुम ज़रूर मरोगे, तब यदि तुम दुष्ट
को उसके रास्ते के बारे में न चिताए, तो
वह दुष्ट फंसा हुआ अपने अधर्म में मरेगा,
लेकिन उसकी जान का बदला मैं तुमसे लूँगा।
9 लेकिन यदि तुम उसे सावधान करो, और
वह मन न बदल ले, तो वह अपने अधर्म
में मरेगा, लेकिन तुम्हारी जान बचेगी। 10 हे
मनुष्य की सन्तान, इस्त्राएल के घराने से
कहो, तुम लोग कहते हो, हमारे अपराधों
और अपराधों का बोझ हम पर लदा है।
उसके कारण हम गल रहे हैं, हम कैसे ज़िंदा
रहें? 11 तुम उनको बताओ, कि परमेश्वर का
कहना यह है कि वह माफी न पाए व्यक्ति के
मरने से बिल्कुल खुश नहीं होते हैं। उनकी
खुशी यह है कि ऐसा इन्सान अपने रास्ते को
बदल डाले और जीवित रहे। इस्त्राएल के
घराने से तुम यह भी कहो, कि वे जिस राह
पर चल रहे हैं, उससे मुड़ जाएँ और अपनी
जान न गवाएँ। 12 हे मनुष्य की सन्तान, अपने
लोगों को बताओ, नैतिक जीवन जीने वाला
जब रास्ते से भटके, तो उसका नैतिक जीवन
उसे बचा नहीं पाएगा। दुष्ट जो अपनी दुष्टता
को छोड़ दे, तो वह गिरेगा नहीं। धर्मी या
सही जीवन जीने वाला जब उसी बात में
चूक जाए तो उसके अच्छे जीवन से उसका
बचाव न हो सकेगा। 13 यदि मैं अच्छे चरित्र
वाले व्यक्ति से कहूँ कि तुम ज़रूर जिन्दा
रहोगे और वह अपने अच्छे जीवन पर भरोसा
रखकर गलत काम करने लगे, वह उन्हीं
में फँसे हुए मर जाएगा। 14 जब मैं अनुचित
जीवन जीने वाले से कहूँ, कि वह मरेगा
ज़रूर, और वह उस जीवन का त्याग करके
सही जीवन जीने लगे। 15 अर्थात यदि दुष्ट
बन्धक वापस कर दे, लूटी वस्तुएँ लौटा दे,
बिना गलत काम किए जीवन देने वाले रास्ते
पर चलने लगे, तो वह अपनी जान गँवाएगा
नहीं, वह जीवित ही रहेगा। 16 जहाँ जहाँ वह
चूक गया हो, उसे याद न किया जाएगा।
उसने इन्साफ और सच्चाई का जीवन जिया
वह ज़रूर जीवित रहेगा। 17 फिर यदि तुम्हारे
लोग कहते हैं, प्रभु का तौर तरीका सही नहीं
है, लेकिन सच्चाई यह है कि उन्हीं का जीवन
ठीक नहीं है। 18 जब ईमानदारी-पवित्रता से
जीने वाला व्यक्ति अनैतिक और अनुचित
काम करने लग जाए, तो वह उसी में फँसा
मरेगा। 19 जब दुष्ट अपनी दुष्टता को छोड़कर
न्याय और ईमानदारी से काम करने लगे,
तब वह जीवित रहेगा। 20 फिर भी तुम्हारी
शिकायत यह है, कि प्रभु अपने व्यवहार में
सच्चे नहीं है। हे इस्त्राएल के घराने, मैं हर
एक व्यक्ति का इन्साफ उसके चालचलन
के हिसाब से करूँगा। 21 फिर हमारी गुलामी
के ग्यारहवें साल के दसवें महीने के पाँचवे
दिन एक व्यक्ति जो यरूशलेम से भागकर
बच गया था, वह मेरे पास आकर कहने
लगा कि नगर को ले लिया गया है। 22 उस
भागे हुए के आने से पहले शाम को याहवे
की शक्ति मुझ पर हुई थी, और सुबह तक
अर्थात उस मनुष्य के आने तक उसने मेरा
मुँह खोल दिया। इसलिए मेरा मुँह खुला ही
रह गया और मैं गूँगा न रहा। 23 तब याहवे
का संदेश मुझे मिला, 24 हे मनुष्य की सन्तान
इस्त्राएल की ज़मीन के उन खण्डहरों के रहने
वाले यह कहते हैं, इब्राहीम एक इन्सान था,
लेकिन फिर भी देश का हकदार बना, लेकिन
हम लोग बहुत से हैं, इसलिए देश निश्चय
हमारे ही अधिकार में दिया गया है। 25 इस
कारण तुम उनसे कहो, परमेश्वर याहवे यों
कहते हैं, तुम लोग तो मांस खून के साथ
खाते हो, मूरतों को पूजते और घिनौने काम
करते, अपने पड़ोसी की पत्नी को अशुद्ध
करते हो, फिर कैसे आशा रखते हो कि उस

देश के अधिकारी हो सकोगे? 26 तुम अपनी
तलवार पर भरोसा रखते हो और गंदे काम
करते हो और अपने पड़ोस की महिला के
साथ यौन सम्बन्ध रखते हो: फिर क्या तुम
उस देश के अधिकारी हो पाओगे? 27 तुम
उनसे यह कहो, कि परमेश्वर के अनुसार जो
लोग खण्डहरों में रहते हैं, वे तलवार से मारे
जाएँगे। जो खुले मैदान में रहता है, उसे मैं
जीव जन्तुओं का खाना बना दूँगा। और जो
गढ़ों और गुफाओं में रहते हैं, वे मरी से मर
जाएँगे। 28 मैं उस देश को उजाड़ कर डालूँगा।
उसकी शक्ति का जो घमण्ड है वह चला
जाएगा। इस्त्राएल के पहाड़ ऐसे उजड़ेंगे कि
उन पर होकर कोई न चलेगा। 29 इसलिए जब
मैं उन लोगों के किए हुए सब घिनौने कामों के
कारण उस देश को उजाड़ ही उजाड़ करूँगा,
तब उन्हें मालूम हो जाएगा कि मैं याहवे हूँ।
30 हे मनुष्य की सन्तान, तुम्हारे लोग दीवारों
के पास और घरों के दरवाज़ों में तुम्हारे बारे में
बातें करते और एक दूसरे से कहते हैं, आओ,
सुनो, कि याहवे क्या कहना चाहते हैं। 31 वे
प्रजा की तरह तुम्हारे पास आते और मेरी
प्रजा बनकर तुम्हारे सामने बैठकर तुम्हारी
सुनते हैं, लेकिन एक कान से सुनकर दूसरे
कान से उड़ा देते हैं। वे अपने मुँह से प्रेम
दिखाते हैं, लेकिन उनका मन लालच से भरा
रहता है। 32 तुम उनकी दृष्टि में प्रेम के मधुर
गीत और गाने वाले और अच्छे बजाने वाले
का सा ठहरा है; क्योंकि वे तुम्हारी बातें सुनते
तो हैं, परन्तु उन पर चलते नहीं। 33 सो जब
यह बात घटेगी, और ऐसा होना ज़रूर है। तब
वे जान लेंगे कि हमारे बीच एक नबी आया
है।

34 फिर याहवे का संदेश मुझे मिला,
2 हे मनुष्य की सन्तान, इस्राएल के
चरवाहों के खिलाफ़ नबूवत करो, परमेश्वर
का कहना यह है कि चरवाहे अपना पेट भर
रहे हैं, उन्हें भेड़ों की देखरेख करनी चाहिये।
3 तुम लोग चर्बी खाते, ऊन पहनते और मोटे-
मोटे जानवरों को खाते हो। तुम उन्हें चराते
नहीं हो। 4 तुमने बीमारों की देखरेख नहीं की,
न ही उन्हें अच्छा किया। उनके ज़ख्मों पर
पट्टी नहीं बान्धी। तुम निकाली हुई को वापस
न लाए, न खोई हुई को ढूँढा, लेकिन तुम ज़ोर
ज़बरदस्ती करते रहे। 5 चरवाहों के न होने के
कारण वे भटक चुकी हैं। वे सभी पहाड़ों और
ऊँचे-ऊँचे टीलों पर भटकती थीं। 6 मेरी भेड़-
बकरियाँ तितर- बितर हो चुकी हैं। न ही उन्हें
कोई ढूँढता है, न ही उनकी भलाई के बारे में
सोचता है। 7 इसलिए हे चरवाहो, याहवे की
बात सुनो। 8 उनका कहना है, " मेरी भेड़-
बकरियाँ जो लुट गई, और जिन्हें जंगली
जानवर खा गए।उन्होंने उनकी देखभाल नहीं
की। उन्होंने उनका नहीं लेकिन अपना पेट
भरा नहीं। 9 इसलिए हे चरवाहो, याहवे की
सुनो, 10 परमेश्वर का कहना है, " मै चरवाहों
के खिलाफ़ हूँ, मैं उनसे हिसाब किताब
लूँगा। फिर उन्हें चरवाही के लिए दूँगा। वे
फिर अपना पेट न भर पाएँगे।मैं अपनी भेड़-
बकरियाँ उनके मुँह से छुड़ाऊँगा 11 क्योंकि
परमेश्वर याहवे कहते हैं, देखो, मैं खुद
अपनी भेड़- बकरियों का इन्तज़ाम करूँगा
और उन्हें ढूढूँगा। 12 जैसे चरवाहा अपनी
भेड़-बकरियों में से भटकी हुई को फिर से
अपने झुन्ड में लाता है, वैसे ही मैं करूँगा।
जहाँ- जहाँ वे तित्तर- बित्तर हो गई थीं, उन्हें
वहाँ से ले आऊँगा। 13 मैं उन्हें देश-देश के
लोगों में से निकालूँगा और इकट्ठा करूँगा
और उनकी अपनी ज़मीन पर वापस लाऊँगा।
उन्हें इस्राएल के पहाड़ों पर और नालों में
और उस देश के सभी बसे हुए जगहों में
चराऊँगा। 14 मैं उन्हें हरी चराईयों में ले

जाऊँगा और वे हरियाली में बैठा करेंगी। उन्हें बढ़िया से बढ़िया चारा मिलेगा। 15 मैं स्वयं ही उनका गढ़रिया ठहरूँगा। मैं खुद उन्हें बैठाऊँगा। 16 मैं खोई हुई को ढूढूँगा और निकाली हुई को वापस लाऊँगा। मैं घायल के घाव पर पट्टी लगाऊँगा और बीमार को ताकतवार बनाऊँगा। जो बलवन्त और मोटी हैं, उन्हें बर्बाद करूँगा। इन्साफ के साथ मैं उनकी चरवाही करूँगा। 17 हे मेरे झुण्ड प्रभु तुम से कह रहे हैं, कि वह एक भेड़ और दूसरी भेड़ तथा मेढ़ों के बीच इन्साफ करूँगा। 18 क्या अच्छी चराईयों में चरना तुम्हारे लिए हल्की बात है , या झरने का साफ पानी पीना हल्की बात है कि बचे हुए को अपने पैरों से गंदा करो 19 क्या मेरी भेड़ों को तुम्हारे पैरों के रौंदे हुए को चरना और तुम्हारे पैरों से गंदले किये हुए को पीना पड़ेगा ? 20 इसलिए प्रभु उन लोगों से यह कहते हैं:देखो मैं हाँ मैं ही मोटी और कमज़ोर भेड़ों के बीच इन्साफ करूँगा। 21 क्योंकि तुम बाजू और कन्धे से धक्का देते और अपने सींगों से सभी कमज़ोर को तब तक ढकेलते हो, जब तक तुमने उन्हें तितर बितर न कर दिया हो। 22 इसलिए मैं अपनी रेवड़ को छुड़ाऊँगा और वे फिर शिकार न बनेंगी और मैं भेड़-भेड़ के बीच इन्साफ करूँगा। 23 फिर मैं उन पर चरवाहे अर्थात अपने दास दाऊद को ठहराऊँगा जो उन्हें चराया करेगा। वह खुद उन्हें चराएगा वरन उनका चरवाहा होगा। 24 और मैं याहवे उनका परमेश्वर ठहरूँगा और मेरा दास दाऊद उनमें प्रधान होगा, यह मेरा कहना है। 25 उनके साथ मैं शन्ति की वाचा बन्धूँगा और देश से खूँखार जानवरों को निकाल दूँगा, जिससे कि वे जंगल में ठीक ठाक रह सकें और सो सकें। 26 मैं उन्हें और अपनी पहाड़ी के आसपास के इलाके को आशीष का ज़रिया बनाऊँगा और ठहराए मौसम में बरसात, हाँ, आशीष की बरसात होगी। 27 मैदान के पेड़ों में भी फल लगेंगे, ज़मीन की पैदावार बढ़ेगी और वे अपने देश में हिफाज़त से रहेंगे। जब मैं उनके जूए को तोड़कर उनको उनके हाथ से छुड़ा लूँगा, जिन्होंने उनको दास बनाया थ, तब वे जान सकेंगे कि मैं याहवे हूँ। 28 फिर वे देश-देश के शिकार न बनेंगे और न दुनिया के जानवर उन्हें निगलेंगे, लेकिन वे मज़े से रहेंगे और उन्हें कोई डरा न सकेगा। 29 मैं उनको बढ़िया उपज दूँगा, ताकि उसके बाद कभी आकाल से परेशानी में न पड़ें। 30 तब वे जान सकेंगे कि मैं याहवे उनका परमेश्वर उनके साथ हूँ और इस्राएल का घराना मेरी प्रजा है। 31 तुम मेरी भेड़ें, मेरी चरागाह की भेड़ें हो,तुम इन्सान हो और मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ।

35 याहवे का संदेश मुझे मिला, 2 "हे मनुष्य की सन्तान, अपना चेहरा सेईर की ओर करके उसके विरूद्ध भविष्यद्वाणी करो, 3 और उस से कहो, याहवे परमेश्वर यों कहते हैं, हे सेईर पहाड़, मैं तुम्हारे खिलाफ़ हूँ, और अपना हाथ तुम्हारे विरूद्ध बढ़ाकर तुम्हें उजाड़ डालूँगा। 4 मैं तुम्हारे नगरों को खण्डहर कर दूँगा, तब तुम जानोगे कि मैं याहवे हूँ। 5 क्योंकि तुम इस्त्राएलियों से आरम्भ ही से दुश्मनी रखते थे और उनकी मुसीबत के वक्त, जब उनकी बुराई की सज़ा का समय आ पहुँचा, तलवार से मारे जाने को दिया गया। 6 इसलिए परमेश्वर याहवे का कहना है, कि मैं तुम्हें हत्या किए जाने के लिए तैयार करूँगा और खून तुम्हारा पीछा करेगा। तुम तो खून से घिन नहीं करते थे, इसलिए खून तुम्हारा पीछा करेगा। 7 इस तरह से सेईर पहाड़ को उजाड़ कर डालूँगा। जो कोई उसमें आता-जाता होगा, उसे भी मैं

बर्बाद करूँगा। 8 उसके पहाड़ों को मैं मारे हुए
लोगों से भर दूँगा। तुम्हारे टीलों, घाटियों और
सभी नालों में तलवार से मारे लोग गिरेंगे।
9 मैं तुम्हें युग-युग के लिए उजाड़ कर दूँगा।
तुम्हारे नगर फिर से बसाए नहीं जाएँगे। तब
तुम जान सकोगे, कि मैं याहवे हूँ। 10 क्योंकि
तुमने कहा है, कि ये दोनों जातियाँ और देश
मेरे होंगे और हम ही उनके मालिक हो जाएँगे,
हालांकि याहवे वहाँ थे। 11 इसलिए परमेश्वर
याहवे का कहना यह है, तुम्हारे गुस्से के
अनुसार मैं तुमसे व्यवहार करूँगा, और जब
मैं तुम्हारा न्याय करूँ, 12 तुम जानोगे, कि मुझ
याहवे ने तुम्हारी सारी तिरस्कार की बातें
सुनी हैं, जो तुमने इस्त्राएल के पहाड़ों के
बारे में कहीं थी, कि वे उजड़ गए, वे हम
ही को दिए गए हैं कि हम उन्हें खा डालें।
13 तुमने अपने मुँह से मेरे खिलाफ़ बड़ी-बड़ी
बातें कहीं। जो तुमने मेरे विरूद्ध कहा, वह भी
मैंने सुना है। 14 परमेश्वर याहवे कहते हैं, "जब
पूरी दुनिया में खुशी होगी, तभी मैं तुम्हें उजाड़
डालूँगा। 15 जिस तरह इस्त्राएल के घराने
के निज भाग के उजड़ जाने के कारण तुम
आनन्दित हुए, मैं भी तुमसे वैसा ही करूँगा।
हे सेईर के पहाड़, हे एदोम के सारे देश, तुम
नष्ट हो जाओगे। तब वे जान सकेंगे कि मैं
याहवे हूँ। "

36 हे मनुष्य की सन्तान, तुम इस्त्राएल
के पहाड़ों से भविष्यद्वाणी करके
कहो, हे इस्त्राएल के पहाड़ो याहवे का संदेश
सुनो, 2 परमेश्वर याहवे यों कहते हैं, दुश्मन ने
तुम्हारे बारे में कहा है, आहा! पुराने समय
के ऊँचे स्थान अब हमारे वश मे आ गए
हैं। 3 इस कारण भविष्यद्वाणी करके कहो,
परमेश्वर याहवे का कहना यह है,"यह सही
था कि तुम उजाड़े और कुचले गए, कि
तुम गैरयहूदी देशों के अधिकारी हो जाओ।
लुतरे और साधारण लोग तुम्हारे विरोध में
बेकार की बातें करते फिरते हैं 4 इसलिए, हे
इस्त्राएल के पहाड़ों, परमेश्वर की सुनो, वह
कहते हैं, अर्थात पहाड़ी और पहाड़ियों से,
नालों और घाटियों से, उजड़े हुए खण्डहरों
और निर्जन नगरों से जो चारों ओर के बचे
हुए देशों से लुट गए और उनकी हँसी का
कारण हो गए। 5 परमेश्वर याहवे कहते हैं,
मैंने अपनी जलन की आग में बचे हुए देशों
के और सारे एदोम के विरूद्ध में कहा है कि
जिन्होंने मेरे देश को अपने मन के पूरे आनन्द
और घमण्ड से अपने अधिकार में किया
है कि वह पराया होकर लूटा जाए। 6 इस
वजह से इस्त्राएल देश के बारे में नबूवत
करके पहाड़ों, पहाड़ियों, नालों और तराईयों
से कहो, परमेश्वर यह कहते हैंः देखो, तुमने
देशों की बदनामी सही है, इसलिए मैं बहुत
गुस्से में बोला हूँ। 7 परमेश्वर याहवे कहते हैं,
मैंने वायदा कर लिया है कि जो देश तुम्हारे
चारों ओर हैं उन्हें खुद अपनी निन्दा सहनी
पड़ेगी। 8 लेकिन हे इस्त्राएल के पहाड़ों, तुम
पर डालियाँ पनपेंगी और उनके फल मेरी
प्रजा इस्त्राएल के लिए लगेंगे, क्योंकि उसका
लौट आना पास ही में है। 9 देखो, मैं तुम्हारे
पक्ष में हूँ और तुम्हारे ऊपर कृपा करूँगा और
तुम जोते-बोए जाओगे। 10 और मैं तुम पर
बहुत मनुष्य अर्थात इस्त्राएल के पूरे घराने
को बसाऊँगा और नगर फिर बसाए और
खण्डहर फिर से बनाए जाएँगे। 11 मैं तुम में
मनुष्य और जानवर दोनों ही को बढ़ाऊँगा।
वे बढ़ेंगे, फूले-फलेंगे और तुम लोग पहले
की तरह बसने पाओगे। मैं पहले से ज़्यादा
अपने भले काम तुम्हारे लिए करूँगा। इसी से
तुम्हें यह ज्ञान मिलेगा कि मैं याहवे हूँ। 12 मैं
ऐसा होने दूँगा कि तुम पर मेरे इस्राएली लोग
लोग चलें-फिरें और अपना हक जमाएँ, ताकि

तुम उनकी दौलत बन जाओ और फिर कभी
उन्हें निर्वंश न करे। 13 प्रभु याहवे कहते हैं,
तुम्हारे बारे में यह मशहूर है कि तुम इन्सानों
को निगल जाते हो, और तुमने लोगों को
निर्वंश कर डाला है। 14 इसलिए अब तुम
फिर भविष्य में मनुष्यों को न निगलोगे और
न अपने लोगों को निर्वंश करोगे, यह प्रभु
याहवे कह रहे हैं 15 मैं तुम्हें दूसरे देशों की
बदनामी करने वाली बातों को न सुनने दूँगा।
तुम्हें फिर लोगों से शर्म भी न सहनी पड़ेगी।
न ही तुम्हारे लोग फिर कभी ठोकर खाएँगे,
प्रभु का यह वचन है। 16 तब प्रभु ने मुझे
यह संदेश दिया, 17 हे मनुष्य की सन्तान,
जब इस्त्राएल का घराना अपने ही देश में
रहा करता था, तब उन्होंने अपने चरित्र और
कामों से उसे अशुद्ध किया। उनका चरित्र एक
ऐसी महिला की तरह था, जिसके मासिक
धर्म के समय अशुद्ध रक्त बहता है। 18 इन
लोगों ने खून-खराबे और मूर्तियों से अशुद्ध
किया, इसलिए मैंने अपना गुस्सा उन पर
उण्डेल दिया है। 19 मैंने उन्हें तमाम देशों
में बिखरा दिया है। उनके चालचलन और
कामों के अनुसार मैंने उनका इन्साफ किया।
20 जब वे उन देशों में पहुँचे, तब उन्होंने मेरे
पवित्र नाम को अपवित्र किया। उनके बारे
में ऐसा कहा जाता था, कि यह प्रभु की प्रजा
है, फिर भी उनके देश से निकल आई है।
21 लेकिन मुझे अपने पवित्र नाम की चिन्ता
थी, जिसे इस्त्राएल के घराने ने उन देशों
में जहाँ भी वे गए, अपवित्र ठहराया था।
22 इसलिए इस्त्राएल के घराने से कह दो,
कि प्रभु याहवे कहते हैं : हे इस्त्राएल के
घराने, मैं तुम्हारे लिए नहीं, लेकिन अपने उस
पवित्र नाम के कारण कुछ करने जा रहा
हूँ, जिसे तुमने उन देशों के बीच अपवित्र
ठहराया, जहाँ तुम गए। 23 मैं अपने महान
नाम को, पवित्र नाम को सिद्ध करूँगा, जो
तमाम देशों के बीच अपवित्र किया गया है
और जिसे तुमने उनके बीच अपवित्र किया
है। जब मैं उनकी दृष्टि में तुम्हारे बीच अपने
पवित्र नाम को सिद्ध करूँगा तब वे जान लेंगे
कि कि मैं याहवे हूँ। 24 क्योंकि मैं तुम्हें उनके
देशों से इकट्ठा करूँगा और तुम्हें तुम्हारे देश
में पहुँचा दूँगा। 25 तब मैं तुम्हारे ऊपर शुद्ध
पानी छिड़कूँगा और तुम्हारी अशुद्धता जाती
रहेगी। मैं तुम्हें सारी अशुद्धता और मूर्तियों
से साफ करूँगा। 26 मैं तुम्हें एक नया दिल
दूँगा और तुम्हारे अन्दर एक नई आत्मा पैदा
करूँगा। मैं तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय
निकालकर गोश्त का दिल दूँगा। 27 मैं अपना
आत्मा तुम में डालूँगा और अपने रास्ते पर
चलाऊँगा और तुम मेरे नियमों को सावधानी
से मानोगे। 28 जो देश मैंने तुम्हारे पूर्वजों को
दिया था, तुम उसमें बसोगे, तब तुम मेरे लोग
होगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर। 29 मैं तुम्हें सारी
अशुद्धता से छुटकारा दूँगा और अनाज उगने
का आदेश देकर उसे बढ़ाऊँगा और तुम्हारे
यहाँ अकाल न पड़ने दूँगा। 30 मैं पेड़ों के फल
और खेत का उत्पादन बढ़ाऊँगा, कि देशों
में अकाल के कारण तुम्हारी बदनामी फिर
न हो। 31 तब तुम अपने बुरे चालचलन और
बुरे कामों को याद करके अपने अधर्म और
घिनौने कामों के कारण अपने आपसे नफरत
करोगे। 32 परमेश्वर याहवे कहते हैं, कि यह
सब मैं तुम्हारे लिए नहीं करता हूँ। हे इस्त्राएल
के घराने अपने चालचलन के बारे में शर्मिन्दा
हो। 33 परमेश्वर याहवे कहते हैं, जब मैं
तुम्हें तुम्हारे बुरे कामों से शुद्ध करूँगा, तब
तुम्हारे नगरों को बसाऊँगा। तुम्हारे खण्डहर
फिर से बसाए जाएँगे। 34 तुम्हारा देश जो
आज सभी के सामने उजाड़ है, एक दिन
जोता-बोता जाएगा। 35 लोग कहेंगे, कि यह

देश जो उजाड़ था, अदन के बगीचे के
समान हो गया है। जो नगर खण्डहर हो
चुके थे, ढाए गए थे, वे फिर बसाए गए
हैं। 36 तब जो राष्ट्र तुम्हारे आस-पास होंगे,
जान जाएँगे कि मुझ याहवे ने ढाए हुए को
बनाया है। वहाँ पेड़ लगाए हैं। यह मेरी कही
बात है और मै ऐसा करूँगा। 37 परमेश्वर
कहते हैं," इस्त्राएल के घराने में फिर मुझसे
बिनती की जाएगी कि मैं उनके लिए यह
करूँ, अर्थात मैं उनमें लोगों की संख्या
भेड़-बकरियों की तरह बढ़ाऊँ। 38 जैसे पवित्र
समयों की भेड़-बकरियाँ, अर्थात निश्चित
समय के त्यौहारों के समय यरूशलेम की
भेड़ बकरियाँ असंख्य होती हैं, वैसे ही जो
नगर अब खण्डहर हैं, वे अनगिनित मनुष्यों
के झुण्डों से भर जाएँगे, तभी वे जान सकेंगे
कि मैं याहवे हूँ। '

37 याहवे का बल मुझ पर आया और
उनका आत्मा मुझ में समाया और
बाहर ले गया, और मुझे घाटी के बीच खड़ा
कर दिया। यह घाटी हड्डियों से भरी हुई थी।
2 तब उसने मुझे उनके चारों ओर घुमाया।
घाटी की तह पर ढेर सारी हड्डियाँ थीं। सभी
हड्डियाँ सूखी हुई थीं। 3 तब वह मुझ से बोला,
हे मनुष्य की सन्तान, क्या ये हड्डियों में जीवन
आ सकता है? मैंने कहा, हे परमेश्वर आपको
ही मालूम है। 4 तब उन्होंने मुझ से कहा,
इन हड्डियों से भविष्यद्वाणी करके कहो, हे
सूखी हड्डियों, याहवे के शब्द सुनो। 5 परमेश्वर
तुम से कह रहे हैं," देखो, मैं आप तुम
में सांस समवा दूँगा और तुम में जान आ
जाएगी। 6 और मैं तुम्हारी नसें पैदा करके
मांस चढ़ाऊँगा, और फिर खाल से ढकूँगा।
तुम में मांस आ जाएगा और जीने के बाद,
जानोगी, कि मैं याहवे हूँ।" 7 इस आदेश के
अनुसार मैं भविष्यद्वाणी करने लगा, तभी एक
आहट आई और भूकम्प आया और वे हड्डियाँ
इकट्ठी हो गई। 8 मेरी आँखों के सामने, नसें
पैदा हुईं, मांस चढ़ गया और ऊपर खाल
भी आ गई, लेकिन उनमें सांस नहीं थी।
9 तब परमेश्वर ने मुझ से कहा," हे मनुष्य की
सन्तान, सांस और मांस भविष्यद्वाणी करो
और कहो, हे सांस परमेश्वर याहवे कहते हैं,
कि चारों दिशाओं से आकर इन घात किए
हुओं में समा जाओ, कि ये जी उठें। 10 उनके
इस आदेश के अनुसार मैंने भविष्यद्वाणी की,
तब सांस उनमें आ गई और वे जीकर अपने
पांव के बल खड़े हो गए और एक बड़ी फौज
बन गई है।" 11 फिर उसने मुझ से कहा, "हे
मनुष्य की सन्तान, ये हड्डियाँ इस्त्राएल के पूरे
घराने की उपमा हैं। वे कहते हैं, हमारी आशा
जाती रही, हम पूरी तरह से कट चुके हैं।"
12 इसलिए भविष्यद्वाणी करके उनसे कहो,
परमेश्वर याहवे यों कहते हैं,' हे मेरी प्रजा
के लोगों, देखो, मैं तुम्हारी कबरें खोलकर
तुमको उनसे निकालूँगा और इस्त्राएल के
देश में पहुँचा दूँगा। 13 इसलिए जब मैं तुम्हारी
कबरें खोलकर, तुमको उनसे निकालूँगा तब
हे मेरी प्रजा के लोगों, तुम्हें यह मालूम हो
जाएगा कि मैं याहवे हूँ। 14 मेरा आत्मा तुम
में आ जाएगा,? तुम जिओगे, तुम्हें तुम्हारे
देश में बसाया जाएगा। तब तुम्हें यह ज्ञान
हो जाएगा कि जो मैंने कहा वह किया भी।'
15 एक दिन फिर मुझे प्रभु ने संदेश दिया 16 "हे
यहेजकेल, एक लकड़ी लेकर उस पर लिख,
यहूदा की और उसके संगी इस्त्राएलियों की;
दूसरी लकड़ी पर लिखो, यूसुफ की अर्थात
एप्रैम की, और उसके संगी इस्त्राएलियों की
लकड़ी। 17 फिर उन लकड़ियों को एक दूसरी
से जोड़कर एक ही कर लो कि वे तुम्हारे हाथ
में एक ही लकड़ी बन जाएँ। 18 जब तुम्हारे
लोग तुम से पूछें, क्या तुम हमें न बतलाओगे,

कि इन का मतलब क्या है? 19 तब उन्हें
जवाब देना कि परमेश्वर यह कहना चाहते
हैं कि वह यूसुफ की लकड़ी को जो एप्रैम के
हाथ में है, और इस्त्राएल के जो गोत्र उसके
संगी हैं, उनको लेकर यहूदा की लकड़ी से
जोड़कर उसके साथ एक ही लकड़ी कर
देंगे और दोनों उनके हाथ में एक ही लकड़ी
बनेंगे। 20 हाँ, जिन लकड़ियों पर तुम ऐसा
लिखोगे, वे उनके साम्हने तुम्हारे हाथ में रहें।
21 तुम उन लोगों से कहो, परमेश्वर याहवे
कहते हैं, देखो, मैं इस्त्राएलियों को उन देशों
में से लेकर जिन में वे चले गए हैं, चारों
ओर से इकट्ठा करूँगा और उनके अपने देश
में पहुँचाऊँगा। 22 मैं उन्हें उस देश अर्थात
इस्त्राएल के पहाड़ों पर एक ही कर दूँगा,
और उन सभी का एक ही शासक होगा। फिर
वे दो न होंगे और न दो राज्यों में बटेंगे, 23 वे
फिर अपनी मूरतों, और घिनौने कामों और
अपने किसी प्रकार के गुनाह के द्वारा अपने
को अशुद्ध न करेंगे, लेकिन मैं उनको उन
सभी बस्तियों से जहाँ वे अपराध करते थे
निकालकर शुद्ध करूँगा, और वे मेरी प्रजा
होंगे और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा। 24 मेरा
सेवक उनका राजा होगा। उन सभी का एक
चरवाहा होगा। वे मेरे बताए गए रास्ते पर
चलेंगे। 25 वे उस देश में रहेंगे , जिसे मैंने
अपने दास याकूब को दिया था, और जिसमें
तुम्हारे पूर्वज रहा करते थे, उसी में वे और
उनके बेटे- पोते सदा रहेंगे और मेरा दास
हमेशा तक उनका मुखिया रहेगा। 26 उनके
साथ मैं शान्ति की वाचा बान्धूँगा; वह सदा
की वाचा होगी; और मैं उन्हें जगह देकर
बढ़ाऊँगा। उनके बीच मैं अपना पवित्र स्थान
सदा बनाए रखूँगा। 27 मेरे निवास का तम्बू
उनके ऊपर तना रहेगा। मैं उनका परमेश्वर
होऊँगा, वे मेरी प्रजा होंगे। 28 जब मेरा पवित्र
स्थान उनके बीच सदा के लिए रहेगा, तब
सभी देश जान लेंगे कि मैं याहवे इस्राएल का
पवित्र करनेवाला हूँ।

38 फिर याहवे का यह संदेश मुझे
मिला, 2 “हे मनुष्य की सन्तान,
अपने चेहरे को मागोग देश के गोग की
दिशा में करके, जो रोश, मेशेक और तूबल
का प्रधान है, उसके खिलाफ़ नबूवत करो।
3 तुम्ह कहो : हे रोश, मेशेक और तूबल के
प्रधान, परमेश्वर का कहना है, कि वह तुम्हारे
विरूद्ध हैं। 4 वह तुम्हें घुमा ले आएँगे और
तुम्हारे जबड़ों में आंकड़े डालकर निकाल
लाएँगे। वह तुम्हारी पूरी फौज को भी अर्थात
घोड़ों और सवारों को जो सब के सब कवच
पहने हुए एक बड़ी भीड़ है, जो फरी और
ढाल लिए हुए सब के सब तलवार चलाने
वाले होंगे, 5 उनके संग फारस, कूश और
पूत को, जो सब के सब ढाल लिए और
टोप लगाए होंगे। 6 और गोमेर और उसके
सभी दलों को और उत्तर दिशा के दूर-दूर
देशों के तोमर्गा के घराने उसके सारे दलों को
निकालेंगे। तुम्हारे साथ बहुत से देशों के लोग
होंगे। 7 इसलिए तुम तैयार हो जाओ। तुम
और तुम्हारे साथ की भीड़ तैयार रहे और तुम
उनका मार्गदर्शन करना। 8 काफी समय बीत
जाने पर तुम्हें याद किया जाएगा। आखिर के
दिनों में तुम उस देश में आओगे, जहाँ तलवार
का बोलबाला न होगा। उसमें रहने वाले
बहुत से देशों में से इकट्ठा किए जाएँगे। तुम
इस्त्राएल के पहाड़ों पर आओगे, जो हमेशा
खण्डहर रहे हैं। लेकिन वे देश-देश के लोगों
के बन्धन से मुक्त किए जाएँगे और बिना
डर के रहेंगे। 9 तुम हमला करोगे और आँधी
की तरह आओगे और अपने सभी दलों और
बहुत देशों के लोगों सहित बादल की तरह
देश पर छा जाओगे।” 10 परमेश्वर कहते हैं,

कि उस दिन तुम्हारे मन में बुरी योजना पैदा
होगी। 11 तुम कहोगे कि बिना शहरपनाह
के गाँवों के देश पर हमला करूँगा। मैं उन
लोगों के पास जाऊँगा, जो चैन से बेखबर
रहते हैं। जो सब के सब बिना शहरपनाह
और बिना बेड़ों और पल्लों के बसे हुए हैं,
12 ताकि छीनकर तुम उन्हें लूटो और अपना
हाथ उन खण्डहरों पर बढ़ा सको, जो फिर
से बसाए गए, और उन लोगों के विरूद्ध फेरे
जो देशों में से इकट्ठे हुए थे और पृथ्वी की
नाभि पर बसे हुए पशु और दूसरी दौलत
रखते हैं। 13 शबा, ददान के लोग और तर्शीश
के व्यापारी अपने देश के सभी जवान शेरों
सहित तुम से कहेंगे, क्या तुम लूटने के लिए
आ रहे हो? क्या तुमने धन छीनने, सोना
चाँदी उठाने, जानवर और दूसरी दौलत ले
जाने और बड़ी लूट अपना लेने को अपनी
भीड़ इकट्ठी की है? 14 इसलिए, यहेजकेल,
भविष्यद्वाणी करके गोग से कहो,‘ परमेश्वर
का कहना है, जिस समय मेरी प्रजा इस्त्राएल
बिना डर बसी रहेगी, क्या तुम्हें इसकी खबर
न लगेगी। 15 तुम उत्तर दिशा की दूर-दूर
जगहों से आओगे। तुम और तुम्हारे साथ
बहुत से देशों के लोग, जो सब के सब
घोड़ों पर बैठे हुए होंगे, अर्थात एक बड़ी
भीड़ और ताकतवर फौज। 16 जैसे बादल
पृथ्वी पर छा जाता है, वैसे ही तुम मेरी
प्रजा इस्त्राएल के देश पर ऐसे चढ़ाई करोगे।
इसलिए हे गोग, अन्त के दिनों में मैं तुमसे
अपने देश पर इसलिए चढ़ाई करवाऊँगा,
कि जब मैं देशों के देखते तुम्हारे द्वारा अपने
को पवित्र ठहराऊँ, तब वे मुझे पहचान
लेंगे।‘ 17 प्रभु कहते हैं, “क्या तुम वही नहीं
जिसके बारे में प्राचीनकाल में अपने दासों
के, अर्थात इस्त्राएल के उन भविष्यद्वक्ताओं
द्वारा बातें की थी, जो उस समय में सालों
तक भविष्यद्वाणी करते गए, कि याहवे
गोग से इस्त्राएलियों पर हमला करवाएँगे।
18 जिस दिन इस्त्राएल देश पर गोग हमला
करेगा, उसी दिन मेरा गुस्सा मेरे मुँह से
प्रगट होगा। 19 मैंने गुस्से में कहा, बेशक
उस दिन इस्त्राएल में बड़ा भूकम्प आएगा।
20 मेरे दर्शन से समुन्दर की मछलियाँ और
आकाश की चिड़ियाँ, मैदान के जानवर और
जितने पृथ्वी पर रेंगते हैं, और दुनिया के
जितने लोग भी रहते हैं, काँपने लगेंगे, पहाड़
गिराए जाएँगे और चढ़ाईयाँ बर्बाद होगी।”
21 प्रभु का कहना है, कि वह उनके विरूद्ध
तलवार चलाने के लिए अपने सभी पहाड़ों
को पुकारेंगे और हर एक तलवार उसके भाई
के खिलाफ़ उठेगी। 22 वह मरी और खून के
द्वारा उससे मुकद्मा लड़ेंगे और उस पर और
उसके दलों पर और उन बहुत देशों पर जो
उसके पास होंगे, वह बड़ी झड़ी लगाएँगे
और ओले, आग और गन्धक बरसाएँगे।
23 वह कहते हैं,“ इस तरह मैं अपने को महान
और पवित्र ठहराऊँगा और बहुत से देशों के
साम्हने अपने को प्रगट करूँगा। तब उन्हें
मालूम पड़ जाएगा, कि मैं याहवे हूँ।”

39 हे मनुष्य की सन्तान, गोग के
खिलाफ़ में नबूवत करके कहो, हे
गोग, हे रोश, मेशेक और तूबल के प्रधान
परमेश्वर याहवे तुम्हारे विरोध में हैं। 2 उनका
कहना है कि मैं तुम्हें घुमा ले आऊँगा और
उत्तर दिशा के दूर-दूर देशों से चढ़ा कर ले
आऊँगा। मैं इस्राएल के पहाड़ों पर पहुँचा
दूँगा। 3 वहाँ मैं तुम्हारा धनुष तुम्हारे बाएँ
हाथ से गिराऊँगा। 4 तुम अपने सारे झुंड और
अपने साथ के सभी देशों सहित इस्राएल के
पहाड़ों पर मारे जाओगे। मैं तुम्हें तरह-तरह
के मांस खाने वाले पक्षियों, और जंगल के
जानवरों का खाना बना दूँगा। 5 तुम खेत में

गिरोगे, क्योंकि मैं ऐसा कह चुका हूँ, यह प्रभु
कहते हैं। 6 मैं मागोग के और द्वीपों के निडर
रहनेवालों के बीच आग लगाऊँगा, और वे
जानेंगे कि मैं याहवे हूँ, 7 अपनी प्रजा इस्राएल
के बीच मैं अपना नाम प्रगट करूँगा, और
अपना पवित्र नाम फिर से अपवित्र न होने
दूँगा, तब देश-देश के लोग जान सकेंगे कि
मैं, याहवे, इस्राएल का पवित्र हूँ। 8 इसलिए
कि मैं यह कह चुका हूँ, ऐसा होगा ही। 9 तब
इस्राएल के नगरों के निवासी घर से बाहर
हथियारों को जला डालेंगे। वे लोग सात
साल तक ढाल, फरी, धनुष, तीर, लाठी और
बर्छे को जलाते रहेंगे। 10 इस वजह से उनको
मैदान से जलाने के लिए लकड़ी नहीं बिननी
पड़ेगी। न ही जंगल को काटने की ज़रूरत
पड़ेगी। वे अपने लूटनेवालों को लूटेंगे और
अपने छीननेवालों से छीनेंगे। 11 उस समय मैं
गोग को इस्राएल के देश में कब्रिस्तान दूँगा,
वह तालाब के पूर्व में होगा। वह आने जाने
वालों की घाटी कहलाई जाएगी। आने जाने
वालों को वहाँ रूकना पड़ेगा। वहाँ सारी
भीड़ सहित गोग को मिट्टी दी जाएगी। और
उस जगह का नाम गोग की भीड़ की तराई
डाल दिया जाएगा। 12 इस्राएल का घराना
उनको सात महीने तक मिट्टी देता रहेगा ताकि
अपने देश को साफ कर सके। 13 देश के सभी
लोग मिलकर उनको मिट्टी देंगे, और जिस
समय मेरी महिमा होगी; उस समय भी उनका
नाम बड़ा होगा। यह परमेश्वर कह रहे हैं।
14 तब वे मनुष्यों को ठहराएँगे जो हर समय,
इसी काम में लगे रहेंगे अर्थात देश में घूमघाम
कर आने-जाने वालों के संग होकर देश को
शुद्ध करने के लिए उन्हें जो ज़मीन के ऊपर
पड़े हों दफनाएँगे। और सात महीनों के समाप्त
हो जाने तक वे ढूँढ़-ढूँढ़कर यह काम करते
रहेंगे। 15 और देश में आने-जाने वालों में से
जब कोई मनुष्य की हड्डी देखे, तब उसके
पास एक निशान खड़ा करेगा, यह उस समय
तक बना रहेगा, जब तक दफनाने वाले उसे
गोग की भीड़ की तराई में गाड़ न दें। 16 वहाँ
के नगर का नाम भी हमोना है। इस तरह
देश शुद्ध किया जाएगा। 17 फिर हे मनुष्य की
सन्तान, परमेश्वर कहते हैं, तरह-तरह के सभी
पक्षियों और जंगल के जानवरों को आज्ञा दो,
कि वे इकट्ठे होकर आएँ और इस बड़े यज्ञ
में जो पहाड़ों पर करता हूँ, हर एक दिशा
से इकट्ठे होकर मांस खाएँ और खून पिएँ।
18 तुम बहादुर लोगों का मांस खाओगे और
पृथ्वी के प्रधानों का खून पिओगे। तुम मेढ़ों,
मेमनों, बकरों और बैलों का भी जो सब के
सब बाशान के तैयार किए हुए होगे। 19 और
मेरी उस दावत की चर्बी से जो मैं तुम्हारे
लिए करता हूँ, तुम खाते-पीते अघा जाओगे
और उसका खून पीते-पीते थक जाओगे।
20 मेरी मेज पर घोड़ों, सवारों, शूरवीरों और
हर तरह के फौजियों से तृप्त हो जाओगे।
21 और मैं देश-देश के बीच अपनी महिमा
को दिखाऊँगा। देश-देश के सभी लोग मेरे
न्याय के काम को जो मैं करूँगा, और मेरा
हाथ जो उन पर पड़ेगा, देख लेंगे। 22 उस दिन
के बाद इस्राएल के घराने को मालूम पड़ेगा
कि, याहवे परमेश्वर उन्ही के है? 23 और
देश-देश के लोग भी जान सकेंगे, कि इस्राएल
का घराना अपनी बुराईयों के कारण गुलामी
में गया था। इसलिए कि उन्होंने मेरे साथ
दगाबाज़ी की, मैंने अपना चेहरा उनसे मोड़
लिया। मैंने उन्हें उनके दुश्मन के अधिकार
में कर दिया और वे सभी तलवार से मारे
गए। 24 मैंने उनकी अशुद्धता और गुनाहों ही
के अनुसार उनसे बर्ताव करके उनसे अपना
चेहरा मोड़ लिया 25 इसलिए प्रभु का कहना
यह है, अब मैं याकूब को गुलामी से वापस

लाऊँगा और इस्राएल के पूरे घराने पर दया करूँगा। मुझे मेरे पवित्र नाम के लिए जलन होगी। 26 तब उस सारी दगाबाजी के कारण जो उन्होंने मेरे साथ की, उन्हें शर्म लगेगी और अपने देश में बिना किसी डर के रहेंगे और कोई उन्हें डरा न सकेगा 27 तब मैं उन्हें देश-देश के बीच से वापस ले आऊँगा और उन दुश्मनों के देशों में इकट्ठा करूँगा, तब मैं बहुत से देशों की निगाह में उनके द्वारा पवित्र ठहरूँगा। 28 तब उनको मालूम पड़ेगा कि याहवे हमारे परमेश्वर हैं, क्योंकि मैने उनको देश-देश में गुलाम करके फिर उनके अपने देश में इकट्ठा किया उनमें से किसी को भी मैं फिर परदेश में न छोड़ूँगा। 29 और उनसे फिर अपना चेहरा फिर कभी मोड़ूँगा नहीं, क्योंकि मैंने इस्राएल के घराने पर अपना आत्मा उण्डेला है, यह परमेश्वर की वाणी है।

40 हमारी गुलामी के पच्चसीवें साल अर्थात यरूशलेम नगर के लिए जाने के बाद चौदहवें साल के पहले महीने के दसवें दिन को, याहवे की शक्ति मुझ पर आई और उसने मुझे वहाँ पहुँचाया। 2 अपने दर्शनों में परमेश्वर ने मुझे इस्राएल के देश में पहुँचाया और वहाँ एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर खड़ा किया, जिस पर दक्षिण ओर मानो किसी नगर का आकार था। 3 जब वह मुझे वहाँ ले गए, तो मैंने पीतल का रूप रखे हुए और हाल में सन का फीता और नापने का बांस लिए हुए, एक आदमी फाटक के पास खड़ा हुआ है। 4 वह आदमी मुझसे बोला,“ हे मनुष्य की सन्तान, अपनी आँखों से देखो और कानों से सुनो और जो कुछ मैं तुम्हें दिखाऊँगा, उस पर ध्यान देना। तुम्हें यहाँ इसलिए पहुँचाया गया है, कि मैं तुम्हें यह सब दिखा सकूँ और जो कुछ तुम देखते हो, वह इस्राएल को बतलाना 5 देखो, भवन के बाहर चारों ओर एक दीवार थी। उस आदमी के हाथ में नापने का बाँस था, जिसकी लम्बाई ऐसे छै: हाथ की थी, जो साधारण हाथों से चौवा भर अधिक है, इसलिए उसने दीवार की मोटाई नापकर बाँस भर की थी। 6 तब वह उस फाटक के पास आया, जिसका मुँह पूरब की ओर था और उसकी सीढ़ी पर चढ़कर नापकर एक एक बाँस भर की पाई 7 पहरे वाली कोठरियाँ बाँस भर लम्बी और बाँस भर चौड़ी थी, और दो-दो कोठरियों का अन्तर पांच हाथ का था। फाटक की डेवढ़ी जो फाटक के ओसारे के पास भवन की ओर थी, वह भी बाँस भर की थी। 8 तब उसने फाटक का वह ओसारा जो ईमारत के सामने था, नापा और उसे भी बाँस भर का पाया। 9 उसने फाटक का ओसारा नापा और आठ हाथ का पाया और उसके खम्भे दो-दो हाथ के पार और फाटक का ओसरा ईमारत के सामने था। 10 पूर्व फाटक की दोनों ओर तीन-तीन पहरे वाली कोठरियाँ थीं, जो सभी एक ही नाप की थी और दोनों ओर के खम्भे भी एक ही नाप के थे। 11 फिर उसने फाटक के दरवाजे की चौड़ाई नापी और उसे दस हाथ पाया। फाटक की लम्बाई तेरह हाथ की थी। 12 और दोनों ओर की पहरे-वाली कोठरियों के आगे हाथ भर की जगह थी और दोनों ओर कोठरियाँ छ:छ: हाथ की थीं। 13 फिर उसने फाटक को एक ओर की पहरेवाली कोठरी की छत से लेकर दूसरी ओर की पहरेवाली कोठरी की छत तक नापकर पच्चीस हाथ की दूरी पाई। दरवाजे आमने-सामने थे। 14 फिर उसने साठ हाथ के खम्भे नाप, और आंगन, फाटक के आस पास, खम्भों तक था। 15 फाटक के बाहरी दरवाजे के आगे से लेकर उसके अन्दरूनी ओसारे के ओग से लेकर उसके अन्दरूनी ओसारे के आगे

तक पचास हाथ का अन्तर था। 16 पहरेवाली
कोठरियों में और फाटक के अन्दर चारों
ओर कोठरियों के बीच के खम्भे के बीच
बीच में तिलमिलीदार खिड़कियाँ थी। फाटक
के अन्दर के चारों खिड़कियाँ थीं, और हर
एक खम्भे पर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे।
17 तब वह मुझे बाहरी आंगन में ले गया।
उस आंगन के चारों ओर कोठरियाँ थीं। एक
फर्श थी, जिस पर तीस कोठरियां बनी थीं।
18 यह निचला फर्श फाटकों से लगा हुआ
था, और उनकी लम्बाई के अनुसार था।
19 फिर उसने निचले फाटक के सामने से
लेकर अन्दरूनी आंगन के बाहर के आगे
तक नापकर सौ हाथ पाए, वह पूरब और
उत्तर दोनों ओर ऐसे ही थी। 20 तब बाहरी
आंगन के उत्तरमुखी फाटक की लम्बाई और
चौड़ाई उसने नापी। 21 और उसकी दोनों ओर
तीन-तीन पहरेवाली कोठरियां थीं और इसके
भी खम्भों के ओसारे की नाप पहले फाटक
के अनुसार थी। इसकी लम्बाई पचास और
चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी। 22 इसकी भी
खिड़कियों और खम्भों के ओसारे, और
खजूरों की नाप, पूर्वमुखी, फाटक की सी थी,
और उस पर चढ़ने के लिए सात सीढ़ियाँ थीं।
उनके सामने इसका ओसारा था। 23 भीतरी
आंगन की उत्तर और पूर्व की ओर दूसरे
फाटकों के सामने फाटक थे और उसने
फाटकों की दूरी नापकर सौ हाथ की पाई।
24 फिर वह मुझे दक्षिण की ओर ले गया, और
दक्षिण की ओर एक फाटक था, उसने इसके
खम्भे और खम्भों का ओसारा नापकर इनकी
वैसी ही नाप पाई। 25 और उन खिड़कियों की
तरह इसके और इसके खम्भों के ओसारों के
चारों ओर भी खिड़कियाँ थी। इसकी लम्बाई
भी पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी।
26 इसमें भी चढ़ने के लिए सात सीढ़ियां थीं
और उनके सामने खम्भों का ओसारा था।
उसके दोनों ओर के खम्भों पर खजूर के
पेड़ खुदे हुए थे। 27 दक्षिण में भी भीतरी
आंगन का एक फाटक था। उसने दक्षिण
ओर के दोनों फाटकों की दूरी नापकर सौ
हाथ की पाई। 28 तब वह दक्खिनी फाटक
से होकर मुझे अन्दर के आंगन में ले गया,
और उसने दक्खिनी फाटक को नापकर वैसा
ही पाया। 29 इसकी भी पहरेवाली कोठरियां,
खम्भे और खम्भों का ओसारा, सभी वैसे
ही थे। इसके और इसके खम्भों के ओसारे
के भी चारों ओर खिड़कियाँ थीं। इसकी
लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ
की थी। 30 इसके चारों ओर के खम्भों का
ओसारा भी पच्चीस हाथ लम्बा और पचास
हाथ चौड़ा था। 31 इसका खम्भों का आयोग
बाहरी आंगन की ओर था। इसके खम्भों
पर भी खजूर के पेड़ खुदे हुए थे। इस पर
चढ़ने के लिए आठ सीढ़ियां थीं। 32 फिर वह
आदमी मुझे पूरब की ओर भीतरी आंगन में
ले गया, और जब उसे नापा तो, वैसा ही
पाया। 33 इसकी पहरेवाली कोठरियों और
खम्भे और खम्भों का ओसारा, सभी वैसे
ही थे। इसके और इसके खम्भों के ओसारे
के चारों ओर भी खिड़कियाँ थी। इसकी
लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की
थी। 34 इसका ओसारा भी बाहरी आँगन की
ओर था और उसके दोनों ओर के खम्भों
पर भी खजूर के पेड़ खुदे हुए थे। इस पर
चड़ने के लिए सीढ़ियाँ थीं 35 फिर उस पुरुष
ने मुझे उत्तरी फाटक के पास ले जाकर उसे
नापा और उसकी भी नाप वैसी ही पाई
36 उसके भी पहरेवाली कोठरियाँ और खम्भे
और उनक ओसारा था। उसके भी चारों
ओर खिड़कियाँ थीं 37 इसके खम्भे बाहरी
आंगन की ओर थे, उन पर दोनों ओर खजूर

के पेड़ खुदे हुए थे, उस में चढ़ने के लिए
आठ सीढ़ियाँ थीं। 38 फाटकों के पास के
खम्भों के पास दरवाज़े सहित कोठरी थी।
वहाँ होमबलि को धोते थे। 39 होमबलि,
अपराधबलि और दोशबाल के जानवरों को
मारे जाने के लिए फाटक के लिए फाटक
के ओसारे के पास उसके दोनों ओर दो
मेजें थी। 40 फाटक की एक बाहरी अलग
पर अर्थात उत्तरी फाटक के दरवाजे की
चढ़ाई पर दो मेजें थीं और उसकी दूसरी
बाहरी अलग पर भी, जो फाटक के ओसारे
पास थी, दो मेजें थीं। 41 फाटक की दोनों
अलगों पर चार-चार मेजें थी। कुल मिलाकर
आठ मेजें थी, जो बलिपशु बध करने के
लिए थीं। 42 फिर होमबलि के लिए तराशे
हुए पत्थर की चार मेजें थीं, जो हाथ लम्बी
डेढ़ हाथ चौड़ी और हाथ भर ऊँची थी।
उन पर होमबलि और मेलबलि के जानवरों
को बध करने के हथियार रखे जाते थे।
43 अन्दर चारों ओर चौवे भर की अंकड़ियाँ
लगी थीं और मेजों पर चढ़ावे का गोश्त
रखा हुआ था। 44 भीतरी आंगन केउत्तरी
फाटक के अलग के बाहर गाने वालों की
कोठरियाँ थी, जिसके द्वार दक्खिन की ओर
थे। पूर्वी फाटक की अलग पर एक कोठरी
थी, जिसका दरवाज़ा उत्तर की ओर था।
45 वह मुझे बोला, “यह कोठरी जिसका
दरवाज़ा दक्षिए की ओर है, उन पुरोहितों के
लिए है, जो इमारत की चौकीदारी करते हैं।
46 और जिस कोठरी का दरवाज़ा उत्तर की
ओर है, वह उन पुरोहितों के लिए है जो वेदी
की देखभाल करते हैं। ये लोग सादोक की
सन्तान हैं। लेवियों में से याहवे की सेवा
करने को केवल ये ही उसके पास जाते
हैं।” 47 फिर उसने आंगन को नापकर उसे
चौकोना अर्थात सौ हाथ लम्बा और सौ हाथ
चौड़ा पाया, और ईमारत के सामने वेदी थी।
48 वह मुझे ईमारत के ओसारे में ले गया और
ओसारे के दोनों ओर के खम्भों को नापकर
पाँच-पाँच हाथ का पाया। और दोनों ओर
फाटक की चौड़ाई तीन-तीन हाथ की थी।
49 ओसारे की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई
ग्यारह हाथ की थी। उस पर चढ़ने के लिए
सीढ़ियाँ थीं। दोनों और के खम्भों के पास
लाटें थी।

41 फिर वह मुझे मन्दिर के पास लाया,
उसके दोनों ओर के खम्भों को
नापा तो छः छः हाथ चौड़े पाया, यह तम्बू
की चौड़ाई थी। 2 और दरवाज़े की चौड़ाई
दस हाथ की थी। दरवाज़े की दोनों अलंगे
पांच-पांच हाथ की थीं। उसने मन्दिर की
लम्बाई तो चालीस हाथ की और उसकी
चौड़ाई बीस हाथ की पाई। 3 तब उसने
अन्दर जाकर दरवाज़े के खम्भों को नापा
और दो-दो हाथ का पाया। दरवाज़े की
चौड़ाई सात हाथ की थी। 4 तब वह अन्दर
गया और नाप-जोख की। बाद में मालूम पड़ा
कि ईमारत की लम्बाई और चौड़ाई मन्दिर
के सामने बीस-बीस हाथ की थी। उसने मुझे
बताया कि वह परमपवित्र स्थान है। 5 फिर
उसने ईमारत की दीवार को नापा तो पाया
कि वह छः हाथ की है। ईमारत के आस-पास
चार-चार हाथ चौड़ी बाहरी कोठरियाँ भी थीं।
6 ओर ये बाहरी कोठरियाँ तीन मंजिल वाली
थीं। एक-एक महल में तीस कोठरियाँ थीं।
इमारत के आस-पास की दीवार इसलिए थी,
कि बाहरी कोठरियाँ उसके सहारे में हो।
उसी में कोठरियों की कड़ियाँ बैठाई हुई थीं
और ईमारत की दीवार के सहारे में न थीं।
7 और ईमारत के आस-पास जो कोठरियाँ
बाहर थीं, उन में से जो ऊपर थीं, वे अधिक
चौड़ी थीं अर्थात ईमारत के आसपास जो

कुछ बना था, वह जैसे जैसे ऊपर की ओर चढ़ता गया। इस तरह इस घर की चौड़ाई ऊपर की ओर बढ़ी हुइ थी और लोग निचले महल के बीच से उपरले महल को चढ़ सकते थे। 8 फिर मैंने भवन के आस-पास ऊँची ज़मीन देखी, और बाहरी कोठरियों की ऊँचाई जोड़ तक छः हाथ के बांस की थी। 9 बाहरी कोठरियों के लिए जो दीवार थीं, वह पांच हाथ मोटी थी, और जो जगह खुली रह गई थी, वह ईमारत की बाजू की कोठरियों का स्थान था, 10 और बाहरी कोठरियों के बीच में था इमारत के चारों ओर बीस हाथ चौड़ा था। 11 बाहरी कोठरियों के दरवाज़े उस जगह की ओर थे, जो खाली था अर्थात एक दरवाज़ा उत्तर की ओर था। जो जगह रह गई थी, उसकी चौड़ाई चारों ओर पांच-पांच हाथ की थी। 12 फिर जो ईमारत मन्दिर के पश्चिमी आंगन के सामने थी, वह सत्तर हाथ चौड़ी थी। ईमारत के आस-पास की दीवार पांच हाथ मोटी थी। उसकी लम्बाई नब्बे हाथ की थी। 13 उसने ईमारत की लम्बाई जब नापी, तो सौ हाथ की निकली। दीवारों समेत आंगन की भी लम्बाई नापी, तो वह भी सौ हाथ की थी। 14 ईमारत का पूर्वी सामना और उसका आंगन सौ हाथ चौड़ा था। 15 फिर उसने पीछे के आंगन के सामने की दीवार की लम्बाई जिसके दोनो ओर छज्जे थे, नापा तो सौ हाथ पाया। अन्दर के भवन और आंगन के ओसारों को भी नापा। 16 तब उसने देवढ़ियों और झिलमिलीदार खिड़कियों और आसपास के तीनों महलों के छज्जों को नापा जो डेवढ़ी के सामने थे, और चारों ओर उनकी तखताबन्दी हुई थी। ज़मीन से खिड़कियों तक और खिड़कियों के आस-पास सब कहीं तखताबन्दी हुई थी। 17 फिर उसने दरवाज़े के ऊपर की जगह भीतरी ईमारत तक और उसके बाहर भी और आस-पास की सारी दीवार के अन्दर और बाहर भी नापा। 18 और उसमें करूब और खजूर के पेड़ ऐसे खुदे हुए थे कि दो-दो करूबों के बीच एक-एक खजूर का पेड़ था और करूबों के दो-दो मुँह थे। 19 इस तरह से एक-एक खजूर की एक ओर इन्सान का मुँह बनाया हुआ था, और दूसरी ओर जवान शेर का। इस तरह पूरी ईमारत के चारों ओर था। 20 ज़मीन से लेकर दरवाज़े के ऊपर तक करूब और खजूर के पेड़ खुदे हुए थे। इसी तरह मन्दिर की दीवार बनी हुई थी। 21 ईमारत के दरवाज़े के खम्भे चौपहल थे। पवित्रस्थान के सामने का रूप मन्दिर का सा था। 22 वेदी लकड़ी की बनी थी और उसकी ऊँचाई तीन हाथ और लम्बाई दो हाथ की थी। उसके कोने और उसका पूरा पाट और अलंगे भी लकड़ी की थीं। उसने मुझसे कहा, यह तो याहवे के सामने की मेज है। 23 पवित्रस्थान और परमपवित्रस्थान में दो पल्ले वाला एक दरवाज़ा था, अर्थात दो पल्ले एक दरवाज़े के लिए तथा दो पल्ले दूसरे दरवाज़े के लिए । 24 हर एक दरवाज़े में दो-दो मुड़ने वाले पल्ले थे। हर एक दरवाज़े के लिए दो-दो पल्ले। 25 जैसे मन्दिर की दीवारों में करूब और खजूर के पेड़ खुदे हुए थे; वैसे ही उसके दरवाज़ों में भी थे। ओसारे को बाहरी ओर लकड़ी की मोटी-मोटी परतें थीं। 26 ओसारे के दोनों ओर झिलमिलीदार खिड़कियाँ थीं और खजूर के पेड़ खुदे थे। ईमारत की बाहरी कोठरियाँ और मोटी-मोटी धरनें भी थी।

42 फिर वह मुझे बाहरी आंगन में, उत्तर की ओर ले चला। वह मुझे उन दो कोठरियों के पास लाया जो ईमारत के आंगन के सामने और उसकी उत्तर की

ओर थीं। 2 भवन की लम्बाई सौ हाथ
थी, उसकी चौड़ाई पचास हाथ की थी।
उसका प्रवेश दरवाज़ा उत्तर की ओर था।
3 अन्दर के आंगन के बीस हाथ सामने और
बाहरी आंगन के फर्श के सामने तीनों मंजलों
में छज्जे थे। 4 कोठरियों के सामने अन्दर
की ओर जाने वाला दस हाथ चौड़ा एक
रास्ता था। हाथ भर का एक और रास्ता
था। कोठरियों के दरवाज़ों की उत्तर की
ओर थे। 5 ऊपरी कोठरियां छोटी थीं अर्थात
छज्जों के कारण वे निचली और बीच वाली
कोठरियों से छोटी थीं। 6 क्योंकि वे तिमंजली
थीं, और आंगनों की तरह उनके खम्भे न
थे, इसलिए ऊपरी कोठरियां निचली और
बीचवाली कोठरियों से छोटी थीं। 7 और जो
दीवार कोठरियों के बाहर उनके पास-पास
थी अर्थात कोठरियों के बाहर के सामने
बाहरी आंगन की ओर थी, उसकी लम्बाई
पचास हाथ की थी। 8 क्योंकि बाहर आंगन
की कोठरियां पचास हाथ लम्बी थीं, और
मन्दिर के सामने की अलंग सौ हाथ की
थी। 9 और इन कोठरियों के नीचे पूर्व की
ओर रास्ता था, जहाँ लोग बाहरी आंगन
से इन में जाते थे। 10 आंगन की दीवार
की चौड़ाई में पूर्व की ओर अलग स्थान
और ईमारत के दोनों के सामने कोठरियां
थीं। 11 और उनके सामने का रास्ता उत्तरी
कोठरियों के रास्ते का सा था। उनकी
लम्बाई-चौड़ाई बराबर थी और निकास की
रूपरेखा भी वैसी ही थी। 12 और दक्षिणी
कोठरियों के दरवाज़ों के अनुसार रास्ते के
सिरे पर दरवाज़ा था, अर्थात पूर्व की ओर
दीवार के सामने, जहाँ से लोग उन में दाखिल
हुआ करते थे। 13 फिर उसने मुझसे कहा, "ये
उत्तरी और दक्षिणी कोठरियां जो आंगन के
सामने हैं, वे ही पवित्र कोठरियां है, जिनमें
याहवे के पास जाने वाले पुरोहित परमपवित्र
वस्तुएँ खाया करेंगे। वे परमपवित्र वस्तुएं,
अन्नबलि, अपराधबलि और दोषबलि वहीं
रखेंगे, क्योंकि वह स्थान पवित्र है। 14 जब
जब पुरोहित लोग अन्दर जाएँगे तब तब
निकलने के वक्त वे पवित्रस्थान से बाहरी
आंगन में यों ही न निकलेंगे, अर्थात वे पहल
अपनी सेवा के कपड़े पवित्रस्थान में रख
देंगे, क्योंकि ये कोठरियां पवित्र हैं। तब
वे और कपड़े पहनकर साधारण लोगों की
जगह में जाएँगे। 15 जब जब वह अन्दर को
ईमारत को नाप चुका, तब मुझे पूर्व दिशा के
फाटक के रास्ते से बाहर ले जाकर बाहर
की जगह चारों ओर नापने लगा। 16 उसने
पूर्वी अलंग को नापने के बांस से नापकर
पांच सौ बीस का पाया। 17 तब उसने उत्तरी
अलंग को नापने के बांस से नापकर पांच सौ
बांस का पाया। 18 तब उसने दक्षिणी अलंग
को नापने के बांस से नापकर पांच सौ बांस
का पाया। 19 और पश्चिमी अलंग को मुड़कर
उसने नापने के बांस से नापकर उसे पांस
सौ बांस का पाया। 20 उसने उस जगह की
चारों अलंग नापीं और उसके चारों ओर एक
दीवार की, वह पांच सौ बांस लम्बी और
पांस सौ बांस चौड़ी थी। वे इसलिए बनी थीं
कि पवित्र और आम लोगों को अलग-अलग
करे।

43 तब वह मुझे उस फाटक के पास ले
गया जिसका मुँह पूर्व की ओर था।
2 तभी इस्राएल के परमेश्वर का तेज उसी ओर
से प्रकट हुआ। उसकी आवाज़ ढेर सारे पानी
की तरह थी। पूरी पृथ्वी उनके तेज से चमक
गई थी। 3 यह उस दर्शन की तरह था, जो मैंने
उस समय देखा, जब वह नगर को बर्बाद
करने आया था। ये दर्शन कबार नदी के
किनारे देखे गए दर्शन की तरह था, जिसके

देखते ही मैं चेहरे के बल गिर पड़ा। 4 याहवे
का तेज भवन में उस फाटक से आया,
जिसका चेहरा पूर्व की ओर था। 5 और
आत्मा मुझे ऊपर उठाकर आंगन में ले आया
और देखो पूरा भवन प्रभु के तेज से भर गया।
6 जब वह इन्सान मेरे नज़दीक खड़ा था, मैंने
किसी को भवन में से मुझ से बातें करते
सुना। 7 उसने मुझसे कहा, हे यहेजकेल, यह
मेरा राजासन और मेरे पैर रखने की जगह
है, जहाँ मैं इस्राएलियों के बीच सदा रहूँगा।
इस्राएल का घराना और उनके राजा, फिर
कभी मेरे नाम को व्यभिचार और मरे राजाओं
की लाश से अशुद्ध नहीं करेंगे। 8 वे मेरी
डेवढ़ी के पास अपनी दहली और मेरी चौखट
के पास ही अपने चौखट बनाने से जिस से
मेरे और उनके बीच केवल एक दीवार ही
का अन्तर रह जाता था। उन्होंने मेरे पवित्र
नाम को अपने किए हुए घिनौने कामों से
अपवित्र किया। इसलिए मैंने अपने गुस्से में
उन्हें जला डाला। 9 अब वे अपने व्यभिचार
और अपने राजाओं की लाशों को मुझ से
बहुत दूर कर दें, तब मैं उनके बीच सदैव
रहूँगा। 10 हे मनुष्य की सन्तान, तुमने इस्राएल
के घराने को इस भवन का नमूना समझा,
जिससे वे अपने अनुचित कामों के कारण
शर्मिन्दा हों। इस नमूने के बारे में वे बातचीत
करें। 11 और जो कुछ उन्होंने किया है यदि वे
उसके कारण शर्मिन्दा हों, तो इस भवन की
रूपरेखा को उन्हें समझा दो। इसकी बनावट
उनके सामने रखना; जिससे वे इसका पूरे
आकार और इसकी विधियाँ याद करके
उसके मुताबिक करें। 12 भवन का नियम
यह है: पहाड़ की चोटी के चारों ओर का
पूरा हिस्सा परमपवित्र है। इस भवन का
यही नियम यही है 13 ऐसे हाथ के नाप से
जो साधारण हाथ से चौवा भर ज्यादा हो।
वेदी की नाप यह है, अर्थात उसका आधार
एक हाथ का, चौड़ाई एक हाथ की, और
उसके चारों ओर के छोर पर की पटरी एक
चौवे की। वेदी के आधार की ऊँचाई यह
है: 14 ज़मीन पर रखे हुए आधार से लेकर
निचली कुर्सी तक दो हाथ की ऊँचाई रहे
और उसकी चौड़ाई हाथ भर की हो। 15 ऊपर
का हिस्सा चार हाथ ऊँचा हो, वेदी की
भट्टी से चार सींग ऊपर की ओर निकले हों।
16 वेदी पर जलाने की जगह चौकोर अर्थात
बारह हाथ लम्बी और बारह हाथ चौड़ी
हो। 17 निचली कुर्सी चौदह हाथ लम्बी और
उसके चारों ओर की पटरी आधे हाथ की हो।
उसका आधार चारों ओर हाथ भर का हो।
उसकी सीढ़ी पूर्व की तरफ होनी चाहिए।"
18 फिर वह मुझ से बोला है, "मनुष्य की
सन्तान, परमेश्वर का कहना है कि जिस दिन
होमबलि चढ़ाने और खून छिड़कने के लिए
वेदी बनाई जाए, उस दिन ये सब किया जाए।
19 लेवीय याजक जो सादोक की नस्ल में से
हैं, मेरी सेवा करने के लिए मेरे पास रहते हैं;
उन्हें तुम अपराधबलि के लिए एक बछड़ा
देना, 20 उसके बाद उसके खून में से कुछ
लेकर वेदी के चारों सींगों और कुर्सी के
चारों कोनों और चारों ओर की पटरी पर
लगाना। इस तरह प्रायश्चित करने से उसको
पवित्र करना। 21 तब अपराधबलि के बछड़े
को लेकर ईमारत के पवित्रस्थान के बाहर
ठहराई जगह में जला देना। 22 दूसरे दिन एक
निर्दोष बकरा अपराधबलि करके चढ़ाना।
जिस तरह से बछड़े के द्वारा वेदी पवित्र की
जाए, वैसे ही वह इस बकरे के द्वारा भी पवित्र
की जाएगी। 23 जब उसे पवित्र कर चुको,
तब एक बिना किसी दोष का बछड़ा और
एक मेंढा चढ़ाना। 24 तुम उन्हें प्रभु के सामने
लाना, याजक उस पर लोन डालकर उन्हें

याहवे के लिए होमबलि करे। 25 सात दिन
तक लगातार हर दिन अपराधबलि के लिए
एक बकरा तैयार करना और निर्दोष मेंढा भी
तैयार करना। 26 सात दिन तक पुरोहित लोग
वेदी के लिए प्रायश्चित करके उसे शुद्ध करते
रहें। इस तरह उनका संस्कार हो। 27 जब वे
दिन पूरे हो जाएँ, तब आठवें दिन के बाद से
पुरोहित लोग तुम्हारे होमबलि और मेलबलि
वेदी पर चढ़ाएँ। तब मैं तुम से खुश होऊँगा।"

44 फिर वह मुझे पवित्रस्थान के उस
बाहरी फाटक के पास लौटा ले
गया, जो पूर्व की ओर है; और वह बन्द था।
2 तब याहवे ने मुझसे कहा कि फाटक को
बन्द रखा जाए। इसमें होकर कोई अन्दर
न जाएँ, क्योंकि इस्राएल के परमेश्वर इसमें
से होकर अन्दर आए है। 3 केवल प्रधान ही
प्रधान होने के कारण, मेरे सामने खाना करने
को वहाँ बैठेगा वह फाटक के ओसारे से
होकर अन्दर जाए हैं, और इसी से होकर
निकले। 4 फिर वह उत्तरी फाटक के पास
होकर मुझे भवन के सामने ले गया; तब मैंने
देखा कि प्रभु का भवन उन्हीं के तेज से
भर गया है और वहीं मैं औंधे मुँह गिर भी
पड़ा। 5 तब प्रभु बोले, हे यहेजकेल, ध्यान
से देखो और जो कुछ मैं तुम से अपने भवन
की सभी विधियों और नियमों के बारे में
कहे, वह सब सुनो। तुम भवन के पैठाव और
पवित्रस्थान के सभी निकासो पर ध्यान देना।
6 इस्राएल का घराना जो बलवा करने वाला
है, उस से कहो कि सारे घिनौने कामों को
छोड़ दो। 7 जब तुम चर्बी और खून चढ़ाते
थे, तब तुम मन और देह के खतनाहीन लोगों
को मेरे पवित्रस्थान में आने देते थे। उन्होंने
आकर उसे अपवित्र किया। मेरी वाचा को
तोड़ डाला, जिस से तुम्हारे सभी घिनौने काम
बढ़ गए। 8 मेरी पवित्र वस्तुओं को तुमने
नहीं संभाला, लेकिन अपनी इच्छा से दूसरे
लोगों को मेरे पवित्र स्थान की वस्तुओं की
देख-रेख की ज़िम्मेदारी दी। 9 इसलिए प्रभु
का कहना है, इस्राएलियों के बीच जितने
दूसरे लोग हों, जिनके मन और देह का खतना
नहीं हुआ है, उनमें से एक भी मेरे पवित्रस्थान
में दाखिल न हो। 10 परन्तु वे लेवी जो मुझ से
दूर चुके थे, जब इस्राएली लोग मुझे छोड़कर
अपनी मूरतों की ओर जा चुके थे, वे अपनी
इस बुराई का बोझ खुद उठाएंगे। 11 लेकिन
वे मेरे पवित्रस्थान में सेवक होकर भवन के
फाटकों की चौकीदारी करने वाले भी होंगे।
वे होमबलि और मेलबलि के जानवरों को
मारें और उनकी सेवा करने के लिए उनके
सामने खड़े हुआ करें। 12 क्योंकि इस्राएल
के घराने की सेवा वे उनकी मूरतों के सामने
करते थे। वे उनके ठोकर खाने और बुराई
में फंसने का कारण बन गए थे। इसलिए मैंने
यह इरादा कर लिया, कि वे अपने गुनाहों
का भार खुद उठाएँ। यह परमेश्वर कह रहे
हैं। 13 उन्हें मेरे पास नहीं आना चाहिए, न ही
मेरे लिए पुरोहित का काम करना चाहिए। वे
मेरी किसी पवित्र वस्तु या परमपवित्र वस्तु
को छुए भी नहीं। वे अपनी शर्म का और
जो घिनौने काम उन्होंने किए हैं, उनका भी
परिणाम भुगतें। मैं फिर भी उन्हें ईमारत में
रखी वस्तुओं की देख-रेख का काम दूँगा।
14 वहाँ जो कुछ भी किया जाना है, वे ही
उसे करें 15 फिर लेवीय याजक जो सादोक
के वंश के हैं और जिन्होंने उस समय मेरे
पवित्रस्थान की रक्षा की, जब इस्राएली मेरे
पास से भटक गए थे, वे मेरी सेवा करने मेरे
पास आया करें, और मुझे चर्बी और खून
चढ़ाने के लिए मेरे सामने खड़े हुआ करें।
16 वे मेरे पवित्रस्थान में आया करें और मेज
के पास मेरी सेवा करें और वस्तुओं की रक्षा

करें। 17 जब वे अन्दर के आंगन के फाटकों
से होकर जाया करें, तब सन के कपड़े पहने
रहे, जब वे भीतरी आंगन के फाटकों में वा
उसके अन्दर सेवा करते हों, तब ऊन के
कपड़े न पहने हों। 18 उनके सिर पर सन की
खूबसूरत टोपी हो, कमर में सन की जांघियाँ
हो। वे किसी ऐसे कपड़े से कमर न बांधें,
जिस से पसीना आए। 19 जब वे बाहरी आंगन
में लोगों के पास आएँ, तब जिन कपड़ों को
पहने सेवा कर रहे हों, उन्हें उतार कर पवित्र
कोठरियों में रखकर दूसरे कपड़े पहनें, जिस
से लोग उनके कपड़ों के कारण अशुद्ध न
ठहरें। 20 वे सिर के बाल न उतारें, न लम्बे
बाल रखें। वे अपने बाल कटाएँ। 21 अन्दर के
आंगन में जाते समय कोई पुरोहित दाखमधु
का सेवन न करे। 22 विधवा या छोड़ी हुई
महिला से विवाद न करें। केवल इस्राएल के
घराने के वंश में से कुंवारी या ऐसी विधवा
से शादी करें, जो किसी पुरोहित की पत्नी
रही हो। 23 मेरी प्रजा को वे पवित्र-अपवित्र
में अन्तर सिखाएँ। 24 मुकदमे के समय वे
ही न्याय करने के लिए बैठें और मेरी इच्छा
के अनुसार न्याय करें। मेरे ठहराए त्यौहारों
और विश्राम दिनों को मेरे हिसाब से मानें।
25 वे किसी शव के पास न जाएँ। केवल
माता-पिता, बेटे-बेटी, भाई और ऐसी बहन
के शव के कारण जिसका विवाह न हुआ हो,
वे अपने को अशुद्ध कर सकते हैं। 26 अशुद्ध
होने क बाद सात दिन गिने जाएँ, तभी वे शुद्ध
ठहरें। 27 जिस दिन वे पवित्रस्थान अर्थात
अन्दर के आंगन में सेवा करने को दाखिल
हों, उस दिन अपने लिए अपराधबलि चढ़ाएं।
28 उनका अपना हिस्सा एक ही होगा, वह
मैं हूँ। तुम उन्हें इस्राएल के बीच कुछ ऐसी
ज़मीन न देना, जो उनकी पहले ही से हो,
मैं ही उनकी निज भूमि हूँ। 29 वे अन्नबलि,
अपराधबलि और दोषबलि खाया करें, जो
वस्तु इस्राएल में अर्पण किया जाए, उन्हें
खाने को मिले। 30 सब तरह की सबसे पहले
उत्पादन की हुई वस्तु और उठाई हुई वस्तु
जो तुम उठाकर चढ़ाओ, पुरोहितों को मिले।
नए अनाज का पहला गुंधा आटा भी पुरोहित
को दिया जाए, तब तुम्हारे घर पर आशीष
होगी। 31 जो कुछ आप मर जाए या फाड़ा
गया हो, चाहे चिड़िया हो या जानवर, उसका
गोश्त पुरोहित न खाए।

45 जब तुम चिट्ठी डालकर देश का
बंटवारा करो, तब देश में से एक
हिस्सा पवित्र जानकर याहवे को अर्पण
करना। उसकी लम्बाई पच्चीस हजार बांस
की और चौड़ाई दस हजार बांस की हो। वह
भाग अपने चारों ओर की सीमा तक पवित्र
ठहरे। 2 उस में से पवित्रस्थान के लिए पांच
सौ बांस लम्बी और पांच सौ बीस चौड़ी
चौकोनी ज़मीन हो, और उसके चारों और
पचास-पचास हाथ चौड़ी ज़मीन छूटी रहे।
3 उस पवित्र हिस्से में तुम पच्चीस हज़ार बांस
लम्बी और दस हज़ार बांस चौड़ी ज़मीन को
नापना और उसी में पवित्रस्थान बनाना, जो
परमपवित्र हो। 4 जो पुरोहित पवित्रस्थान की
सेवा करें और प्रभु की सेवा करने पास में
आएँ, वह उन्हीं के लिए हो। वहाँ उनके घरों
के लिए जगह हो और पवित्रस्थान के लिए
पवित्र ठहरे। 5 फिर पच्चीस हज़ार बांस लम्बा,
और दस हज़ार बांस चौड़ा एक हिस्सा, और
दस हज़ार बांस चौड़ा एक हिस्सा, ईमारत
की सेवा देखभाल करने वाले लेवियों की
बीस कोठरियों के लिए हो। 6 फिर नगर
के लिए, अर्पण किए हुए पवित्र हिस्से के
पास, तुम पांच हज़ार बांस चौड़ी और पच्चीस
हज़ार बांस लम्बी, खास ज़मीन ठहराना; वह
इस्राएल के पूरे घराने के लिए हो। 7 और

प्रधान का अपना हिस्सा पवित्र अर्पण किए
हुए हिस्से और नगर की खास ज़मीन की
दोनों ओर अर्थात दोनों की पश्चिम और पूर्व
दिशाओं में दोनों हिस्सों के सामने हो। और
उसकी लम्बाई पश्चिम से लेकर पूर्व तक उन
दो हिस्सों में से किसी भी एक के समान
हो। 8 इस्राएल के देश में प्रधान की यही
अपनी ज़मीन हो। और मेरे ठहराए हुए प्रधान
मेरी प्रजा पर फिर अत्याचार और शोषण न
करें। लेकिन इस्राएल के घराने को उसके
कबीलों के अनुसार देश मिले। 9 परमेश्वर
याहवे कहते हैं, “हे इस्राएल के प्रधानों, बस
करो, झगड़ा फसाद बन्द करो। ईमानदारी,
सच्चाई और इन्साफ के काम किया करो।
मेरी प्रजा के लोगों को निकाल देना छोड़ दो,
परमेश्वर याहवे के यही वचन हैं। 10 तुम्हें सच्चे
तराजू, एपा और सच्चे बत का उपयोग करना
चाहिए। 11 एपा और बत दोनों एक ही नाप के
हों, अर्थात दोनों में होमेर का दसवां हिस्सा
समान दोनों की नाप होमेर के मुताबिक होनी
चाहिए। 12 और शेकेल बीस गेरा का हो, और
तुम्हारा माना बीस, पच्चीस या पन्द्रह शेकेल
का हो। 13 तुम्हारी उठाई हुई कुर्बानी यह
हो, अर्थात गेहूँ की होमेर से एपा का छठवां
अंश और जौ के होमेर में से एपा का छठवां
हिस्सा देना। 14 तेल का निश्चित हिस्सा कोर
में से बत का दसवां भाग हो। कोर तो
दस बत अर्थात एक होमेर के बराबर है।
15 इस्राएल की बढ़िया से बढ़िया चरागाहों
में से दो दो भेड़ें बकरियों में से एक भेड़
तथा बकरी दी जाएँ। ये सभी चीजें अन्नबलि,
होमबलि और मेलबलि के लिए दी जाएँ,
जिससे उनके लिए प्रायश्चित किया जाए, यह
परमेश्वर का कहना है। 16 इस्राएल के प्रधान
के लिए देश के सभी लोग यह कुर्बानी दें।
17 त्यौहारों, नए चान्द के दिनों, विश्रामदिनों
और इस्राएल के घराने के सभी निश्चित समयों
में होमबलि, अन्नबलि और अर्घ देना प्रधान
की ज़िम्मेदारी है। इस्राएल के घराने के लिए
प्रायश्चित करने के लिए वह अपराधबलि,
अन्नबलि, होमबलि और मेलबलि तैयार करें।
18 परमेश्वर याहवे कहते हैं, पहिले महीने
के पहले दिन को तुम एक बिना दोष का
बछड़ा लेकर पवित्रस्थान को पवित्र करना।
19 इस अपराधबलि के खून में से पुरोहित
कुछ लेकर इमारत के चौखट के खम्भों और
वेदी की कुर्सी के चारों कोनों और अन्दर
के आंगन के फाटक के खम्भों पर लगाए।
20 फिर महीने के सातवें दिन सभी भूल में
पड़े हुओं और भोलों के लिए भी यही करना।
इस तरह से ईमारत के लिए प्रायश्चित करना।
21 पहले महीने के चौदहवें दिन को तुम्हारा
फसह मनाया जाए। यह त्यौहार सात दिन
तक मनाया जाए और सभी अखमीरी रोटी
खाएँ। 22 उस दिन प्रधान अपने और प्रजा के
सभी लोगों के लिए एक बछड़ा अपराधबलि
के लिए कुर्बान करें। 23 हर दिन सात सात
बिना किसी दोष के बछड़े और सात सात
निर्दोष बछड़े और सात सात निर्दोष मेढ़े और
हर दिन एक एक बकरा अपराधबलि के
लिए तैयार किया जाए। 24 हर एक बछड़े
और मेढ़े के साथ वह एपा भर अन्नबलि और
एपा पीछे दीन भर तेल तैयार करे। 25 सातवें
महीने के पन्द्रहवें दिन से लेकर सात दिन तक
अर्थात त्यौहार के दिनों में वह अपराधबलि,
होमबलि, अन्नबलि और तेल इसी तरीके से
करे।

46 परमेश्वर याहवे का कहना है,
“अन्दर के आंगन का पूर्वमुखी
फाटक कामकाज के दिन बन्द रहे, लेकिन
विश्रामदिन को खुला रखा जाए। 2 प्रधान
बाहर से फाटक के ओसारे के रास्ते से

आकर फाटक के एक खम्भे के पास खड़ा
हो जाए, और पुरोहित उसका होमबलि और
मेलबलि तैयार करे, और वह फाटक की
डेवढ़ी पर सिज़दा करें, तब वह बाहर जाए,
और फाटक को शाम से पहले बन्द न किया
जाए। 3 और लोग विश्राम और नए चाँद के
दिनों में उस फाटक के दरवाजे में याहवे के
सामने सिज़दा करें। 4 और विश्रामदिन में जो
होमबलि प्रधान याहवे के लिए चढ़ाए, वह
भेड़ के हैं: छ: निर्दोष बच्चे और एक निर्दोष
मेंढ़े का हो। 5 अन्नबलि में मेंढ़े के साथ एपा
भर अनाज और भेड़ के बच्चों के साथ अपनी
ताकत भर अनाज और एपा के पीछे हीन
भर तेल 6 और नए चाँद के दिन वह एक
निर्दोष बछड़ा और भेड़ के छ: बच्चे और
एक मेढ़ा चढ़ाए, ये सभी बिना दोष के हों।
7 और बछड़े और मेढ़े दोनों के साथ वह एक
एक एपा अन्नबलि तैयार करे, और भेड़ के
बच्चों के साथ अपनी हैसियत से अनाज और
एपा पीछे हीन भर तेल। 8 जब प्रधान अन्दर
आए तब वह फाटक के ओसारे से होकर
जाए, और उसी रास्ते से निकल जाए। 9 जब
आम लोग ठहराए समयों में याहवे के सामने
नमन करने आएँ, तब जो उत्तरी फाटक से
होकर नमन करने अन्दर आए, वह दक्षिणी
फाटक से होकर निकले, और जो दक्षिणी
फाटक से अन्दर आए, वह उत्तरी फाटक से
होकर निकले, अर्थात जो जिस फाटक से
वापस न जाए, अपने सामने ही निकल जाए।
10 जब वे अन्दर आएँ, तब प्रधान उनके बीच
होकर आएँ और जब वे निकलें, तो सभी
मिलकर निकलें। 11 और त्यौहारों, व दूसरे
ठहराए समयों का अन्नबलि और बछड़े पीछे
एपा भर और मेढ़े पीछे एपा भर का हो,
और भेड़ के बच्चों के साथ अपनी हैसियत
से अनाज और एपा पीछे हीन भर तेल।
12 फिर जब प्रधान होमबलि और मेलबलि
को स्वेच्छाबलि करके याहवे के लिए तैयार
करे, तब पूर्वमुखी फाटक उनके लिए खोला
जाए, और वह अपना होमबलि और मेलबलि
वैसे ही तैयार करे जैसे वह विश्रामदिन को
करता है। तब वह निकल जाए, और उसके
निकलने के बाद फाटक बन्द किए जाने
चाहिए। 13 हर दिन तुम साल भर का एक
निर्दोष भेड़ का बच्चा याहवे के होमबलि के
लिए तैयार करना, ऐसा हर सुबह किया जाना
चाहिए। 14 हर सुबह होमबलि को उसके
साथ एक अन्नबलि तैयार करना, अर्थात
एपा का छठवाँ हिस्सा और मैदे में मिलाने
के लिए हीन भर तेल की तिहाई याहवे के
लिए हमेशा का अन्नबलि विधि के मुताबिक
चढ़ाया जाए। 15 भेड़ का बच्चा, अन्नबलि और
तेल हर सुबह को हर दिन होमबलि करके
चढ़ाया जाए। भेड़ का बच्चा, अन्नबलि और
तेल, हर सुबह को होमबलि करके चढ़ाया
जाएँ। 16 परमेश्वर याहवे कहते हैं, यदि प्रधान
अपने किसी बेटे को कुछ दे, तो वह उसका
हिस्सा होकर उसके पोतों को मिले। हिस्सों
के नियम के अनुसार वह उनकी भी निज
दौलत ठहरे। 17 लेकिन यदि वह अपने हिस्से
में से अपने किसी भी कर्मचारी को कुछ दे,
तो छुट्टी के साल तक तो वह उसका बना रहे,
लेकिन उसके बाद वह प्रधान को लौटा दिया
जाए और उसका अपना हिस्सा ही उसके
बेटों को मिले। 18 और प्रजा का ऐसा कोई
हिस्सा प्रधान न ले, जो अन्धेर से उनकी निज
ज़मीन से छीना हो। अपने बेटों को वह अपना
ही निज ज़मीन में से हिस्सा दे। ऐसा न हो
कि मेरी प्रजा के लोग अपनी-अपनी ज़मीन
से तितर बितर हो जाएँ। 19 फिर वह मुझे
फाटक की एक अलंग में दरवाजे से होकर
पुरोहितों की उत्तरमुखी पवित्र कोठरियों में

ले गया। वहाँ पश्चिम ओर के कोने में एक
जगह थी। 20 तब वह मुझसे बोला, “यह
वह जगह है, जिस में पुरोहित लोग दोषबलि
और अपराधबलि के गोश्त को पकाएँ और
अन्नबलि को पकाएँ, ताकि ऐसा न हो कि
उन्हें बाहरी आंगन में ले जाने से साधारण
लोग पवित्र ठहरें। 21 तब उसने मुझे बाहरी
आंगन में ले जाकर उस आंगन के चारों
कोनों में फिराया, और आंगन के हर एक
कोने में एक-एक ओट बना था, 22 अर्थात
आंगन के चारों कोनों में चालीस हाथ लम्बे
और तीस हाथ चौड़े ओट थे। चारों कोनों के
ओटों की एक ही नाप थी। 23 और अन्दर
चारों ओर दीवार थी, और दीवारों के नीचे
पकाने के चूल्हे बने हुए थे। 24 तब उसने
मुझसे कहा, “ये वे चूल्हे हैं जहाँ इमारत के
सेवक, लोगों द्वारा चढ़ाई गई कुर्बानियों को
उबालकर पकाएँगे।”

47 फिर वह मुझे ईमारत के दरवाज़े
पर लौटा ले गया, और ईमारत की
डेवढ़ी के नीचे से एक सोता निकलकर पूरब
की ओर बह रहा था। इमारत का दरवाज़ा
तो पूर्वमुखी था, और सोता इमारत के पूर्व
और वेदी के दक्षिण, नीचे से निकलता था।
2 तब वह मुझे उत्तर के फाटक से होकर बाहर
ले गया, और बाहर बाहर से घुमाकर बाहरी
अर्थात, पूर्वमुखी फाटक के पास पहुँचा दिया
और दक्षिणी अलंग से पानी पसीजकर बह
रहा था। 3 जब वह आदमी हाथ में नापने
की डोरी लिए हुए पूर्व की ओर निकला,
तब उसने इमारत से लेकर, हजार हाथ तक
उस सोते को नापा, और मुझे पानी में से
होकर चलाया। उस समय पानी टखनों तक
था। 4 उसने फिर हजार हाथ नापकर मुझे
पानी में से चलाया और पानी घुटनों तक
था। फिर हजार हाथ नापकर, मुझे पानी में
से चलाया और पानी कमर तक था। 5 तब
फिर उसने हजार हाथ नापे, और ऐसी नदी
हो गई, जिसके पार मैं न जा सकता था,
क्योंकि पानी तैरने लायक था। ऐसी नदी थी,
जिसके पार कोई नहीं जा सकता था। 6 तब
उसने मुझसे पूछा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या
तुमने यह देखा है? फिर उसने मुझे नदी के
किनारे लौटाकर पहुँचा दिया। 7 लौटकर मैंने
क्या देखा, कि नदी के दोनों किनारों पर बहुत
से पेड़ हैं। 8 तब उसने मुझसे कहा, “यह
सोता पूर्वी देश की ओर बह रहा है, और
अराबा में उतरकर तालाब की ओर बहेगा।
इस इमारत से निकला हुआ सीधा तालाब
में मिल जाएगा। 9 जहाँ-जहाँ वह नदी बहेगी,
वहाँ-वहाँ हर तरह के अण्डे देने वाले जानवर
जीएँगे। मछलियों की संख्या भी बढ़ जाएगी,
क्योंकि इस सोते का पानी वहाँ पहुँचा है और
तालाब का पानी मीठा हो जाएगा। जहाँ-जहाँ
यह नदी पहुँचेगी वहाँ सभी जीव जिएँगे।
10 तालाब के किनारे मछुवे खड़े रहेंगे, और
एनगदी से लेकर ऐनेग्लैम तक वे जाल फैलाए
जाएँगे और उन्हें महासागर की सी तरह-तरह
की बेगिनती मछलियाँ मिलेंगी। 11 लेकिन
तालाब के पास जो दलदल और गड्ढे
है, उनका पानी मीठा न होगा, वे खारे ही
रहेंगे। 12 नदी के दोनों तटों पर तरह-तरह
के खाने लायक फल देने वाले पेड़ उपजेंगे,
जिनके पत्ते कभी मुरझाएंगे नहीं और उनका
फलवन्त होना रूकेगा भी नहीं। इसलिए कि
नदी का पानी पवित्र स्थान से निकला है।
उन में महीने-महीने, नए फल लगेंगे। उनके
फल खाने के लिए, पत्ते दवाई के लिए काम
आएँगे। 13 परमेश्वर याहवे कहते हैं, जिस
सीमा के अन्दर तुम को यह देख अपने
बारह कबीलों के अनुसार बाँटना पड़ेगा,
वह यह है, यूसुफ़ को दो हिस्से मिल जाएँ।

14 उसे तुम एक दूसरे की तरह निज भाग
में पाओगे, क्योंकि मैंने इरादा कर लिया
है, कि उसे तुम्हारे पूर्वजों को दूँगा इसलिए
यह देश तुम्हारा हिस्सा ठहरेगा। 15 देश की
सरहद यह हो, अर्थात उत्तर ओर की सीमा
महासागर से लेकर हेतलोन के पास से सदाद
की घाटी तक पहुँचे। 16 और उस सरहद के
पास हमात बेरोता, और सिब्रैम जो दमिश्क
और हमात की सीमा के बीच में हैं, और
हसरहत्तीकोन तक, जो हारान की सीमा पर
है। 17 यह समुद्र से लेकर दमिश्क की सीमा
के पास के हसहेनोन तक पहुँचे और उसकी
उत्तर ओर हमात हो। उत्तर की सीमा यही
हो। 18 और पूर्वी सरहद जिसकी एक ओर
हौरान दमिश्क; और यरदन की ओर गिलाद
और इस्राएल का देश हों, उत्तरी सीमा से
लेकर पूर्वी तालाब तक उसे नापना। पूर्वी
सीमा तो यही हो। 19 और दक्षिणी सीमा तमार
से लेकर कादेश के मरीबोत नाम सोते तक
अर्थात मिस्र के नाले तक, और महासागर
तक पहुँचे। दक्षिणी सरहद यही हो। 20 और
पश्चिमी सरहद दक्षिणी सरहद से लेकर हमात
की घाटी के सामने तक का महासागर हो।
पश्चिमी सरहद यही हो। 21 इस तरह देश को
इस्राएल के कबीलों के अनुसार आपस में
बाँट लेना। 22 और इसको आपस में और उन
परदेशियों के साथ बाँट लेना, जो तुम्हारे बीच
रहते हुए बालकों को जन्माएँ। वे तुम्हारी
निगाह में देशी इस्राएलियों की तरह ठहरें
और तुम्हारे कबीलों के बीच अपना-अपना
हिस्सा पाएँ। 23 जो परदेशी जिस कबीले के
देश में रहता हो, उसको वही हिस्सा देना,
यह परमेश्वर याहवे कहते हैं।

48 कबीलों के हिस्से इस तरह होने
चाहिए : उत्तर सरहद से लगा हुआ
हेतलोन के रास्ते के पास से हमात की घाटी
तक, और दमिश्क की सरहद के पास के
हसरेनान से उत्तर ओर हमात के पास तक
एक भाग दान का हो : और उसके पूर्वी
और पश्चिमी सीमा भी हों। 2 दान की सरहद
से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक आशेर का
एक हिस्सा हो। 3 आशेर की सरहद से लगा
हुआ, पूर्व से पश्चिम तक नप्ताली का एक
भाग है। 4 नप्ताली की सरहद से लगा हुआ
पूर्व से पश्चिम तक मनश्शै का एक हिस्सा।
5 मनश्शै की सरहद से लगा हुआ पूर्व से
पश्चिम तक एप्रैम का एक हिस्सा हो। 6 एप्रैम
की सरहद से लगा हुआ पूर्व से ही पश्चिम
तक एप्रैम का एक हिस्सा है। 7 रूबेन की
सरहद से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक यहूदा
का एक हिस्सा हो। 8 यहूदा की सरहद से
लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक वह अर्पण
किया हुआ हिस्सा हो, जिसे तुम्हें अर्पण
करना होगा। वह पच्चीस हजार बांस चौड़ा
और पूर्व से पश्चिम तक किसी एक कबीले
के हिस्से की तरह लम्बा हो और उसके
बीच में पवित्र स्थान हो। 9 जो हिस्सा तुम्हें
याहवे को अर्पण करना होगा, उसकी लम्बाई
पच्चीस हजार बांस और चौड़ाई दस हजार
बांस की हो। 10 यह अर्पण किया हुआ पवित्र
हिस्सा, पुरोहितों को दिया जाए। वह उत्तर
ओर पच्चीस हजार बांस लम्बा, पश्चिम और
दस हज़ार बांस चौड़ा, पूर्व ओर दस हज़ार
बांस चौड़ा और दक्षिण और पच्चीस हज़ार
बांस लम्बा हो। उसके बिल्कुल बीच में
याहवे का पवित्र स्थान। 11 यह विशेष पवित्र
हिस्सा सादोक की सन्तान के उन पुरोहितों
का हो जाए, जो मेरे कहने के मुताबिक जी
रहे थे, जब इस्राएली भटक गए थे और लेवी
सही रास्ते पर थे। 12 इसलिए देश के अर्पण
किए हुए हिस्से में से यह उनके लिए अर्पण
किया हुआ हिस्सा, अर्थात परमपवित्र देश

ठहरे और लेवियों की सीमा से लगा रहे।
13 और पुराहितों को सरहद से लगा हुआ
लेवियों का हिस्सा हो, वह पच्चीस हज़ार बांस
लम्बा और दस हज़ार बांस चौड़ा हो। पूरी
लम्बाई पच्चीस हज़ार बांस की और चौड़ाई
दस हज़ार बांस की हो। 14 उन्हें उसमें से कुछ
बेचना नहीं चाहिए, न दूसरी जमीन से बदले।
न ही ज़मीन की पहली पैदावर और किसी
को दी जाए, क्योंकि वह याहवे के लिए
पवित्र है। 15 और चौड़ाई के पच्चीस हज़ार
बांस के सामने, जो बांस हज़ार शेष हों, वह
नगर, बस्ती और चराई के लिए साधारण
हिस्सा हो। 16 नगर की नाप यह होनी चाहिए:
उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम साढ़े चार-चार
हज़ार हाथ। 17 नगर के पास उत्तर, दक्षिण,
पूर्व और पश्चिम में चराईयाँ हों, जो ढाई-ढाई
सौ बांस चौड़ी हो, 18 और अर्पण किए हुए
पवित्र भाग के पास हो, उसकी पैदावार नगर
में मेहनत करने वालों के खाने के लिए हो।
19 और इस्राएल के सभी कबीलों में से जो
नगर में मेहनत करें, वे उसकी खेती किया
करें। 20 पूरा अर्पण किया हुआ हिस्सा पच्चीस
हज़ार बांस चौड़ा हो; तुम्हें चौकोर पवित्र
हिस्सा अर्पण करना पड़ेगा, जिसमें नगर की
खास ज़मीन हो। 21 जो हिस्सा बाकी बचे,
उसे प्रधान को दिया जाए। पवित्र अर्पण किए
हुए हिस्से की, और नगर की खास ज़मीन
की दोनों ओर अर्थात उनकी पूर्व और पश्चिम
अलंगों के पच्चीस पच्चीस हज़ार बांस की
चौड़ाई के पास, जो और कबीलों के हिस्सों
के पास रहे, वह प्रधान को दी जाए। और
अर्पण किया हुआ पवित्र हिस्सा और भवन
का पवित्रस्थान उनके बीच में हो। 22 जो
प्रधान का हिस्सा होगा, वह लेवियों के बीच
और नगरों की विशेष ज़मीन हो। प्रधान का
हिस्सा यहूदा और बिन्यामीन की सरहद के
बीच में हो। 23 दूसरे कबीलों के हिस्से इस
तरह हों : पूर्व से पश्चिम तक बिन्यामीन का
एक हिस्सा हो। 24 बिन्यामीन की सरहद से
लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक शिमोन का
एक भाग हो। 25 शिमोन की सरहद से लगा
हुआ पूर्व से पश्चिम तक इस्साकार का एक
हिस्सा है। 26 इस्साकार की सरहद से लगा
हुआ पूर्व से पश्चिम तक जबूलून का हिस्सा।
27 जबूलून की सरहद से लगा हुआ पूर्व से
पश्चिम तब गाद का एक हिस्सा। 28 और गाद
की सरहद के पास दक्षिण ओर की सीमा
तामार से लेकर कादेश के मरीबोत नाम सोते
तक, और मिस्र के नाले और महासागर तक
पहुँचे। 29 जो देश तुम्हें इस्राएल के कबीलों में
बाँटना होगा, वह यही हैं और उनके हिस्से
भी ये है। यह परमेश्वर याहवे कह रहे हैं।
30 नगर में निकलने के लिए उत्तर की अलंग,
जिसकी लम्बाई साढ़े चार हज़ार बांस की
हो। 31 उसमें तीन फाटक हों अर्थात एक
रुबेन का फाटक, एक यहूदा का और एक
लेवी का हो, क्योंकि नगर के फाटकों के नाम
इस्राएल के कबीलों के नामों पर रखने होंगे।
32 और पूरब की अलंग साढ़े चार हज़ार बांस
लम्बी हो, और उसमें तीन फाटक हों, अर्थात
एक यूसुफ का, एक बिन्यामीन का और एक
दान का। 33 और दक्षिण की अलंग साढ़े चार
हज़ार बांस लम्बी हो और उसमें तीन फाटक
हों; अर्थात एक शिमोन का, एक इस्साकार
का और एक जबूलून का। 34 और पश्चिम की
अलंग साढ़े चार हज़ार बांस लम्बी हो, और
उसमें तीन फाटक हों अर्थात एक गाद का,
एक आशेर का और एक नप्ताली का। 35 नगर
की चारों अलंगों का घेरा अठारह हज़ार बांस
का हो, और उस दिन से आगे को नगर का
नाम “याहवे शाम्मा” रहेगा।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com